सटीक

# शिवराज-भूषण

( अलंकार-ग्रंथ )

## महाकवि भूषण-रचित

टीकाकार

पंडित रूपनारायण पाण्डेय, कविरत्न

[ भूतपूर्व संपादक—माधुरी, सुधा, नागरीप्रचारक आदि ]

—:o:—

प्रकाशक

तेजकुमार-प्रेस-बुकडिपो,

उत्तराधिकारी—नवलकिशोर-प्रेस, बुकडिपो, लखनऊ.

सन् १९५० ई०

श्रीपन्नालाल भार्गव द्वारा

तेजकुमार-प्रेस, लखनऊ में मुद्रित।



द्वितीय सं [ मूल्य २।)

# भूमिका

यह कथन अक्षरशः सत्य है कि सुकवि की कविता में जादू का-सा असर होता है। वह पढ़ने और सुननेवालों के हृदयों पर तत्क्षण अमिट प्रभाव डालकर उन्हें कुछ का कुछ बना देती है। महाकवि बिहारीलाल के--

नहिं पराग, नहिं मधुर मधु, नहिं विकास यहि काल।
अली कली ही सों बिंध्यो, आगे कौन हवाल॥

इस दोहे का जो असर जयपुर-नरेश के ऊपर हुआ था, उसे प्रत्येक हिंदी-साहित्य का रसिक अच्छी तरह जानता है। किसी संस्कृत के कवि ने बहुत ही ठीक कहा है--

किं कवेस्तस्य काव्येन किं काण्डेन धनुष्मतः।
परस्य हृदये लग्नं न घूर्णयति यच्छिरः॥

अर्थात् कवि के उस काव्य से क्या लाभ और धनुर्द्धर वीर योद्धा के उस तीर की क्या प्रशंसा, जो पर (दूसरे, अन्य पक्ष में शत्रु) के हृदय में लगकर उसके सिर को न हिला दे।

इसी भाव को लेकर महाकवि बिहारीलाल ने भी कहा है--

सतसैया को दोहरा ज्यों नावक को तीर।
देखन को छोटो लगै, घाव करै गंभीर॥

अस्तु। वीर-रस एक सजीव रस है। वीर-रस की कविता कायरों की भी नसों में मर्दानगी का जोश भर देती है। जैसे मारू बाजा सुनकर सिपाही मस्त हो उठते हैं, समर में पीछे पैर नहीं डालते, वैसे ही पूर्वकाल में चारणों के मुख से पूर्वजों की तथा अपनी वीरता की गाथाएँ सुनकर योद्धा लोग समर में अलौकिक वीरता के कार्य कर दिखाते थे, जिन्हें देख-सुनकर लोग चकित हो जाते और दाँतों-तले उँगली दबाते थे।

महाकवि भूषण की भी कविता ऐसा ही असर रखती थी। महाराज शिवाजी को महाप्रतापी मुग़ल-सम्राट् औरंगज़ेब के मुक़ाबले में खड़े रखने का श्रेय बहुत कुछ भूषण की कविता को दिया जा सकता है, इसमें संदेह नहीं। भूषण ने थोड़ी ही कविता रची है, पर जितनी है, वह अपूर्व ओज से ओतप्रोत है।

वह समय ऐसा था कि हिंदुओं का धर्म, उनकी इज़्ज़त, उनका धन और उनके प्राण सुरक्षित नहीं थे। तअस्सुबी मुसलमानों और मज़हबी दीवाने मुल्लों का दौरदौरा था। हिंदुओं का धर्म और धन उनकी मुट्ठी में था। गऊ, ब्राह्मण, देवता आदि पर अकथनीय अत्याचार हो रहे थे। हिंदुओं की शक्ति कुचली जा रही थी। ऐसे ही समय में छत्रपति शिवाजी का अभ्युदय हुआ। वह मुग़ल-सम्राट् के विरुद्ध खड़े होकर हिंदू-धर्म की रक्षा करना अपना परम कर्त्तव्य समझकर मैदान में डट गए। सौभाग्य से उन्हें उस समय महात्मा समर्थ रामदासजी-जैसे महापुरुष गुरु, भूषण के समान वाक्-सिद्ध दरबारी कवि तथा तानाजी आदि के समान योद्धा और सलाहकार भी मिल गए। फिर क्या था, विजय-लक्ष्मी ने उनके गले में जयमाला डाल दी। शत्रुपक्ष दम-दम भर पर, क़दम-क़दम पर उनसे नीचा देखने लगा। दिल्ली के अगणित वीर और राजनीतिज्ञ उनका बाल भी बाँका न कर सके। भूषण की सजीव कविता छत्रपति के धर्मरक्षा के उत्साह और युद्धोन्माद को हर घड़ी बढ़ाती रहती थी। इसीलिए छत्रपति शिवाजी यदि हिंदूजाति के लिए श्रद्धा और आदर के पात्र हैं, तो महाकवि भूषण भी आदरणीय और नमस्य हैं।

महाकवि भूषण ने थोड़ी ही रचना की है। परन्तु उतनी ही रचना उनका नाम अमर कर देने और उनका यश अक्षुण्ण रखने के लिए यथेष्ट है। जिस समय आज की तरह छापाख़ाने नहीं थे, भारत में एक प्रांत से दूसरे प्रांत में आने-जाने की कोई सहज सुविधा नहीं थी, उस समय भी महाकवि भूषण की कविता को लोग ज़बानी कहते-सुनते और सुनाते थे। उसका यथेष्ट प्रचार था।

## भूषण की जीवनी

भूषण कवि की जीवनी बिलकुल ही अंधकार में है। उनका जन्म किस संवत् में हुआ, वह कब मरे, किस तरह उन्होंने उन्नति की, उनके काव्य-गुरु कौन थे, इन सब बातों का कहीं उल्लेख नहीं मिलता। भूषण के असली नाम का भी पता नहीं। भूषण उनका नाम नहीं, उपाधि थी, यह बात इसी ग्रंथ के एक दोहे से प्रकट है। वह दोहा इस प्रकार है—

कुल सुलंक चितकूटपति साहस-सील-समुद्र।
कवि-भूषन पदवी दई हृदयरामसुत रुद्र॥

अर्थात् चित्रकूटाधिपति सोलंकी हृदयराम के पुत्र रुद्रराम ने इनकी कविता सुनकर प्रसन्न होकर इन्हें कवि-भूषण की पदवी दी। यह उपाधि इनकी इतनी प्रसिद्ध हुई कि इनका असल नाम छिप गया। यहाँ तक कि इन्होंने भी अपने ग्रंथ में कहीं अपना नाम लिखने की आवश्यकता नहीं समझी। अस्तु, इनके परिचय की जो कुछ सामग्री पुस्तकों से तथा किम्वदन्तियों से उपलब्ध है, उसी के आधार पर हम यहाँ इन कविवर के संक्षिप्त परिचय देने की चेष्टा करते हैं।

शिवराज-भूषण में भूषण ने केवल एक दोहा लिखकर अपना संक्षिप्त परिचय दिया है। वह दोहा इस प्रकार है—

द्विज कनौज कुल कस्यपी रतनाकर-सुत धीर।
बसत तिविक्रमपुर सदा तरनितनूजा-तीर॥

इसका अर्थ स्पष्ट है। उसके अनुसार यह कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। कश्यपगोत्री थे। इससे स्पष्ट है कि त्रिपाठी थे। कारण, कान्यकुब्जों में त्रिपाठियों का ही कश्यप-गोत्र है। इनके पिता का नाम रत्नाकर था। त्रिविक्रमपुर इनका निवास-स्थान था, जो कि यमुना-नदी के किनारे बसा था। यह त्रिविक्रमपुर अब भी तिकवाँपुर के नाम से प्रसिद्ध है। एक साधारण गाँव रह गया है। कानपुर-ज़िले में है और अभी तक यमुना के वाम तट पर इसकी अवस्थिति है। इस गाँव के निकट ही एक बड़ा गाँव है, जो "अकबरपुर-वीरबल" नाम से प्रसिद्ध है। सुना जाता है, यही बादशाह अकबर के प्रीतिभाजन प्रत्युत्पन्नमति मनस्वी वीरबल का जन्मस्थान है।

किंवदंती है कि भूषण के पिता को देवीजी का बड़ा इष्ट था। उनके चार पुत्र थे—चिन्तामणि, भूषण, मतिराम और नीलकण्ठ। नीलकण्ठ का नाम जटाशंकर भी था। हिंदी-साहित्य में भूषण के अतिरिक्त अन्य तीन सज्जनों की भी कविताएँ उपलब्ध हैं। मतिराम की गणना तो महाकवियों और आचार्यों में की जाती है। नीलकण्ठ और चिन्तामणि की कविता भी अच्छी ही है। परन्तु ये चारों भाई-भाई ही थे, यह बात सन्देहास्पद है, और किंवदन्ती के सिवा इसका और कोई प्रमाण भी नहीं।

भूषण का जन्म किस संवत् में हुआ, यह कहना कठिन है। माननीय मिश्रबन्धुओं ने अनुमान से इनका जन्म सं० १६९२ के लगभग माना है। परमानन्द सोहाने ने लिखा है कि नीलकंठ तो एक सिद्ध के आशीर्वाद से कवि हुए, और अन्य तीनों भाई काव्यग्रंथों का अध्ययन कर पंडित हुए और अच्छी कविता करने लगे। भूषण ने तो अपने सम्बन्ध में लिख भी दिया है कि—

कृपा कविनहू की कछू समुझि कविन को पंथ।
भूषन भूषनमय करत सिवभूषन यह ग्रंथ॥

परमानन्द सोहाने के मत से सुप्रसिद्ध कवि शीतल और बिहारीलाल (उपनाम लाल कवि) इन्हीं के वंशज थे।

भूषण के सम्बन्ध में यह जनश्रुति है कि यह पहले अपने बड़े भाई चिन्तामणि के ही मत्थे खाते और निठल्ले रहते थे। इन्हें उपार्जन की कोई फ़िक्र नहीं थी। यह पढ़े-लिखे भी कुछ विशेष नहीं थे। एक दिन भोजन करते समय अपनी भावज से नमक माँगा और शायद कुछ विलम्ब होने के कारण बिगड़े भी। इस पर भावज ने ताना देकर कहा—ताव इतना दिखाते हो, पर कमाने-धमाने के कुछ नहीं! नमक क्या मोल लेकर रख दिया है? भूषण को बात लग गई। वह तुरन्त उठ खड़े हुए और भोजन किए बिना ही यह कहकर घर से चल दिए कि अब जब कमाकर लावेंगे, तभी घर आकर भोजन करेंगे।

एक मत यह है कि इन्होंने जाकर देवी की उपासना की और उनके वरदान से कवित्व-शक्ति पाई। दूसरा मत यह है कि इन्होंने जाकर पढ़ने में घोर परिश्रम किया और साहित्य का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर एक प्रतिभाशाली उत्कृष्ट कवि बन गए। अस्तु, चाहे जिस तरह हो, इन्होंने अपनी योग्यता बहुत बढ़ा ली।

कुछ लोगों का मत यह है कि कवित्व-शक्ति प्राप्त कर पहले यह रुद्रराम सोलंकी के यहाँ गए और वहाँ इनका अच्छा सम्मान हुआ। परन्तु एक मत यह भी है कि यह पहले-पहल अपने बड़े भाई चिन्तामणि के आश्रयदाता औरंगज़ेब के दरबार में ( दिल्ली ) गए।

वहाँ औरंगज़ेब के सामने जब भूषण पेश हुए, तो बादशाह ने इनसे भी अपनी रचना सुनाने को कहा। इस पर भूषण ने अर्ज़ की—बादशाह सलामत, आप पहले मेरे भाई साहब ( चिन्तामणि ) की शृंगार-रस की कविता सुन चुके हैं। अवश्य ही जगह-बेजगह हाथ पड़ गया होगा। मेरी कविता वीर-रस की होती है। उसे सुनकर आपका हाथ मूछों पर पड़ेगा। इसलिए आप पहले हाथ धो लें, तब मेरी कविता सुनें।

बादशाह ने मन ही मन कुछ रुष्ट होकर कहा—अगर ऐसा न हुआ, हाथ मूछ पर न पड़ा तो मैं तुम्हें क़त्ल करा दूँगा।

भूषण के स्वीकार करने पर बादशाह ने हाथ धो डाले। भूषण अपनी ओज-भरी रचना पढ़ने लगे और बादशाह का हाथ मूछों पर पहुँच गया। बादशाह ने ख़ुश होकर इन्हें भी अपने दरबार में रख लिया।

यहाँ पर यह शंका होना स्वाभाविक है कि औरंगज़ेब तो अकबर या शाहजहाँ की तरह हिंदुओं से और हिंदी से प्रेम नहीं रखता था, फिर उसके दरबार में हिन्दी-कवियों का होना कैसे संभव है? इसके उत्तर में इतना ही कहना है कि उस समय औरंगज़ेब के यहाँ एक नहीं, कई हिन्दी के कवि आश्रय पाए हुए थे। बहुत संभव है, वे केवल दरबार की शोभा बढ़ाने के लिए ही रक्खे गए हों या उसके पूर्वजों के आश्रित रहे हों। चिन्तामणि और भूषण के अलावा कालिदास, कृष्ण, सामन्त, सुखदेवमिश्र, काशीराम, लोकनाथ आदि कई सत्कवि औरंगज़ेब के आश्रित थे। इनमें से चार-पाँच कवियों की कविता के नमूने भी पं० रामनरेशजी त्रिपाठी ने अपनी भूषण-ग्रंथावली की भूमिका में उद्धृत किए हैं। पाठकों के मनोरंजनार्थ हम भी उन्हें यहाँ उद्धृत किए देते हैं—

गढ़न गढ़ी से दलि, महल मढ़ी से मलि, बीजापुर दलिमलि ओप्यो उजराई मैं।  
"कालिदास" कोप्यो बीर औलिया अलमगीर तीर तरवारि गहि पुहुमी पराई मैं॥  
जुद्ध ते उमडि महिमंडल घमंडि मंडी लोहू की लहरि हिमगिरि की तराई मैं।  
गाड़ि कर झंडा आड़ कीन्ही बादसाह ताते डकरी चमुंडा गोलकुंडा की लराई मैं॥  
( कालिदास कवि )

कंपत अमर खलभल मचो ध्रुवलोक उडुगनपति अति नेक न सकात हैं।  
देस के दिनेस के गनेस सब काँपत हैं सेस के सहस फन फैलि फैलि जात हैं॥  
आसन डिगत पाकसासन को "कृष्ण कवि" हालि उठे दुग्ग बड़े गंद्रफ को खात हैं।  
चढ़े ते तुरंग नवरंगसाह बादसाह ज़मी-आसमान थरथर थहरात हैं॥  
( कृष्ण कवि )

तुरंग बैठि जंग मैं कुरंग को लगाय के चल्यो बिहंगराज लौं बिहंग को न आदरै।  
बड़े समूह छोर ज्यों धराउ ओर छोर लौं सुभाय खेलि सेल सों उखारि सैल को धरै॥  
"समन्त" हाथ जोरि कै अमोर दन्त तोरि कै उखारि मारि भूमि सों गयंद गेंद से करै।  
बचै न सिंह सारदूल सिंधु वारपार लौं नरंगसाह बार के सिकार बीच जो परै॥  
( सामन्त कवि )

जेती पर पृथु रथ फिरयो, जेती धरी फनीस।  
तेती जीती आनि है, औरंगजेब दिलीस॥  
( सुखदेव मिश्र )

इन उद्धरणों से यह स्पष्ट है कि औरंगज़ेब के दरबारी कवि औरंगज़ेब को सुनाने के लिए प्रायः वीर-रस की ही कविता करते थे। यह ठीक भी है; क्योंकि वह कामुक नहीं, योद्धा था। हाँ, शृंगार-रस की भी कविता (परिपाटी के अनुसार) अवश्य थोड़ी-बहुत वे लोग बनाकर औरंगज़ेब को सुनाते होंगे, जैसा कि अपने भाई चिन्तामणि के विषय में भूषण ने कहा था, और जिसका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है।

औरंगज़ेब के सम्बन्ध में किसी कवि ने एक बहुत सुन्दर भड़ौवा बनाया था। औरंगज़ेब ने किसी कवि को एक हथनी इनाम में दी थी। शायद देनेवाले कर्मचारी ने उस बेचारे के हवाले एक बुढ़िया हथनी कर दी। इसी से चिढ़कर उस कवि ने यह छप्पै बनाई थी—

तिमिरलंग लइ मोल, गई बब्बर के हलके।
रही हुमाऊँ साथ चली अकबर के दल के॥
जहाँगीर जसु लियो पीठि को भार छुड़ायो।
साहजहाँ करि दया ताहि को माडू चटायो॥
बलरहित भई, पौरुष थक्यो, भगी फिरत बन स्यार-डर।
औरंगजेब हथिनी सोई लै दीन्ही कविराज-कर॥

अस्तु, भूषण कवि औरंगज़ेब के दरबार में रहने लगे। पर यह अन्य आश्रित कवियों की तरह न तो चापलूस थे और न हिन्दू-विद्वेषी बादशाह से सन्तुष्ट ही रहते थे। सुना जाता है, एक दिन औरंगज़ेब ने अपने दरबारी कवियों के आगे कहा कि तुम लोग मेरी हद से ज़्यादा तारीफ़ करते हो। सच्ची तारीफ़ नहीं करते। मैं मनुष्य हूँ, मुझमें भी दोष होना स्वाभाविक है। मेरी सच्ची तारीफ़ करो।

यह सुनकर सब कवि चुप रहे। किसी की हिम्मत न पड़ी कि बादशाह के दोषों का वर्णन करे। परन्तु भूषण कवि ने तत्काल दो छन्द रचकर पढ़े, जिनमें बड़े भाई का क़त्ल करने, बाप को बन्दी बनाने तथा अन्य भाइयों को धोका देकर राज्य हथियाने आदि का ज़िक्र करके औरंगज़ेब के सारे दोष उसे बतला दिए। वे छन्द ये हैं—

किबले के ठौर बाप बादसाह साहजहाँ,
  ताको कैद कियो मानौ मक्के आगि लाई है।
बड़ो भाई दारा, वाको पकरि कै कैद कियो,
  मेहर हू नाहिं, मा को जायो सगो भाई है॥
बन्धु तौ मुरादबक्स बादि चूक करिबे को,
  बीच दै कुरान खुदा की कसम खाई है।
भूषन सुकवि कहै, सुनौ नवरंगजेब,
  एते काम कीन्हे फेरि बादसाही पाई है॥
हाथ तसबी को लिए प्रात उठै बंदगी को,
  आप ही कपट-रूप कपट सु जप के।
आगरे में जाय दारा चौक में चुनाय दीनो
  छत्रहू छिनायो मानो मरे बूढ़े बप के॥
कीनो है सगोत-घात सो मैं नाहिं कहौं फेरि,
  पील पै तोरायो चारि चुगुल के गप के।
भूषन भनत छरछन्दी मतिमंद महा,
  सौ सौ चूहे खाय कै बिलाई बैठी तप के॥

सुनकर बादशाह आग-बबूला हो गया। उसने भूषण को अपने सामने से चले जाने की आज्ञा दी। भूषण को बादशाह से मिलनेवाली वृत्ति की कोई पर्वा न थी। वह स्वाभिमानी थे। चट चल दिए।

इनके पास एक घोड़ी थी, जिसका नाम कबूतरी था। वह बहुत तेज़ थी। इसी पर बैठकर इन्होंने दक्षिण के लिए यात्रा की। रास्ते में बादशाह की सवारी आ रही थी। सामना हो गया। बादशाह और उसके दरबारी नमाज़ पढ़ने जा रहे थे। बादशाह हाथी पर था। दरबारियों में से किसी के पूछने पर भूषण ने कहा—मैं छत्रपति शिवाजी के दरबार में जाऊँगा। बादशाह को जब हाल मालूम हुआ तो उसने भूषण के पकड़ लाने को पीछे से कई सवार भेजे, पर वे भूषण को न पा सके। वह कुशल से शिवाजी की सेवा में पहुँच गए।

पं० रामनरेशजी त्रिपाठी ने इस सम्बन्ध में लिखा है—

"दूसरे मतवालों का कथन है कि ये कहानियाँ कपोल-कल्पित हैं। उनमें कुछ सार नहीं। औरंगज़ेब के दरबार में कोई हिंदू कवि था ही नहीं। और यदि होता भी तो औरंगज़ेब ऐसा-वैसा बादशाह नहीं था कि उसके सामने से कोई उसकी निन्दा करके बच जाता। भूषण औरंगज़ेब के दरबार में कभी गए ही नहीं। वह हृदय-रामसुत रुद्र के यहाँ होते हुए सीधे रायगढ़ पहुँचे।

भूषण की संपूर्ण कविताएँ, जो उपलब्ध हैं, और जिनका संग्रह भूषण-ग्रंथावली में किया गया है, पढ़कर हमारी यह धारणा हुई है कि ऊपर लिखी हुई औरंगज़ेब-संबंधी कथाओं में जो कुछ भी सत्य का अंश हो, भूषण दिल्ली गए अवश्य थे और इन्होंने औरंगज़ेब का दरबार भी देखा था। शिवाजी के दिल्ली* जाने और औरंगज़ेब से उनकी बातचीत होने का वर्णन भूषण ने ऐसा आँखों देखा किया है, मानो वह उस समय वहाँ उपस्थित ही थे। इसी आधार पर हमारा अनुमान है कि शिवाजी के दिल्ली पहुँचने के समय भूषण वहाँ अवश्य थे। जब शिवाजी दिल्ली से निकल गए, उसके पश्चात् भूषण ने भी दिल्ली से प्रस्थान कर दिया। हिंदूद्वेषी औरंगज़ेब की ग़ुलामी छोड़कर हिन्दू धर्मरक्षक शिवाजी का आश्रय ग्रहण करना भूषण ऐसे स्वजात्यभिमानी कवि के लिए स्वभाव-सिद्ध बात थी। इत्यादि।"

हम भी त्रिपाठीजी से सहमत हैं, इसलिए हमने यहाँ उनका वक्तव्य उद्धृत कर दिया है। इसमें सन्देह नहीं कि भूषण की कविता पढ़ने से यह स्पष्ट हो जाता है कि वह औरंगज़ेब से बेहद चिढ़े हुए थे और उसका सर्वनाश चाहते थे। यह बात बिना किसी विशेष कारण के नहीं हो सकती। वह कारण चाहे यह हो कि औरंगज़ेब हिन्दू-जाति और हिन्दू-धर्म पर अत्याचार करता था और भूषण को अपनी जाति तथा धर्म बहुत प्रिय था अथवा यह हो कि औरंगज़ेब के दरबार में रहते समय किसी घटना से भूषण के हृदय में बादशाह के प्रति द्वेष बद्धमूल हो गया हो।

औरंगज़ेब के यहाँ हिंदू कवि अनेक थे, यह बात पहले ही लिखी जा चुकी है। अकबर के दरबार में कवि गंग, नरहरि, ब्रह्म ( बीरबल ) आदि कई कवि थे। मीर ग़ुलामअली अपनी पुस्तक "तज़किरए सर्व आज़ाद" में ( जो सं० १८०८ में लिखी गई थी ) लिखते हैं कि शाहशुजा ( औरंगज़ेब के भाई और शाहजहाँ के बेटे ) के पास चिन्तामणि कवि बड़ी प्रतिष्ठा के साथ रहते थे। उन्होंने यह भी लिखा है कि चिन्तामणि संस्कृत के प्रकांड पंडित थे और भूषण तथा मतिराम उनके भाई थे। बहुत संभव है कि शुजा के मरने पर चिन्तामणि उसके भाई औरंगज़ेब के दरबार में रहने लगे हों और भूषण ने पहले अपने भाई की सरकार में जाकर अपनी कवित्व-शक्ति द्वारा भाई से अधिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने की इच्छा की हो। कारण, यदि नमकवाली किंवदन्ती सत्य है तो बहुत संभव है, वह बातचीत भाई के ही सामने हुई हो और इस प्रकार भूषण भाई से भी नाराज़ हो गए हों, अथवा अपनी भावज को ही यह दिखा देना चाहा हो कि मैं अपने भाई से अधिक प्रतिष्ठा और धन उसी के आश्रयदाता से प्राप्त करने में समर्थ हुआ हूँ। चाहे जिस तरह हो, भूषण का औरंगज़ेब के यहाँ जाना और रहना असंभव नहीं प्रतीत होता।

अस्तु, अब भूषण के जीवन की आगे की घटनाएँ भी जनश्रुति के ही आधार पर लिखी जाती हैं। भूषण दिल्ली से चलकर शिवाजी की राजधानी रायगढ़ में जब पहुँचे, तो शाम हो गई थी। वह एक देवालय में ठहरे। किसी-

* शिवाजी दिल्ली नहीं, आगरे में बादशाह से मिलने गए थे। यह बात अब सिद्ध हो गई है। आगे शिवाजी की जीवनी में विस्तार से इस पर लिखा जायगा।—लेखक

किसी का कहना है कि यह एक कुएँ पर बैठ गए। इसी समय शिवाजी वेष बदले हुए वहाँ पहुँचे। कारण, इस तरह वेष बदलकर घूमना और सब वृत्तान्त जानना उनका नियम था।

वहाँ पहुँचकर एक परदेशी को देखकर शिवाजी ने उससे उनका नाम, धाम और वहाँ आने का प्रयोजन पूछा। जब उन्हें यह मालूम हुआ कि यह कवि हैं और औरंगज़ेब का दरबार छोड़कर मुझसे ही मिलने आये हैं, तब भूषण से शिवाजी-सम्बन्धी कोई कविता सुनाने की प्रार्थना की। यहाँ पर यह कह देना आवश्यक है कि किसी-किसी की राय में शिवाजी ने अपने को शिवाजी का एक सरदार बतलाया था और शिवाजी से मिला देने का वादा भी किया था। अस्तु, भूषण ने उसी समय निम्नलिखित छन्द बड़े ओज के साथ पढ़ा—

इन्द्र जिमि जंभ पर, बाड़व सुअंभ पर, रावन सदंभ पर रघुकुलराज हैं।
पौन बारिबाह पर, संभु रतिनाह पर त्यों सहस्रबाह पर राम द्विजराज हैं॥
दावा द्रुमदुंड पर, चीता मृगझुंड पर, भूषन बितुंड पर जैसे मृगराज हैं।
तेजतिमिरंस पर, कान्ह जिमि कंस पर त्यों मलेच्छबंस पर सेर सिवराज हैं॥

यह छन्द सुनकर शिवाजी महाराज बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने बारम्बार प्रार्थना करके कई बार यह छन्द भूषण के मुख से सुना। कोई कहता है, केवल १८ बार और कोई कहता है, ५२ बार यही छन्द भूषण ने पढ़कर सुनाया था। आगे फिर कहने को प्रार्थना करने पर उन्होंने थककर या खीझकर पढ़ने से इनकार कर दिया। किसी के मत से शिवाजी ने वहीं कविजी को अपना परिचय दे दिया और किसी के मत से दूसरे दिन दरबार में आने को और वहाँ शिवाजी से भेंट करा देने को कहा।

दूसरे दिन भूषण के राजद्वार पहुँचने पर वह भीतर बुलवा लिए गए। वहाँ सिंहासन पर उसी पूर्वदृष्ट पुरुष को बैठे देखकर भूषण बहुत चकित हुए। तब शिवाजी ने बड़े आदर से उन्हें बिठाकर कहा—मुझसे ही आपकी कल भेंट हुई थी। मुझे इस समय आपके समान वीर कवि की अत्यन्त आवश्यकता भी थी। यों कहकर शिवाजी ने भूषण को ५२ लाख रुपए, ५२ हाथी और ५२ गाँव की जागीर दी।

ख़ैर, भूषण वहाँ शिवाजी के दरबार में बड़ी शान और मान के साथ रहने लगे। भूषण केवल कवि ही नहीं, एक वीर पुरुष भी थे। यह बात उनके अनेक वर्णनों से स्पष्ट प्रतीत होती है कि वह प्रायः युद्ध के समय शिवाजी के साथ रहते थे; क्योंकि जैसा युद्धों का सजीव वर्णन उन्होंने किया है, वैसा वर्णन आँखों से देखे बिना करना कठिन है।

सुना जाता है, भूषण ने अपनी भावज के पास एक लाख रुपए का नमक भेज दिया था। मालूम नहीं, यह बात कहाँ तक सच है।

भूषण शिवाजी के यहां से जब अपने घर को लौटे, उस समय उनके पास धन की और सम्मान की कुछ कमी न थी। त्रिपाठीजी ने इनका घर लौटना संवत् १७३१-३२ में लिखा है। उस समय महाराज शिवाजी का राज्याभिषेक हो चुका था और भूषण शिवराज-भूषण की रचना कर चुके थे।

मार्ग में छत्रसाल बुँदेला से भी यह मिले। महाराज छत्रसाल भी अपने समय के एक वीर पुरुष थे। छत्रसाल ने सोचा कि भूषण को शिवाजी ने निहाल कर दिया है, इन्हें धन की तो पर्वा नहीं है। इनका सम्मान ही इन्हें सन्तुष्ट कर सकता है। यह सोचकर महाराज ने भूषण की पालकी अपने कंधे पर रख ली। इस विनय और सम्मान से परम सन्तुष्ट होकर भूषण पालकी से उतर पड़े और बोले—बस महाराज, आपने सम्मान की हद कर दी।

भूषण ने छत्रसाल पर सन्तुष्ट होकर निम्नलिखित छन्दों में उनकी प्रशंसा की—

राजत अखंड तेज, छाजत सुजस बड़ो, गाजत गयंद दिग्गजनि हिए साल को।
जाहि के प्रताप सों मलिन आफताब होत ताप तजि दुर्जन करत बहु ख्याल को॥
साज सजि गज तुरी कोतल कतार दीन्हे भूषन भनत ऐसो दीन-प्रतिपाल को।
और राजा-राव मन एकहू न लाऊँ, अब सिवा को सराहौं कै सराहौं छत्रसाल को॥
भुज-भुजगेस की वै संगिनी भुजंगिनी सी खेदि खेदि खाती देह दारुन दलन के।
बखतर पाखरन बीच धँसि जात मीन पैरि पार जात परवाह ज्यों जलन के॥

रैया राव चंपति के छत्रसाल महाराज भूषन सकत को बखानि यों बलन के।
पच्छी पर छीने ऐसे परे पर छीने बीर तेरी बरछी ने बर छीने हैं खलन के॥
इक हाड़ा बूंदी धनी मरद महेवा वाल।
सालन औरंगजेब के ये दोनों छत्रसाल॥
वे देखो छत्तापता ये देखो छत्रसाल।
वे दिल्ली की ढाल, ये दिल्ली ढाहनवाल॥

छत्रसाल ने बहुत कुछ धन-रत्न आदि देकर कवि भूषण को विदा किया। भूषण अपने घर आकर बड़े ठाट-बाट और सुख से रहने लगे। किंवदन्ती है कि एक बार यह कमाऊँ-नरेश के यहाँ भी गए थे! भूषण ने कमाऊँ-नरेश के हाथियों की प्रशंसा में निम्नलिखित छंद पढ़ा—

उलहत मद अनुमद ज्यों जलधि जल बलहद भीमकद काहू की न आह के।
प्रबल प्रचंड गंड मंडित मधुप-वृन्द विंध्य से बलंद सिंधु सात हू की थाह के॥
भूषन भनत झूल झंपत झँपान झुकी झूकत झुकत झहरान रथ लाह के।
मेघ से घमंडित मजेजदार तेजपुंज गुंजरत कुंजर कुमाऊँ नर नाह के॥

यह सुनकर राजा ने सोचा कि कविजी कदाचित् धन-रत्न और हाथी आदि पाने की इच्छा रखते हैं और मैंने जो सुना था कि शिवाजी ने इन्हें अयाचक बना दिया है, सो ठीक नहीं। यह सोचकर उन्होंने भूषण को बहुत-सा द्रव्य और हाथी देने का विचार प्रकट किया। इस पर भूषण ने कहा—महाराज, मुझे शिवाजी ने इतना दिया है कि किसी चीज़ की चाह नहीं रही। मैं तो केवल यह देखने आया था कि छत्रपति का यश यहाँ तक फैला है या नहीं। सो यहाँ भी उनके सुयश का विस्तार देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। यह कहकर भूषणजी वहाँ से चलते बने।

कुछ दिन घर में रहकर भूषण फिर शिवाजी के दरबार में गए। वहाँ समय-समय पर शिवाजी की वीरता से सम्बन्ध रखनेवाले अनेक छन्द बनाए। अधिकांश उनका संग्रह शिवा-बावनी में है।

सं० १७३७ में शिवाजी का स्वर्गवास हो गया। तब भूषण घर चले आये। कभी-कभी छत्रसाल के दरबार में चले जाते थे, बाकी समय घर में ही बिताते थे। सं० १७६४ में साहूजी (शिवाजी के पोते) बादशाह की कैद से छुटकारा पाकर लौट आए, तब भूषण फिर दक्षिण गए थे और कुछ दिन रहकर घर चले आए। अपने छोटे भाई मतिराम के आश्रयदाता बूँदी-नरेश के यहाँ भी भूषण सं० १७६८ में गए थे। पर वहाँ का सम्मान इन्हें कुछ जँचा नहीं, इससे लौट आए। शेष समय शायद इन्होंने घर पर ही भगवद्भजन में व्यतीत किया।

भूषण की जीवनी की जो बातें जनश्रुति तथा अन्य लेखकों की पुस्तकों से मालूम हुईं, वे हमने यहाँ संग्रह करके दे दी हैं। भूषण किस संवत् में वैकुण्ठवासी हुए और उनके सन्तान थी या नहीं, यह कुछ मालूम नहीं हो सका।

इस समय कुछ दिनों से पं० भागीरथप्रसादजी दीक्षित ने यह आंदोलन चला रक्खा है कि भूषण शिवाजी के दरबार में कभी गए ही नहीं। उन्होंने शिवराज-भूषण की रचना साहूजी के समय में की है। भूषण और मतिराम भाई-भाई नहीं थे। हमारी समझ में उनका यह मत समीचीन नहीं। शिवराज-भूषण के कई छन्द इस बात की साक्षी दे रहे हैं कि शिवराज-भूषण की रचना भूषण ने शिवाजी के समय में ही की है। शिवाजी के समय में वह मौजूद थे, पीछे नहीं हुए। मतिराम भूषण के भाई थे या नहीं, इसका यहाँ विवेचन करने के लिए इस छोटी सी भूमिका में स्थान नहीं है। फिर इन बातों का समाधान मिश्रबन्धुओं और पं० कृष्णबिहारीजी मिश्र माधुरी आदि पत्रिकाओं में कर चुके हैं। अतएव इस विवाद पर यहाँ कुछ नहीं लिखा जाता।

डाक्टर यदुनाथ सरकार महाशय ने इतिहास की बड़ी छानबीन करके "शिवाजी" नाम की एक पुस्तक अँगरेजी में लिखी है। वह एक प्रामाणिक पुस्तक है। उसमें उन्होंने यह स्वीकार किया है कि भूषण शिवाजी के समसाम-

यिक और दरबारी कवि थे * और उन्होंने अफ़ज़लख़ाँ के मारे जाने का तथा अन्य युद्धों का वर्णन ठीक-ठीक किया है, जो सर्वथा इतिहास से प्रमाणित होता है।

## शिवाजी की जीवनी

अब हम शिवाजी का परिचय और उन्होंने जो-जो युद्ध किए, उनका सविस्तर वर्णन देते हैं। कारण, शिवराज-भूषण में बहुत सी ऐसी घटनाओं का संक्षेप में उल्लेख किया गया है, जिनका विस्तृत वर्णन पढ़ने की इच्छा पाठकों को हो सकती है।

### जन्म-संवत् और तिथि

शिवाजी का जन्म १५५१ शकाब्द ( सन् १६३० ई०, तदनुसार संवत् १६८६ वि० ), फाल्गुन-कृष्णातृतीया को हुआ था। इसके सम्बन्ध में माधुरी वर्ष ८, खंड १, सं० ५ में श्रीयुत गोपालदामोदर तामस्करजी का एक लेख निकला था। यह लेख यह बतलाने के लिए लिखा गया था कि शिवाजी महाराज की त्रिशतवार्षिकी वर्ष-तिथि वास्तव में किस दिन पड़ती है। लेखक ने सिद्ध किया था कि यह त्रिशतवार्षिकी १७ मार्च, १९३० सन् को पड़ती है और इसी दिन महाराष्ट्र में छत्रपति का जन्मोत्सव मनाया गया था।

इस लेख के लिखने का यह भी एक कारण था कि भिन्न-भिन्न १७ ग्रंथों में शिवाजी की जन्म-तिथि और संवत्सर जो लिखे मिलते हैं, वे परस्पर नहीं मिलते। यहाँ पर हम उन १७ ग्रंथों के नाम और रचना-काल दिए देते हैं।

( १ ) रायरी-बखर ( रचना-काल शक १६८२-९२ ) फ़ारेस्ट प्रति ( राजवाड़े प्रति ) में शिवाजी का जन्म शक १५४८, क्षय नाम संवत्सर, वैशाख-शुक्ल ५, सोमवार को लिखा है [ यह शक, संवत्सर और दिन, तीनों ही अशुद्ध हैं ]।

( २ ) इक्यानबे कलमी बखर ( रचना-काल १६८२-९२ ) में शक १५४९, क्षय संवत्सर, वैशाख-शुक्ल ५, सोमवार लिखा है [ इसमें भी वही बात है ]।

( ३ ) तारीख़ए-शिवाजी ( १६९२-१७०२ ) में शक १५४९ †, क्षय या जय संवत्सर, वै० शु० ५ को शिवाजी का जन्म लिखा है [ संवत्सर अशुद्ध है, दिन दिया ही नहीं ]।

( ४ ) प्रभानवल्ली-शकावली ( १७२० ) में शक १५४९ और विभव नाम का संवत्सर लिखा है [ संवत्सर अशुद्ध है। महीना, तिथि अथवा दिन दिया ही नहीं ]।

( ५ ) धड़फळे-यादी अर्थात् सूची ( १७२९ ) में १४४९ शक, प्रभव संवत्सर, वैशाख शुक्ल में जन्म लिखा है [ दिन और तिथि नहीं दी ]।

( ६ ) चिटनीस-बखर ( १७३२ ) में १५४९ शक, प्रभव संवत्सर, वै० शु० २, गुरुवार लिखा है [ तिथि का दिन से मेल नहीं ]।

( ७ ) रामदासी-शकावली अथवा म० सा० छोटी बखर ( १७३९ ) में १५४९ शक लिखा है [ संवत्सर, तिथि या दिन कुछ भी नहीं दिया ]।

( ८ ) शिव-दिग्विजय ( १७४० ) में १५४९ शक, प्रभव संवत्सर, वैशाख-शुक्ल द्वितीया, गुरुवार, रोहिणी को शिवाजी का जन्म लिखा है [ इसमें भी तिथि, दिन और नक्षत्र का मेल नहीं मिलता ]।

---

* Shivaji's laureate, Bhushan, calls the slaughter of the licentious ruffian Kichak by Bhim in single Combat.

† शक १५४९ में प्रभव नाम का संवत्सर था, क्षय या जय नहीं। उस साल वैशाख-शुक्ल द्वितीया को शनिवार और भरणी नक्षत्र था तथा पंचमी को मंगलवार और आर्द्रा नक्षत्र था। इसी से आगे लिखी सब साक्षियों की असंगति पाठकों की समझ में आ जायगी।

( ९ ) नागपुर के भोंसले की बखर ( १७४४ ) में १५४९ शक, प्रभव संवत्सर, वै० शु० २, गुरुवार लिखा है [ तिथि का दिन से मेल नहीं खाता ] ।

( १० ) छत्रपति की वंशावली-सूची (१७४४) में १५४९ शक और वै० शुक्ल ५ लिखी है [ संवत्सर और दिन नहीं दिया ] ।

( ११ ) शिवाजी-प्रताप (१७५१) में १५५६ शक और रक्ताक्ष संवत्सर लिखा है [ संवत्सर का नाम ग़लत है । तिथि, वार आदि कुछ दिया नहीं ] ।

( १२ ) म० सा० छोटी बखर (१७५३) में १५४९ शक, क्षय संवत्सर, वैशाख-शुक्ल ५, भौमवार दिया है [ संवत्सर और दिन अशुद्ध है ] ।

( १३ ) विजय दुर्ग की हक़ीक़त ( १७५७ ) में १५४६ शक, प्रभव संवत्सर वैशाख-कृष्णपक्ष की द्वितीया लिखा है [ शक और पक्ष में ग़लती है, दिन दिया नहीं ] ।

( १४ ) पंत प्रतिनिधि की बखर ( १७६६ ) में १५४९ शक, वैशाख-शुक्ल पूर्णिमा, सोमवार लिखा है [ तिथि और दिन अशुद्ध हैं ] ।

( १५ ) पडितराव की बखर ( १७७० ) में शक १५४९, प्रभव संवत्सर लिखा है [ महीना, तिथि और दिन नहीं दिया ] ।

( १६ ) शेडगाँव की बखर ( १७७६ ) में १५४९ शक, प्रभव संवत्सर, वै० शु० ३, शनिवार, रोहिणी और कर्क-लग्न में जन्म लिखा है [ तिथि और दिन का नक्षत्र से मेल नहीं मिलता ] ।

( १७ ) भिड़े का इतिहास ( १७८८ ) में १५४९ शक , वै० शु० ३, शनिवार लिखा है [ तिथि का दिन से मेल नहीं खाता ] ।

इन ग्रंथों के रचना-काल शकाब्दों में, कोष्ठक में, दिए गए हैं । पाठकों की जानकारी और मनोरंजन केलिए हमने इन सत्रहों ग्रंथों का परिचय यहाँ दे दिया है । लेख के अंत में उक्त लेखक ने इस सम्बन्ध में निष्कर्ष-रूप से यह लिखा है—

"शिव-भारत ग्रंथ और जेधे आदि शकावलियाँ शिवाजी के समय की लिखी हैं । शिवा-जन्म की मिती उनके अत्यन्त विश्वसनीय भागों में से है । वह गणित की दृष्टि से बिलकुल ठीक उतरती है, इसलिए उसमें दी हुई शिव जन्म-तिथि शक १५५१, फाल्गुन वदि तृतीया (सन् १६३० ई०) बिलकुल ही ठीक है । उपर्युक्त तिथि का समर्थन एक और स्थल से हो चुका है । ब्यावर-राज में श्रीयुत पंडित मीठालाल व्यास के यहाँ कई शिवाकालीन कुंडलियों का संग्रह प्राप्त हुआ है । उनमें शिवाजी की भी कुण्डली मिली है । वह कुण्डली शिवराम ज्योतिषी के हाथ की लिखी है । शिवरामजी का जन्म शक १५५१ (सन् १६३७ ई०) में और मृत्यु शक १६४२ (सन् १७२०) में हुई थी । अर्थात् यह पुरुष शिवाजी का समकालीन था । उसने कुंडली में शिवाजी के जन्म की तिथि संवत् १६८६, फाल्गुन-वदि तृतीया दी है । यह शिव-भारत और जेधे-शकावली से ठीक मिलती है । ब्यावर-जैसे सुदूर स्थान में जो कुण्डली शिवाजी के समसामयिक पुरुष ने लिख रक्खी होगी, वह सूक्ष्म कुण्डली की नक़ल ही होनी चाहिए । इसमें जन्म का समय सूर्यास्त के कुछ बाद का बताया है । इस प्रकार तंजोर में मिले हुए शिव-भारत, महाराष्ट्र में मिली हुई जेधे-शकावली और ब्यावर की कुण्डली की जन्मतिथि बिलकुल मिलती है । ऊपर बता ही चुके हैं कि यह गणित से भी ठीक है, इसलिये यही सर्वमान्य होनी चाहिए ।"

## शिवाजी के समय में दक्षिण-भारत की स्थिति

शिवाजी का जन्म होने के बाद, कुछ ही महीने में, जहाँगीर बादशाह की मृत्यु हो गई । दिल्ली के तख़्त पर शाहजहाँ बैठा । उत्तर-भारत में मुग़ल-बादशाहों का राज्य उस समय अच्छी तरह फैल गया था । दक्षिण-भारत के राज्य भी दिल्ली की मातहती स्वीकार कर चुके थे । बादशाह अकबर ने ही पछाँह में काबुल तक, पूरब में बंगाल तक, उत्तर में काश्मीर तक और दक्खिन में बरार तक अपनी सल्तनत बढ़ा ली थी । केवल महाराणा

प्रतापसिंह ही ऐसे थे कि उन्होंने स्वतन्त्रता खोकर सुख से रहना क़बूल नहीं किया और अकबर की विशाल सेना का सामना करते रहे। प्रतापसिंह के वैकुंठवासी होने पर उनके कुमार अमरसिंह पिता के प्रण को नहीं निबाह सके। मेवाड़ की स्वतन्त्रता नाममात्र को रह गई। अकबर का भी देहान्त हुआ और जहाँगीर ने मेवाड़ को फ़तेह करने के लिए कई बार चढ़ाई की। अन्त को सन् १६१४ ई० में शाहज़ादा ख़ुर्रम ने अमरसिंह को बादशाह से सुलह करने के लिए मजबूर किया। यही ख़ुर्रम शाहजहाँ के नाम से दिल्ली के तख़्त पर बैठे।

उत्तर-भारत ने तो इस तरह जहाँगीर के राजत्व-काल में ही मुग़लों की अधीनता स्वीकार कर ली थी, लेकिन दक्षिण-भारत ने मुग़ल-बादशाह को कभी चैन से बैठने नहीं दिया। हालाँकि अकबर ने ही दक्षिण के मुसलमानी राज्य अहमदनगर पर कब्ज़ा कर लिया था, लेकिन वह राज्य बिलकुल नष्ट नहीं हो गया था। मलिक अम्बर ने अहमदनगर-राज्य को फिर मज़बूत बनाया। पर कई बार मुग़ल-सेना के शिकस्त खाने के बाद सन् १६२१ ई० में शाहजहाँ ने चढ़ाई करके उसे झुकने के लिए विवश कर दिया। पर फिर भी अहमदनगर-राज्य पूरी तरह नहीं दबा, जिससे तख़्तनशीन होने के बाद फिर शाहजहाँ को अहमदनगर पर चढ़ाई करनी पड़ी। कारण, अब की दक्षिण में बादशाह की ओर से लड़ने को गया हुआ सेनापति ख़ांजहां लोदी भी अहमदनगर के राजा से मिल गया था। सन् १६३० ई० में शाहजहाँ ने लोदी को हराकर उसे मरवाडाला। फिर भी अहमदनगर की सेना सात साल तक बराबर बादशाह का मुक़ाबिला करती रही। आख़िरकार सन् १६३७ ई० में अहमदनगर-राज्य का विध्वंस हो गया, बादशाह ने उसे अपने साम्राज्य में मिला लिया। शिवाजी के पिता शाहजी भोंसला अहमदनगर-राज्य के नौकर थे और उन्होंने [ उक्त राज्य को स्वतन्त्र बनाए रखने के लिए अन्त को बड़ी चेष्टा की, तो भी वह कुछ न कर सके। तब उन्होंने ] बादशाह से मिलकर, उससे मंज़ूरी लेकर बीजापुर-राज्य की नौकरी कर ली। बीजापुर-राज्य दक्षिण में एक बड़ा भारी मुसलमानी राज्य था और बीजापुर की सेना भी अहमदनगर की सेना से मिलकर मुग़ल-सेना से लड़ी थी। किन्तु बादशाह की सेना को अजेय जानकर सन् १६३६ ई० में बीजापुर ने बादशाह से सुलह कर ली और सालाना कर देना मंजूर कर लिया। इसके बदले में बादशाह ने बीजापुर के राजा को अहमदनगर-राज्य का कुछ हिस्सा भी दे दिया था। दक्षिण में तीसरी मुसलमानी रियासत गोलकुंडा की थी। इस रियासत को भी बादशाह से हारकर ख़िराज देने के लिए विवश होना पड़ा।

शिवाजी के उत्थान और उद्योग के समय दक्षिण-भारत की यही स्थिति थी। अब हम शिवाजी की संक्षिप्त जीवनी आगे लिखते हैं।

शिवाजी के पिता शाहजी भोंसला और माता जीजीबाई थीं। दक्षिण में ८ प्रसिद्ध महाराष्ट्रवंश हैं, उनमें भी भोंसलावंश की बड़ी प्रतिष्ठा है। शिवाजी उदयपुर के सीसोदियावंश में उत्पन्न हुए थे, यह बात एक मुसलमान इतिहास-लेखक ने भी लिखी है। स्व० रानाडे ने भी यही मत प्रकट किया है। भोंसला शब्द का क्या कारण या क्या अर्थ है, इस सम्बन्ध में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता।

दिल्ली में जिस समय पठानों की बादशाहत थी, उस समय उदयपुर के राजघराने में एक पुरुष का नाम शिवराम था। उनके तीन बेटे थे। दो युद्ध में मुसलमानों के हाथ मारे गए और तीसरा पुत्र (जिसका नाम भीमसिंह था) राज्य का अधिकारी हुआ। भीमसिंह का पुत्र विजयभानु हुआ। उसके पुत्र का नाम कर्णखेल था। मुसलमानों के आक्रमण से तंग आकर वह उदयपुर का राज्य छोड़कर दक्षिण को चले गए। वहां वह दौलताबाद के पास बेरूला गांव के भोंसला-दुर्ग में रहने लगे। उनके वंशधरों की भोंसला उपाधि इसी दुर्ग में रहने के कारण हुई।

कर्णखेल के जयकर्ण और उनके पुत्र महाकर्ण हुए। महाकर्ण के पुत्र शिवभीम हुए। सन् १५३१ ई० में उनके पुत्र शम्भाजी का जन्म हुआ। शम्भाजी के दो बेटे हुए, मल्लजी और विठोजी। मल्लजी सन् १५५२ ई० में उत्पन्न हुए थे। इनका ब्याह दीपाबाई से हुआ। शाह शरीफ़ नाम के एक महात्मा ने इन्हें पुत्र-प्राप्ति का आशीर्वाद दिया। इसीसे पुत्र उत्पन्न होने पर मल्लजी ने उसका नाम शाहजी रक्खा। शाहजी भोंसला बाल्यावस्था ही से बड़े होनहार देख पड़ते थे। वह बुद्धिमान्, वीर और युद्ध-विद्या में निपुण थे।

शाहजी की पत्नी जीजीबाई यादवराव लुकजी की कन्या थीं। मलजी को अहमदनगर के नवाब से, दी हुई सहायता के बदले में, चाकर और शिवनेर के क़िले और पूना व सूपा नाम के दो गाँव मिले थे। नवाब ने उन्हें राजा की उपाधि देकर भी सम्मानित किया था। मलजी के मरने पर शाहजी उनके उत्तराधिकारी हुए और पहले की जागीर को उन्होंने और भी बढ़ाया। शिवनेर के क़िले में ही शिवाजी का जन्म हुआ था। शाहजी ने दूसरा ब्याह भी कर लिया था। इससे खिन्न होकर जीजीबाई बालक शिवाजी के साथ पति से अलग रहने लगीं। सन् १६१७ में अहमदनगर-राज्य मुग़ल-सल्तनत में मिला लिया गया, इस कारण शाहजी ने बीजापुर-राज्य में नौकरी कर ली। शाहजी की नई स्त्री और बड़ा लड़का अलग रहे, और जीजीबाई शिवाजी को लेकर पूने में रहने लगीं। कुछ दिनों बाद शाहजी को कुहार, रूपकटी, बँगलौर, बालापुर और मीर के इलाक़े और बरार प्रान्त में २२ देहात की देशमुखी भी मिल गई। मतलब यह कि शाहजी की जागीर और इलाक़ा पहले से बहुत बढ़ गया।

शिवाजी के पिता शाहजी को बीजापुर के नवाब की ओर से कर्नाटक को बग़ावत के दमन करने के लिए जाना पड़ा था। उस समय वह शिवाजी की देखरेख और शिक्षा देने का काम अपने परम प्रिय और विश्वासी दादाजी कोनदेव को सौंप गए। यह आदमी विद्वान्, बुद्धिमान और एक अच्छा प्रबंधकर्ता था। दादाजी ने शाहजी की जागीर की अच्छी उन्नति की। पहाड़ी मावलों को, जो बड़े बहादुर और लड़ाकू थे, अपने अनुकूल बना लिया। इन मावलों की प्रसिद्ध सेना ने आगे चलकर युद्धों में शिवाजी की बड़ी सहायता की। शिवाजी को शिक्षा तो अधिक नहीं दी जा सकी, पर युद्ध-विद्या में दादाजी ने उन्हें यथेष्ट निपुण बना दिया। शिवाजी स्वभाव से ही साहसी, वीर और निर्भय थे, फिर उन्हें शिक्षक भी एक वैसा ही मनुष्य मिल गया। इससे वह बचपन ही में घोड़े की सवारी और तलवार का वार करने में बहुत दक्ष हो गए। निशाना साधने में भी लड़कपन ही से शिवाजी सिद्ध-हस्त थे। शिवाजी को उनकी माता और दादाजी ने लड़कपन ही से कुछ ऐसी शिक्षा दी, जिससे उनके हृदय में विधर्मी और हिन्दू-धर्म तथा हिन्दू-जाति पर अत्याचार करनेवाले मुसलमानों के प्रति द्वेष और घृणा का भाव बद्धमूल हो गया। इसके अलावा शिवाजी को बचपन ही से रामायण, महाभारत आदि की कथाएँ सुनने का शौक़ था। इन्हीं पुस्तकों की कथाओं का उन पर यह प्रभाव पड़ा था कि उन्हें यवनों से लड़कर उनके अत्याचारों से हिन्दू-धर्म और हिन्दू-जाति का उद्धार करने की धुन सवार हो गई। वह पहाड़ों और जंगलों में भी प्रायः अकेले ही घूमा करते थे।

शिवाजी ने होश सँभालते ही संगठन की ओर ध्यान दिया और उन्होंने बहुत से वीरों को जो यवनों के अत्याचार से तंग आकर उनके राज्यों में डाके आदि डाला करते थे, अपने दल में शामिल कर लिया। पहाड़ों और जंगलों में घूमते रहने से उनको उधर के दुर्गम मार्गों की भी अच्छी जानकारी प्राप्त हो गई थी। मतलब यह कि थोड़े ही दिनों में उन्होंने पहाड़ी डाकुओं के सरदारों और मावलों को एकत्र कर एक अच्छी सेना ही संगठित कर ली।

दादाजी ने शिवाजी को उनकी जागीर की देखभाल का काम पहले ही सौंप दिया था। अब वह उन्हें अपने साथ रखकर जागीर की प्रजा की दशा का निरीक्षण कराने लगे, जिससे शिवाजी को बहुत कुछ जानकारी हासिल हो गई। शिवाजी अपने धर्म के कट्टर अनुयायी थे और इसी कारण यवनों के अत्याचार से अपने धर्म की रक्षा करने का काम उन्होंने अपने जीवन का प्रधान लक्ष्य बनाया। फिर भी वह अन्य धर्मों से घृणा नहीं करते थे। यहाँ तक कि उन्होंने अपनी जान में अत्याचारी यवनों के धर्म पर भी कभी कोई आक्रमण नहीं होने दिया।

शिवाजी ने अपनी शक्ति तो बढ़ा ली थी, पर उनके पास कोई मज़बूत और अच्छा क़िला नहीं था। इसलिए वह इस फ़िक्र में थे कि कोई सुदृढ़ दुर्ग यवनों से पहले लेना चाहिए, जिसमें रहकर आत्मरक्षा की जा सके। पूना की जागीर में ऐसा कोई क़िला नहीं था। शिवाजी के मुख्य मंत्री उस समय तीन थे। एक देशमुख बाजी फसलकर और दो ज़मींदार, यशजी कंक तथा तानाजी मूलसरे। शिवाजी ने तोरण का क़िला लेने का विचार किया। यह क़िला बहुत मज़बूत समझा जाता था। पूने से २० ही मील पर दक्षिण-पश्चिम ओर था। इस क़िले में जाने की

राह बड़ी कठिन थी। मगर शिवाजी ने मावलों की मदद से इस क़िले में जाने की सब राहें मालूम कर लीं। यहाँ तक कि क़िलेदार को भी मिला लिया। सन् १६४६ ई० में बिना ख़ूनख़राबी किए ही यह मज़बूत क़िला शिवाजी के हाथ आ गया। इस क़िले की ख़ूबी यह थी कि यह एक ऐसी पहाड़ी पर था कि वहाँ से थोड़ी सी भी सेना बहुत बड़ी सेना का मुक़ाबला अच्छी तरह अर्से तक कर सकती थी। केवल १६ वर्ष की ही अवस्था में वीर और चतुर शिवाजी ने बीजापुर-राज्य का यह प्रसिद्ध क़िला अपने हाथ में कर लिया। क़िले में पहुँचते ही उन्होंने उसे और भी मज़बूत बना लिया, सेना भी बढ़ाना शुरू किया। क़िले में उन्हें सौभाग्यवश एक ख़ज़ाना भी मिल गया, जिससे इन्हें बड़ी सुविधा हुई। इन्होंने अपनी सेना भी और बढ़ा ली, अस्त्र शस्त्र भी अधिक ख़रीदना शुरू किया। साथ ही तोरण-दुर्ग से ३ ही मील के फ़ासले पर, महोबद पहाड़ी के ऊपर, इन्होंने रायगढ़ नाम का एक और बहुत मज़बूत क़िला बनवा लिया। शिवाजी की राजधानी अन्त तक यहीं रही। यह क़िला केवल एक साल में ही बनकर तैयार हो गया था।

शिवाजी की इस धृष्टता से बीजापुर के नवाब बहुत नाराज़ हुए। पर एक तो शिवाजी के पिता शाहजी उनके नौकर थे, दूसरे कर्नाटक की बग़ावत को दबाने में व्यस्त रहने के कारण नवाब ने शिवाजी पर चढ़ाई नहीं की। चतुर शिवाजी ने अपने आदमी से यह भी कहला भेजा था कि मैंने बीजापुर-राज्य की भलाई के ही लिए यह क़िला अपने अधिकार में कर लिया है। मेरे हाथ में रहने से यह और भी सुरक्षित रहेगा। नवाब ने चढ़ाई तो नहीं की, पर चितावनी अवश्य भेजी कि ऐसी हरकत आइन्दा न करना, नहीं तो तुम्हारे हक़ में अच्छा न होगा। शाहजी से भी नवाब ने जवाब तलब किया। शाहजी ने नवाब से तो कह दिया कि "मेरे पुत्र ने अवश्य ही यह काम मुझसे न पूछकर किया है; लेकिन मुझे विश्वास है कि उसने दरबार की इसी में भलाई समझकर ऐसा किया होगा। आप विश्वास रक्खें, मैं और मेरा परिवार कभी आपकी ख़ैरख़्वाही से मुँह नहीं मोड़ सकता।" परन्तु इधर दादाजी को पत्र लिखा, जिसमें शिवाजी के इस कार्य पर अप्रसन्नता प्रकट की। मगर शिवाजी ने इन बातों की कुछ परवा नहीं की और अपने उद्योग में लगे रहे।

इसी बीच में दादाजी कोनदेव की मृत्यु हो गई। वह मृत्यु के समय शिवाजी को यह उपदेश दे गए—"बेटा शिवा, तुम स्वतन्त्र होने की चेष्टा बराबर करते रहना। गऊ, ब्राह्मण और देव-मन्दिरों की रक्षा का भार तुम्हीं पर है। मुझे विश्वास है, तुम बड़े बड़े अद्भुत कार्य करोगे और संसार में बड़ा यश पाओगे।" दादाजी की मृत्यु से शिवाजी को बड़ा शोक हुआ परन्तु वह शोक से अधीर होकर बैठनेवाले नहीं थे। उन्होंने दादाजी की अन्तिम इच्छा को पूर्ण करने का उद्योग और ज़ोर-शोर से करना शुरू कर दिया। अब पूर्णरूप से अपनी जागीर उन्हें देखनी-भालनी पड़ी।

शिवाजी ने अपनी जागीर के सभी आदमियों को अपने वश में कर लिया था, केवल चाकनगढ़ का क़िलेदार फिरंगाजी और दूसरा सोपा-क़िले का अध्यक्ष बाजी मोहिते शिवाजी को न मानता था। ये दोनों बीजापुर-राज्य के पक्षपाती थे। इसी बीच में कोंडाने का क़िला, जो एक मुसलमान क़िलेदार के हाथ में था, शिवाजी को अनायास मिल गया। क़िलेदार ने घूस लेकर यह क़िला उन्हें सौंप दिया। यह क़िला बड़ा और बड़ा ही उपयोगी था। शिवाजी ने इसका नाम बदलकर "सिंहगढ़" रख दिया। इस क़िले के आसपास मावला जाति की बड़ी बस्ती थी। वे सब मावले शिवाजी के वशवर्ती हो गए। ये लोग साधारणतः खेती-बारी करते थे, पर ज़रूरत पड़ने पर युद्ध करने को उद्यत हो जाते थे। अंत को शिवाजी ने बाजीराव मोहिते को, रात के समय छापा मारकर, क़ैद कर लिया और कर्नाटक में अपने पिता के पास भेज दिया। यह शिवाजी का सौतेला मामा था।

इसके बाद शिवाजी ने पूना और बारामती के रास्ते में पड़नेवाले पुरन्धर के बड़े क़िले को भी हथिया लिया। इस गढ़ को लेने में भी उन्हें काफ़ी साहस और होशियारी से काम लेना पड़ा।

दो ही वर्ष के भीतर शिवाजी ने बीजापुर-राज्य की सीमा के कई क़िलों पर क़ब्ज़ा कर लिया। शिवाजी ने सेना और इलाक़ा बढ़ाने के साथ-ही-साथ अनेक विश्वासी जासूस भी मुक़र्रर कर दिए। शिवाजी को विश्वास था कि एक-न-एक दिन बीजापुर-राज्य से खुल्लमखुल्ला मुठभेड़ अवश्य होगी। इसलिए वह उधर से सदा होशियारी रखते थे,

और बीजापुर-दरबार की सब ख़बर उन्हें मिलती रहती थी। एक दिन, सन् १६४८ में, उन्हें ख़बर मिली कि बीजापुर-राज्य का बहुत-सा रुपया बीजापुर जा रहा है। यह धन कल्याण के सूबेदार मुल्ला अहमद ने भेजा था। शिवाजी ने चट निश्चय कर लिया कि यह ख़ज़ाना अवश्य लूट लेना चाहिए। कारण, इधर उन्होंने बीजापुर के कंगोरी, टोग, टिकोना, भोरुप, कारी, लोहगढ़ आदि कई क़िले ले लिए थे। उन्होंने उत्तर-कोंकण पर भी अधिकार जमाकर बहुत-सा धन हस्तगत कर लिया था। इसलिए आज नहीं, तो कल ज़रूर ही नवाब से लड़ाई होने की संभावना थी। शिवाजी ने वह ख़ज़ाना लूट लिया। शिवाजी के आदमी आवाजी सोनदेव ने कल्याण पर चढ़ाई कर दी और मुल्ला अहमद को क़ैद कर लिया। शिवाजी ने आवाजी को ही वहाँ का सूबेदार बना दिया। शिवाजी ने मुल्ला को सत्कार-पूर्वक छोड़ दिया। उसने बीजापुर जाकर नवाब से सब हाल कहा। नवाब को शक हुआ कि ये सब काम शिवाजी अपने पिता शाहजी के कहने से कर रहे हैं। पर इधर शिवाजी की धाक जम चुकी थी और उधर शाहजी का भी कर्नाटक में बड़ा ज़ोर था, इसलिए वह खुल्लमखुल्ला शिवाजी पर चढ़ाई करने का साहस न कर सका। उसने पहले शाहजी को ही क़ैद करने का विचार किया। उसकी इस इच्छा को घोरपड़े नाम के एक मराठे ने पूरा किया और धोखा देकर शाहजी को क़ैद कर लिया। नवाब ने शाहजी की एक भी सफ़ाई न मानकर उन्हें कालकोठरी में बंद करा दिया और हवा आने-जाने के लिए उसमें केवल एक छेद रक्खा।

अब शिवाजी बड़े चिन्तित हुए। अन्त को बीजापुर के ब्राह्मण मंत्री मुरारि पंत की सहायता से वह अपने पिता को मुक्त करा सके। शाहजी फिर कर्नाटक की अशान्ति को दबाने के लिए वहाँ भेजे गए। जब शिवाजी किसी तरह अपनी हरकतों से बाज़ न आए तब बीजापुर के नवाब ने शिवाजी को गिरफ़्तार कराने का विचार किया। बाजी शामराजी नाम के एक व्यक्ति ने शिवाजी को गिरफ़्तार करने का बीड़ा उठाया। पर अन्त को शिवाजी ने एक रात को उसकी सेना पर धावा कर दिया। शामराजी जान लेकर भागा। इस उद्योग में जावली के जागीरदार चन्द्रराव ने भी गुप्त रूप से शामराजी को मदद की थी। शिवाजी ने चन्द्रराव को अपने अनुकूल बनाने की बड़ी चेष्टा की, मगर वह किसी तरह राज़ी नहीं हुआ। उसके पास सैन्यबल काफ़ी होने के कारण खुल्लमखुल्ला उसे दबाना असंभव था, इसलिए शिवाजी ने रघुबल्लाल नाम के एक विश्वासी अनुचर को कुछ मावली सेना के साथ फिर चन्द्रराव को समझाने के लिए भेजा। रघुबल्लाल ने जब देखा कि चन्द्रराव किसी तरह नहीं मानता, तो उस स्वामिभक्त ने बातचीत करते समय चन्द्रदेव और उसके सगे भाई को मार डाला। यह काम रघुबल्लाल ने अपनी इच्छा से ही किया था। यह ख़बर पाकर शिवाजी ने जावली पर चढ़ाई कर दी। चन्द्रराव के मंत्री ने बहुत घोर युद्ध किया; पर अंत को वह मारा गया। शिवाजी ने जावली-दुर्ग पर अधिकार करके बसोता का क़िला भी अपने अधिकार में कर लिया। अब शिवाजी की शक्ति बहुत अधिक हो गई।

पास ही रोहिरा नाम का एक सुदृढ़ दुर्ग था। इसका मालिक बंदल था, जो कि चन्द्रराव का घनिष्ठ मित्र और बड़ा वीर था। शिवाजी ने इस गढ़ पर चढ़ाई कर दी। बंदल तो मारा गया, पर उसका मददगार बाजीप्रभु देशपाण्डेय बराबर लड़ता रहा। अन्त को शिवाजी के समझाने से उस वीर ने आत्म-समर्पण कर दिया, और शिवाजी ने उस वीरचूड़ामणि को अपनी सेना के एक बहुत बड़े अंश का सेनापति बना दिया। शिवाजी ने इन नवविजित प्रदेशों के सुप्रबन्ध के लिए कृष्णा नदी के किनारे पहाड़ की चोटी पर प्रतापगढ़ नाम का क़िला बनवाया। यहाँ का प्रबन्ध शिवाजी ने अपने मंत्री श्यामराजे पंत को सौंपा और आगे चलकर पंत को पेशवा की उच्च उपाधि देकर सम्मानित किया।

मुग़ल-बादशाहों की नीति यह थी कि दक्षिण की मुसलमानी रियासतों को अपने अधीन करके वहाँ अपना राज्य सुदृढ़ कर लिया जाय। अहमदनगर तो किसी तरह क़ब्ज़े में आ गया था, पर बीजापुर और गोलकुंडा की रियासतें कुछ कर बादशाह को देने पर भी बहुत अंशों में स्वतंत्र बनी हुई थीं। सन् १६५५ ई० में औरंगज़ेब दक्षिण का सूबेदार होकर गया। औरंगज़ेब ने गोलकुंडा के नवाब क़ुतुबशाह पर आक्रमण कर दिया और इसमें भी उसने अपनी प्रसिद्ध दग़ाबाज़ी से काम लिया। क़ुतुबशाह धोखे में आकर हार गया। उसका मंत्री मीर-जुमला दिल्ली पहुँचाया गया। वहाँ उसे मंत्री का पद मिला। इधर बीजापुर के नवाब मर गए। बीजापुर को भी हारकर संधि करनी पड़ी।

इसी बीच में प्रसिद्ध कूटनीतिज्ञ औरंगज़ेब ने बाप को क़ैद कर लिया। बड़े भाई दारा और मुराद को मरवा डाला। छोटा भाई शुजा भी औरंगज़ेब से हारकर आराकान के राजा की शरण में गया और वहाँ से उसका कुछ पता न चला। अब औरंगज़ेब ख़ुद बादशाह बन बैठा। उसका राज्य निष्कंटक हो गया; क्योंकि उसने राज्य के अधिकारी सभी भाई-भतीजों को नष्ट कर दिया था। औरंगज़ेब के राज्य में हिन्दुओं पर अधिकाधिक अत्याचार होने लगे। उधर शिवाजी का बल काफ़ी बढ़ गया था। उन्होंने सोचा कि औरंगज़ेब अवश्य उन पर आक्रमण करेगा। इसलिए उन्होंने ही पहले मुग़ल-प्रान्त पर अधिकार जमाना शुरू कर दिया। मई, सन् १६५७ में एक दिन रात्रि के समय शिवाजी की मावलों की सेना ने जूनारगढ़ को लूट लिया। इस लूट में बहुत-सी सम्पत्ति और अच्छे घोड़े शिवाजी के हाथ लगे। यहाँ से शिवाजी ने एक दुर्गम मार्ग होकर अहमदनगर पर धावा कर दिया और उसे भी लूटना शुरू किया। फिर पीढ़ा गाँव में मुग़लों की सेना को परास्त कर शिवाजी पूना पहुँचे। यहाँ उन्होंने अपनी सेना बढ़ाई। नेताजी पालकर की मातहती में बारगीर और सिलेदार नाम की दो नई सेनाएँ तैयार कीं।

पर चतुर शिवाजी ने अभी अपनी शक्ति इतनी नहीं समझी कि वह औरंगज़ेब जैसे शक्तिशाली बादशाह का सामना कर सके, इसलिए स्वयं सन्धि का प्रस्ताव किया। इसका एक कारण यह भी था कि शिवाजी से अपनी रक्षा के लिए बीजापुर का नवाब भी औरंगज़ेब से सन्धि की बातचीत कर रहा था। शिवाजी के दूत कृष्णाजी भास्कर ने औरंगज़ेब के आगे शिवाजी का यह प्रस्ताव रक्खा कि अगर मेरी जागीर और देशमुख-पद बादशाह मुझे वापस दे दें तो मैं बादशाह के दक्षिण के सूबों की रक्षा का भार अपने ऊपर लेने को तैयार हूँ। कृष्णाजी ने यह भी कहा कि बीजापुर का कोंकण प्रदेश सुरक्षित नहीं है। वह अगर शिवाजी को सौंप दीजिए तो आपके साम्राज्य को बड़ा लाभ होगा। औरंगज़ेब ने यह प्रस्ताव मंज़ूर कर लिया।

शिवाजी को पकड़ लाने का बीड़ा उठाकर बीजापुर के पठान अफ़ज़लख़ाँ ने अगस्त, सन् १६०१ में ५००० सवार और ७००० पैदल सेना लेकर चढ़ाई कर दी। यह योद्धा प्रौढ़ अवस्था में भी बड़ा बली था। शिवाजी भी तैयारी करके प्रतापगढ़ क़िले में रहकर ख़ाँ का मुक़ाबला करने को तैयार हुए। अफ़ज़लख़ाँ पुरंधरगढ़ की ओर रवाना हुआ और उसने रास्ते में हिंदुओं पर बड़े अत्याचार किए। मंदिर और मूर्त्तियाँ तोड़ी गईं, गाँवों में आग लगा दी गई और यह सब शिवाजी की प्रजा पर आतंक जमाने के लिए किया गया। ख़ाँ पंढरपुर पहुँच गया।

मुसलमान इतिहास-लेखक शिवाजी पर विश्वासघात का दोष लगाते हैं। उनका लिखना है कि शिवाजी ने ख़ाँ के पास अपना दूत भेजकर लड़ने में असमर्थता प्रकट करते हुए बीजापुर-राज्य से क्षमा माँगी और सन्धि का प्रस्ताव किया। अंत को ख़ाँ के विश्वास कर लेने पर उन्होंने मुलाक़ात के समय पेट फाड़कर उसे मार डाला। किन्तु मराठे इतिहास-लेखक यह लिखते हैं कि शिवाजी को धोखा देकर पकड़ लेने के इरादे से ख़ाँ ने गोपीनाथ पंत को उनके पास भेजा था। पंत ने जाकर शिवाजी से कहा—बीजापुर के नवाब चाहते हैं कि आप शत्रुता न करके मित्र बन जाएँ। नवाब आप ही को कोंकण प्रदेश की जागीर देने के लिए तैयार हैं। शिवाजी ने ख़ाँ का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। तब पंत ने कहा—ख़ाँ साहब से आप एक बार मिल लीजिए। शिवाजी बड़े चतुर थे। उन्हें ख़ाँ पर संदेह हो गया। ख़ैर, उन्होंने रात को अकेले पंत के पास जाकर हिंदुओं पर होनेवाले यवनों के अत्याचार और अपने धर्मरक्षा के विचार का उल्लेख करके पंत पर ऐसा प्रभाव डाला कि उसने ख़ाँ साहब का असली मंशा शिवाजी पर प्रकट कर दिया।

दूसरे दिन शिवाजी ने कृष्णाजी भास्कर को सुलह की शर्तें तय करने और मिलने का स्थान निश्चित करने को भेजा। उसके बाद अपनी विश्वस्त सेना को आसपास ठहराकर आप कपड़ों के नीचे लोहे का कवच पहनकर और बघनखा नाम का एक छोटा हथियार छिपाकर ख़ाँ से मिलने चले। शिवाजी अकेले ही अफ़ज़लख़ाँ के तंबू में गए। ख़ाँ ने गले लगाने के बहाने उन्हें अपने क़ब्ज़े में करना चाहा, इसी समय शिवाजी ने अपने बघनखे से ख़ाँ का पेट फाड़ डाला। आत्मरक्षा के लिए ही शिवाजी ने अफ़ज़लख़ाँ को मारा था और ख़ाँ ने ही विश्वासघात करने की ठानी थी, इसका समर्थन प्रो० यदुनाथ सरकार ने भी किया है। अफ़ज़ल के वध का उल्लेख भूषण ने अनेक छन्दों में किया है। अफ़ज़लख़ाँ के मारे जाने से बीजापुर के नवाब पर शिवाजी का पूरा आतंक छा गया।

कुछ दिन के उपरान्त शिवाजी ने पन्हालागढ़ ले लिया ! फिर दिसंबर, सन् १६५९ में कोल्हापुर पर भी शिवाजी का अधिकार हो गया। हबशी शीदी जौहर ने अफ़ज़लख़ाँ से भी अधिक सेना लेकर बीजापुर की ओर से शिवाजी पर चढ़ाई की। इसे सलाबतख़ाँ की उपाधि इसी समय नवाब ने दी। शीदी से युद्ध करने का भार रघुनाथ पंत को सौंपा गया। आबाजी सोनदेव और कल्याण भीमरोकर अन्य गढ़ों की रक्षा करने लगे। पुरंधर-गढ़, सिंहगढ़ तथा प्रतापगढ़ वीरवर मोरो पंत की देखरेख में रहे और शिवाजी पन्हालागढ़ में ठहरे। शीदी को शिवाजी का भेद मिल गया और उसने पन्हालागढ़ पर घेरा डाल दिया।

चार महीने तक वह क़िले को घेरे रहा। अंत को शिवाजी ने उस गढ़ को छोड़ देना ही उचित समझा। शिवाजी तो निकल गए, पर इस घमासान युद्ध में स्वामिभक्त वीर बाजीप्रभु अद्भुत पराक्रम दिखाकर स्वर्ग-वासी हुए। वह अपनी सेना से कहीं अधिक शत्रुसेना को तब तक रोके रहे, जब तक शिवाजी सकुशल रांगना-दुर्ग नहीं पहुँचे।

इस बार भी मनोरथ सफल न होने पर एक वर्ष बाद, सन् १६६१ में, बीजापुर के नवाब ने ख़ुद शिवाजी पर चढ़ाई की। पर शिवाजी इस फुर्ती के साथ बहुत दूर तक फैली हुई नवाब की सेना पर कभी आगे से, कभी पीछे से और कभी अग़ल-बग़ल से हमला करने लगे कि नवाब के छक्के छूट गए। अन्त में नवाब को हार मानकर शिवाजी से मेल कर लेना पड़ा; क्योंकि इसी में उसने अपना कल्याण समझा।

इसके बाद शिवाजी ने अपनी शक्ति और भी बढ़ाकर औरंगज़ेब का मानमर्दन करने की सोची। जब शिवाजी के सेनापति नेताजी पालकर औरंगाबाद ( यह दक्षिण में मुग़लों की राजधानी थी ) तक लूट मचाकर पूना वापस आए, तो यह समाचार पाकर औरंगज़ेब बहुत विचलित और कुपित हुआ। उसकी आज्ञा से शाइस्ताख़ाँ ने शिवाजी पर चढ़ाई कर दी। पूना और चाकन के क़िले शाइस्ताख़ाँ ने अपने कब्ज़े में कर लिए और वहीं मुग़ल-सेना का अड्डा बनाया। चाकनगढ़ लेने में शाइस्ताख़ाँ को जो मुसीबत उठानी पड़ी, उसी से वह मराठों के पराक्रम का परिचय पा गया। इसी बीच में राजा जसवन्तसिंह ( जोधपुर-नरेश ) को भी राजपूत सेना के साथ शिवाजी पर आक्रमण करने के लिए भेजा गया।

हिंदुओं से हिंदुओं का विनाश कराने की बादशाह की चाल को व्यर्थ करने के लिए एक दिन साहसी शिवाजी गुप्त रूप से जसवन्तसिंह के डेरे में दाख़िल हुए। उन्होंने राजा जसवन्तसिंह को बादशाह की अनीति और हिंदुओं पर अत्याचार करने की चाल अच्छी तरह समझाई और प्रार्थना की कि आप इस समय तटस्थ रहें। जसवन्तसिंह इस पर राज़ी हो गए।

शाइस्ताख़ाँ ने इस बात का कड़ा प्रबन्ध कर रक्खा था कि शिवाजी पूने में न आ सकें; पर चतुर शिवाजी एक बरात के साथ छिपकर पूने में पहुँच ही गए। बरात आगे चली गई और शिवाजी गढ़ के पास अंधकार में अपने आदमियों के साथ छिप रहे। रात को जब क़िले में सब सो गए, तब मावलों की सहायता से एक खिड़की की राह शिवाजी और उनके आदमी गढ़ के भीतर पहुँच गए। शिवाजी की सेना जब शाइस्ताख़ाँ के रहने के मकान में घुसी, तब खटके से जगहट हो गई और शाइस्ताख़ाँ ने जब शिवाजी के सैनिकों को अपने डेरे में देखा और अपनी सेना को अचेत तथा अपने को असहाय पाया तो वह खिड़की से फाँदकर भाग खड़ा हुआ। फिर भी वह कोरा नहीं गया, उसके हाथ की दो उँगलियाँ तलवार की चोट से कटकर वहीं रह गईं।

शिवाजी के जिन क़िलों को मुग़ल-सेना ने इधर ले लिया था, उन पर शिवाजी फिर धीरे-धीरे अपना अधिकार जमाने लगे। सूरत का बंदरगाह उस समय समुद्री व्यापार का बड़ा भारी अड्डा था। जनवरी, सन् १६६४ में ४००० सवार लेकर शिवाजी सूरत पर चढ़ गए और ६ दिन तक उसे ख़ूब लूटा। सूरत में अँगरेज़ और डच लोगों की आबादी थी। उनकी रक्षा सर जार्ज आक्सेनडेन नाम के अँगरेज़ ने बड़ी मुश्किल से की। शिवाजी ने सूरत को दो बार लूटा। इसी बीच में शिवाजी के पिता की मृत्यु हो गई। बँगलौर के आसपास शाहजी की जो बड़ी सी जागीर थी, वह भी अब शिवाजी के अधिकार में आ गई।

अब की औरंगज़ेब ने जयपुर के वीर राजा जयसिंह को शिवाजी का दमन करने के लिए भेजा। उनके साथ ही मुग़ल-सेनापति वीर दिलेरख़ाँ भी अपनी सेना-सहित था। इधर शिवाजी समुद्री बेड़े की सहायता से वार्सलोबा

आदि को लूटकर लौटे, तो इधर यह रंग देखा। शिवाजी बड़े असमंजस में पड़ गए। एक तो जयसिंह की राजपूत सेना को परास्त करना बहुत ही कठिन काम था, दूसरे शिवाजी हिंदुओं के हाथ से हिंदुओं की शक्ति का क्षय उचित नहीं समझते थे।

उन्होंने अपने विश्वस्त मंत्री रघुनाथ पंत को भेजकर जयसिंह के आगे सन्धि का प्रस्ताव उपस्थित किया। राजा जयसिंह ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। शिवाजी ने स्वयं जयसिंह से मिलकर इस विषय में बातचीत की। जयसिंह ने विश्वास दिलाया कि मेरे रहते बादशाह आपके साथ कोई बुरा व्यवहार नहीं करेंगे। सुलह हुई और उसकी शर्तों के अनुसार शिवाजी ने पैंतीस क़िले ( जो मुग़लों के छीन लिए थे ) बादशाह को वापस कर दिए। भूषण ने अपने ग्रंथ में इस घटना का उल्लेख किया है। सुलह होने के बाद शिवाजी ने बीजापुर पर चढ़ाई करने में राजा जयसिंह को अच्छी मदद दी थी।

भूषण ने औरंगज़ेब से शिवाजी की भेंट का उल्लेख अपने ग्रंथ के ११ छंदों में किया है। इसी तरह अफ़ज़लख़ाँ, शाइस्ताख़ाँ, बहलोलख़ाँ तथा सालेरी आदि के भीषण युद्धों का भी उल्लेख उन्होंने अनेक छंदों में किया है। भूषण ने बादशाह से शिवाजी की भेंट आगरे में होने का उल्लेख किया है। बखर-ग्रंथों में देहली में यह भेंट होना लिखा है। पर औरंगज़ेबनामे और शिवाजी-शिवकाल ग्रंथ से मालूम होता है कि भेंट आगरे में ही हुई होगी। औरंगजेब नामे से यह प्रमाणित है कि भेंट के समय से तीन महीने पहले ही औरंगज़ेब आगरे चला आया था। यथा—

"७ फ़रवरी, सन् १६६६ को बादशाह जमना में होकर आगरे पहुँचे। मसलहत देखकर कुछ दिनों के लिए वहीं रहे और बेगमों को देहली से बुला लिया।"

( औरंगज़ेबनामा, पृष्ठ ६२ )

"इस समय दरबार आगरे में होते थे और शिवाजी ता० ९, सन् १६६६ को आगरे पहुँचे।"

( शिवाजी—शिवकाल पृष्ठ १७६ )

यही बात भूषण ने निम्नलिखित छन्दांश में कही है—

"आवत गुसलखाने ऐसे कछु त्यौर ठाने,
जाने अवरंगजू कि प्रानन को लेवा है।
रस-खोट भए ते अगोट आगरे में सातौ,
चौकी डाँकि आनि घर कीन्हीं हद्दरेवा है॥"

बीजापुर विजय में शिवाजी की सहायता से सन्तुष्ट होकर जयसिंह ने बादशाह से यह सिफ़ारिश की थी कि वह शिवाजी का सम्मान करें। बादशाह ने इसे स्वीकार किया। कारण, इससे पहले भी बादशाह शिवाजी से मिलने का इरादा ज़ाहिर कर चुका था। बादशाह ने पत्र के साथ ही एक बहुमूल्य पोशाक भी शिवाजी के लिए भेजी थी।

शिवाजी ५०० सवार और १००० पैदल सेना लेकर बादशाह से मिलने गए। वहाँ दरबार में ( जिस दिन बादशाह की पचासवीं सालगिरह का उत्सव था ) शिवाजी जब पहुँचे, तो औरंगज़ेब का उन्होंने विशेष कुछ अदब नहीं किया। औरंगज़ेबनामे में तो लिखा है कि शिवाजी ने ज़मीन चूमकर डेढ़ हज़ार अशर्फ़ियाँ नज़र दीं और ६००० रुपए निछावर किए; किन्तु भूषणजी लिखते हैं—

"नायो न माथहि दक्खिननाथ,
न साथ मैं फौज न हाथ हथ्यारो।"
"ठान्यो ना सलाम, भान्यो साहि को इलाम...."
"प्रगट करी रिस साह को सरजा करि न सलाम।"
"जानि गैरमिसिल गुसीले गुसा धारि उर,
कीन्हो ना सलाम ना बचन कहे सियरे।"

इसमें संदेह नहीं कि जब बादशाह ने जहज़ारी मनसबदारों के पास खड़े कराकर शिवाजी का अपमान करना

चाहा, तब शिवाजी ने भी सलाम आदि कुछ न करके उसका अपमान किया। यह भेंट यहीं ख़तम हो गई और शिवाजी राजधानी में एक तरह से कड़े पहरे में नज़रबंद रहने लगे।

इसके बाद एक बार गुसलखाने में भी बादशाह ने शिवाजी से मुलाक़ात की थी। इस भेंट का वर्णन भूषणजी ने निम्नलिखित छंद में इस प्रकार किया है—

"कैयक हजार जहाँ गुर्जबरदार ठाढ़े,
करिकै हुस्यार नीति पकरि समाज की।
राजा जसवन्त को बुलाय कै निकट राखो,
तेऊ लखैं नीरे जिन्हें लाज स्वामिकाज की॥
भूषन तबहुँ ठठकत ही गुसलखाने
सिंह लौं झपट गुनि साहि महराज की।
हटकि हथ्यार फड़ बाँधि उमरायन की,
कीन्ही तब नौरँग ने भेंट सिवराज की॥"

और पूर्वोक्त पहली भेंट के वर्णन के सिलसिले में महाकवि भूषण लिखते हैं—

"सबन के ऊपर ही ठाढ़े रहिबे के जोग,
ताहि ठाढ़ो कियो जाय जारिन के नियरे।
जानि गैरमिसिल गुसीले गुसा धारि उर
कीन्हो ना सलाम ना बचन कहे सियरे॥
भूषन भनत महावीर बलकन लागो
सारी बादसाही के उड़ाय गये जियरे।
तमक ते लाल मुख सिवा को निरखि भए
स्याह मुख नौरँग सिपाह मुख पियरे॥"

इसमें संदेह नहीं कि महाकवि की इस उक्ति में सत्य का अंश अधिक है। अस्तु! शिवाजी समझ गए कि अब की वह बुरे फँस गए हैं।

चतुर शिवाजी सम्भवतः राजा जयसिंह के पुत्र रामसिंह की सलाह लेकर राजधानी में बीमारी का बहाना कर चारपाई पर पड़ गए। बादशाह को दिन-दिन यही ख़बर दी जाने लगी कि शिवाजी को सख़्त बीमारी है। कुछ समय के उपरान्त शिवाजी के आरोग्य होने की ख़बर बादशाह को पहुँचाई गई। शिवाजी आराम होने की ख़ुशी में वज़ीरों, सरदारों आदि के पास तथा मंदिरों व मसज़िदों में ख़ैरात करने के लिए बड़े-बड़े पिटारों में भरकर मिठाई भेजने लगे। एक दिन मौक़ा पाकर वह अपने लड़के शम्भाजी के साथ दो पिटारों में अलग-अलग बैठकर राजधानी के बाहर निकल गए। शिकार हाथ से निकल गया, किसी को कानोकान ख़बर नहीं हुई। शहर के बाहर तानाजी ने ( जो हकीम के वेष में शिवाजी से मिलकर सब ठीक कर गए थे ) घोड़ों का प्रबन्ध कर रक्खा था। घोड़ों पर बैठकर वेष बदले हुए शिवाजी दूर निकल गए।

भूषण ने भागने के उपाय का वर्णन तो नहीं किया, लेकिन भाग जाने का वर्णन किया है। यथा—

"घिरे रहे घाट और बाट सब घिरे रहे,
बरस दिना की गैल छिन माहिं छ्वै गयो।
ठौर ठौर चौकी ठाढ़ी रहीं सब स्वारन की,
मीर उमरावन के बीच ह्वै चलै गयो॥
देखै में न आयो ऐसे कौन जानै कैसे गयो,
दिल्ली कर मीड़े कर भारत कितै गयो।
सारी पातसाही के सिपाही सेवा सेवा करैं,
परो रह्यो पलँग परेवा सेवा ह्वै गयो॥"

जयराम कवि, जो शिवाजी के समकालीन थे, उन्होंने संस्कृत में, 'पर्णालपर्वत-ग्रहणाख्यान'-नामक शिवाजी-सम्बन्धी काव्य लिखा है। वह भी उसमें ठीक यही उपमा देते हैं—

द्रष्टव्यं स्वामिभिस्तत्र कियद्यत्नेन रक्षितः।
तथापि पक्षिवत्तूर्णं पुत्रेण सह निर्गतः॥

इस प्रकार शिवाजी के हाथ से निकल जाने पर कपटी औरंगज़ेब को बड़ा क्षोभ हुआ, पर अब वह कर ही क्या सकता था।

इधर शिवाजी ने रायगढ़ पहुँचकर बादशाह से युद्ध छेड़ दिया। पहले सन्धि के समय जो क़िले उन्होंने राजा जयसिंह को दे दिए थे, वे सब धीरे-धीरे अब हथियाने लगे। राजा जयसिंह का देहान्त हो चुकने के कारण शिवाजी को और भी सहूलियत हो गई। जसवन्तसिंह और शाहज़ादा मोअज़्ज़म ने दक्षिण पर चढ़ाई की भी तो वे शिवाजी का कुछ बिगाड़ नहीं सके। औरंगज़ेब की भी हिम्मत हार गई। अंत को उसने शिवाजी को एक स्वतन्त्र राजा मान लिया और सनद भी भेज दी। जूनारगढ़ और अहमदनगर के सिवा बरार में भी एक जागीर शिवाजी को बादशाह से मिली।

पर औरंगज़ेब तो बड़ा छली था। उसने सन् १६६९ में फिर अपने पुत्र को लिखा कि शिवाजी को जिस तरह हो, क़ैद करना चाहिए। पर यह ख़बर शिवाजी को लग गई और वह फिर बादशाह के विरुद्ध हो गए। सन् १६७० में शिवाजी ने फिर मुग़लों से युद्ध ठान दिया। सिंहगढ़ नाम का क़िला शिवाजी के हाथ अब तक नहीं आया था। मेवाड़ का निकाला हुआ उदयभानु नाम का सरदार बादशाह की ओर से इस क़िले का अधीश्वर या रक्षक था। सिंहगढ़ यों ही अजेय क़िला था, उस पर वीर उदयभानु उसका रक्षक था। परन्तु शिवाजी मावला वीरों के साथ उस क़िले पर चढ़ ही गए। रस्सी की सीढ़ियाँ लगाकर रात को वीर तानाजी ३०० वीरों के साथ क़िले पर चढ़ गए, घोर युद्ध हुआ। तानाजी मारे गए। उदयभानु भी मारा गया। क़िला शिवाजी के अधिकार में आ गया। पर तानाजी की मृत्यु से शिवाजी को बड़ा घोर दुःख हुआ।

इस तरह बीजापुर, गोलकुंडा और दिल्लीश्वर बादशाह औरंगज़ेब को शिवाजी ने अपने प्रबल पराक्रम, चातुरी और साहस से परास्त कर एक प्रबल हिंदू-राज्य स्थापित किया। सन् १६७४ में जेठ सुदि १३, बृहस्पतिवार को रायगढ़ में शिवाजी का यथाविधि राजतिलक हुआ और उनका उपाधि-सहित नाम "छत्रपति महाराज शिवाजी भोंसले" हुआ। इस अभिषेक में भिन्न-भिन्न राज्यों के प्रतिनिधि आए थे। सूरत के अँगरेज़ प्रेसीडेंट ने भी अपना प्रतिनिधि भेजा था, जिसने शिवाजी को भेंट दी थी।

इसी समय तक की घटनाओं को लेकर भूषण ने इस "शिवराज-भूषण" ग्रंथ की रचना की है।

सन् १६८० के अप्रैल में, ५ ता० को, ५३ वर्ष की आयु में, शिवाजी स्वर्गवासी हुए।

भूषण कवि-कृत

# शिवराज-भूषण

## भाषाटीकासहित

### मंगलाचरण

कवित्त

बिकट अपार भव-पंथ के चले को स्रम हरन करन बिजना से ब्रह्म ध्याइए। यहि लोक परलोक सुफल करन कोकनद से चरन हिए आनिकै जुड़ाइए॥ अलिकुल कलित कपोल ध्यान ललित अनन्दरूप सरित में भूषन अन्हाइए। पापतरुभंजन बिघनगढ़गंजन जगतमन-रंजन दुरदमुख गाइए॥ १॥

संसार-मार्ग के चलने की अपार थकावट को जो हरनेवाले हैं, जिनके कान व्यजन यानी पंखे के समान हैं, ऐसे ब्रह्मरूप जो गणेश हैं, उनका ध्यान करता हूँ। इस लोक और परलोक को सुफल बनानेवाले या सफल करनेवाले लाल कमल के समान जो गणेशजी के चरण हैं, उन्हें हृदय में स्थापित करके हृदय को शीतल करता हूँ। जिनके कपोलों पर (मदजल की महक के लालच से) भौंरों के झुंड बने रहते हैं, जिनका ध्यान ललित अर्थात् सुन्दर है, उसको करके, हे भूषण (कवि), आनन्द-रूप नदी में नहाइए। पाप के पेड़ों को तोड़नेवाले, विघ्न के गढ़ को गिरानेवाले, जगत का मनोरंजन करनेवाले द्विरदमुख (गजानन) को गाइए, अर्थात् उनके गुणों का कीर्तन करता हूँ—उन्हें मनाता हूँ॥ १॥

## उपोद्घात

छप्पै

जय जयंति जय आदिसक्ति जय कालि कपर्दिनि।
जय मधुकैटभछलनि देवि जय महिषबिमर्दिनि॥
जय चमुण्ड जय चण्ड मुण्ड भण्डासुरखण्डिनि।
जय सुरक्त जय रक्तबीज बिड्डालबिहण्डिनि॥
जय जय निसुंभ सुंभद्दलनि भनि भूषन जय जय भननि।
सरजा समत्थ सिवराज कहँ देहि बिजय जय जगजननि॥२॥

हे जयन्ती (दुर्गा का एक नाम), तुम्हारी जय हो। हे आदिशक्ति, तुम्हारी जय हो। हे काली, हे कपर्दिनी, अर्थात् जटाजूट धारण करनेवाली, तुम्हारी जय हो। हे मधुकैटभ को छल करके बहँकानेवाली, हे महिषासुर का मर्दन करनेवाली, तुम्हारी जय हो। हे चामुण्डा, हे चंड, हे मुंड और भंडासुर को मारनेवाली, तुम्हारी जय हो। हे रक्त वर्णवाली, रक्तबीज और विड़ाल नाम के असुरों का विनाश करनेवाली, तुम्हारी जय हो। भूषण कहता है कि हे निशुंभ और शुंभ नाम के दानवों का दलन करनेवाली, तुम्हारी जय हो, जय हो। सरजा (शिवराज की एक पदवी, जो शुद्ध शब्द सरजाह है) और समर्थ शिवराज को हे जगज्जननी, विजय दो॥ २॥

दोहा

तरनि जगत जलनिधितरनि जै जै आनँद ओक।
कोक कोकनद सोकहर लोक लोक आलोक॥ ३॥

हे तरणि (सूर्यदेव), आप जगत्-सागर के पार पहुँचानेवाली तरणी (नाव) हैं। आनंद की खान हैं, कोक (चकई-चकवा पक्षी, जो रात को बिछड़े रहते हैं) और कोकनद (लाल कमल) के शोक को हरनेवाले और लोक-लोक में आलोक (प्रकाश) के फैलानेवाले हैं। आपकी जय हो, जय हो॥ ३॥

## राजवंश-वर्णन

राजत है दिनराज को बंस अवनि अवतंस।
जामें पुनि पुनि अवतरे कंसमथन प्रभु अंस॥ ४॥

पृथ्वी को अलंकृत करनेवाला सूर्य का वंश पृथ्वी पर विराजमान है, जिसमें पुनि पुनि (पुनः पुनः=बार-बार) कंस के मारनेवाले ईश्वर के अवतार श्रीकृष्णजी ने जन्म लिया॥ ४॥

महाबीर ता बंस में भयो एक अवनीस।
लियो बिरद सीसोदिया दियो ईस को सीस॥ ५॥

उस वंश में महावीर एक राजा उत्पन्न हुए, जिन्होंने सीसोदिया पदवी ग्रहण की ( यह वंश क्षत्रियों में महामाननीय हुआ। महाराणा प्रतापसिंह और राणा राजसिंह इसी कुल में उत्पन्न हुए थे )। इन्होंने अपना शिर ईश ( महादेव ) को अर्पण किया॥ ५॥

ता कुल में नृपबृन्द सब उपजे बखतबुलंद।
भूमिपाल तिनमें भयो बड़ो मालमकरन्द॥ ६॥

इस कुल में जो राजा पैदा हुए, वे सब भाग्यशाली हुए। उनमें बहुत बड़े राजा "मालमकरंद" उत्पन्न हुए ( इनको मालोजी कहा जाता है )॥ ६॥

सदा दान किरवान में जाके आनन अम्भु।
साहि निजाम सखा भयो दुग्ग देवगिरि खम्भु॥ ७॥

उनके दान में, कृपाण ( तलवार ) पर और मुख पर सदा पानी ( आब ) रहता था। शाह निजाम के वह मित्र हुए। वह देवगिरि नाम के क़िले के खंभ थे॥ ७॥

ताते सरजा बिरद भो सोभित सिंह प्रमान।
रन-भू-सिला सु भौंसिला आयुषमान खुमान॥ ८॥

इसी से उनकी पदवी सरजा ( सरजाह ) हुई। वह सिंह के समान रोबीले थे। वह रण-भूमि में शिला के समान अटल रहते थे, इसी से वह भौंसिला भी कहलाए। वह बड़ी आयु के हुए, इसी से खुमान पदवी भी उन्हें प्राप्त हुई। ( भूषण कवि ने शिवाजी के यश-वर्णन में उनकी इन पुश्तैनी तीनों उपाधियों का प्रयोग किया है। जगह-जगह शिवाजी के नाम के साथ सरजा, भौंसिला और खुमान, ये शब्द आए हैं। इन तीनों उपाधियों का अर्थ इस दोहे में कवि ने व्यक्त कर दिया है )॥८॥

भूषन भनि ताके भयो भुव-भूषन नृप साहि।
रातौ दिन संकित रहैं साहि सबै जग माहिं॥ ९॥

भूषण कहता है, उनके पुत्र साहि ( शाहूजी ) हुए, जो पृथ्वी के आभूषण थे, और जिनके ख़याल से बादशाह तक रात-दिन अपने मन में शंकित रहते थे॥ ९॥

कवित्त

एते हाथी दीन्हे माल मकरन्दजू के नन्द जेते गनि सकति बिरंचि हू की न तिया। भूषन भनत जाकी साहिबी सभा के देखे लागें और सब छितिपाल छिति में छिया॥ साहस अपार हिंदुवान को अधार धीर सकल सिसौदिया सपूत कुल को दिया। जाहिर जहान भयो साहिजू खुमान बीर साहिन को सरन सिपाहिन को तकिया॥ १०॥

मालोजी के पुत्र शाहूजी ने इतने हाथी दान में दिए कि उन्हें ब्रह्मा की स्त्री ( सरस्वती ) भी नहीं गिन सकती। भूषण कहता है, जिनकी सभा और साहिबी ( प्रताप, को देखकर और सब पृथ्वी के राजा लोग छिया ( तुच्छ ) लगते हैं। उनका साहस अपार था। वह हिंदुओं का आधार ( सहारा ) थे। धीर और सीसौदियावंश के सभी सपूतों में दीपक के समान ( कुल को उज्ज्वल करनेवाले ) थे। ऐसे जगत्प्रसिद्ध खुमान शाहिजू हुए, जो शाहों के लिये शरण और सिपाहियों की तकिया ( आश्रयदाता ) थे॥ १०॥

दोहा

दसरथ जू के राम भे श्रीबसुदेव गोपाल।
सोई प्रगटे साहि के श्रीसिवराज भुवाल॥ ११॥

दशरथ के रामचंद्र और वसुदेव के श्रीकृष्णरूप से जो ईश्वर उत्पन्न हुए थे, वही शाहिजू के श्रीशिवराज महाराज के रूप से उत्पन्न हुए॥ ११॥

उदित होत सिवराज के मुदित भये द्विज देव।
कलिजुग हट्यो मिट्यो सकल म्लेच्छन को अहमेव॥ १२॥

शिवराज का जन्म होते ही ब्राह्मण और देवता प्रसन्न हुए। कलियुग जैसे पृथ्वी पर से हट गया और म्लेच्छों का अहंकार मिट गया॥ १२॥

कवित्त

जा दिन जनम लीन्हो भू पर भुसिल भूप ताही दिन जीत्यो अरि-उर के उछाह को। छठी छत्रपतिन को जीत्यो भाग अनायास जीत्यो नामकरन में करन प्रबाह को॥ भूषन भनत बाललीला गढ़कोट जीत्यो साहि के सिवाजी करि चहूँ चक्क चाह को। बीजापुर गोलकुण्डा जीत्यो लरिकाँइहीं में ज्वानी आये जीत्यो दिल्लीपति पातसाह को॥ १३॥

भोसिला-भूप शिवराज ने जिस दिन पृथ्वी पर जन्म लिया, उसी दिन उन्होंने शत्रुओं के हृदय के उत्साह को जीत लिया ( छीन लिया )। छठी के दिन उन्होंने छत्रपति राजों के भाग्य को अनायास ( विना परिश्रम ) जीत लिया। जिस दिन नामकरण-संस्कार हुआ, उस दिन कर्ण ( दानी राजा कर्ण ) के प्रवाह अर्थात् उनके यश के प्रवाह को जीत लिया। भूषण कहता है, बाललीला में ही गढ़कोट को जीत लिया। शाहूजी के पुत्र शिवाजी ने चारों चक्र ( पृथ्वी के चारों कोनों ) को जीतने की चाह करके लड़कपन ही में बीजापुर और गोलकुण्डा को जीत लिया और जवानी में दिल्लीपति बादशाह औरंगजेब को जीत लिया ॥ १३ ॥

दोहा

दच्छिन के सब दुग्ग जिति दुग्ग सहारबिलास।
सिव सेवक सिव गढ़पती कियो रायगढ़ बास ॥ १४ ॥

दक्षिण के सब गढ़ों को मय हारबिलासगढ़ के जीतकर शिव के सेवक गढ़पति श्रीशिवाजी ने रायगढ़ में निवास किया। ( रायगढ़ एक पहाड़ी क़िला था। सन् १६६२ से शिवाजी ने इसमें रहना शुरू किया था ) ॥ १४ ॥

## राजधानी रायगढ़ का वर्णन

सवैया

जापर साहितनै सिवराज सुरेस की ऐसी सभा सुभ साजै।
यों कवि भूषन जंपत है लखि संपति को अलकापति लाजै ॥
जामधि तीनहु लोक की दीपति ऐसो बड़ो गढ़राज बिराजै।
वारि पताल सी माची मही अमरावति की छबि ऊपर छाजै ॥ १५ ॥

वह ऐसा बड़ा गढ़ है कि जिसके भीतर शाहितनय शिवराज की इन्द्र की सभा के समान सभा बनी हुई है। कवि भूषण यों कहता है कि उसकी सम्पत्ति ( वैभव ) को देखकर अलकापति कुबेर भी लज्जित होते हैं। जिसके मध्य में तीनों लोकों की शोभा विराजमान है, जिसकी खाई की नींव पाताल तक है और ऊपर अमरावती ( इन्द्र की पुरी ) की सी छबि छाई हुई है ॥ १५ ॥

हरिगीतिकाछन्द

मनिमय महल सिवराज के इमि रायगढ़ में राजहीं।
लखि जच्छ किन्नर सुर असुर गंधर्ब हौसनि साजहीं ॥
उत्तंग मरकत मंदिरन मधि बहु मृदंग जु बाजहीं।
घन समै मानहु घुमरि करि घन घन पटल गल गाजहीं ॥ १६ ॥

रायगढ़ में शिवराज के मणिमय महल ऐसे शोभायमान हैं कि उन्हें देखकर यक्ष, किन्नर, देवता, असुर, गन्धर्व आदि को हवस होती है कि ऐसे महल हमारे भी होते तो क्या बात थी! अथवा वे हवस करके अपने महलों को भी वैसा ही सजाते हैं। ऊँचे मरकतमणि ( पन्ना ) के मंदिरों में बहुत से मृदंग जो बजते हैं तो जान पड़ता है, मानों वर्षा ऋतु में घुमड़-घुमड़कर घनी घन की घटा गरज रही है ॥ १६ ॥

मुकुतान की झालरनि मिलि मनिमाल छज्जा छाजहीं।
संध्या समै मानहु नखतगन लाल अम्बर राजहीं ॥
जहँतहाँ ऊरध उठे हीरा किरन घन समुदाय हैं।
मानौ गगन तम्बू तन्यो ताके सपेत तनाय हैं ॥ १७ ॥

मोतियों की झालरों से मिली हुई मणियों की मालाएँ ऐसी छज्जों पर सोहाती हैं, मानो संध्या के समय आकाश में लाल नक्षत्रगण शोभायमान हैं। जहाँ-तहाँ ऊपर को फैली हुई हीरों की घनी किरणें ऐसा जान पड़ती हैं, जैसे आकाश में तंबू तना हुआ है, और उसके ये सफ़ेद तनाव ( की रस्सियाँ ) हैं ॥ १७ ॥

भूषन भनत जहँ परसि कै मनि पुहुपरागन की प्रभा।
प्रभु पीत पट की प्रगट पावत सिन्धु मेघन की सभा ॥
मुख नागरिन के राजहीं कहुँ फटिक महलन संग मैं।
विकसंत कोमल कमल मानहुँ गगनगंग तरंग मैं ॥ १८ ॥

भूषण कहता है, जहाँ पुखराज मणियों की प्रभा ( चमक ) पड़ने से नीचे सागर और ऊपर बादल, दोनों कृष्ण के पीताम्बर जैसे प्रतीत होते हैं। जहाँ कहीं पर बिल्लौर पत्थर के बने महलों में कोमल खिले हुए स्त्रियों के मुख ऐसे शोभायमान होते हैं, जैसे विमल आकाश-गंगा की लहरों में कमल दिखाई पड़ रहे हों ॥ १८ ॥

आनंद सों सुन्दरिन के कहुँ इन्दुबदन उदोत हैं।
नभसरित के प्रफुलित कुमुद मुकुलित कमल कुलहोत हैं ॥
कहुँ बावली सर कूप राजत बद्ध मनि-सोपान हैं।
जहँ हंस सारस चक्रवाक बिहार करत सनान हैं ॥ १९ ॥

कहीं पर सुन्दरियों के मुखचन्द्र आनन्द से भरे हुए उदित हैं, जिन्हें देखकर आकाश-गंगा के कुमुद ( कोकाबेली ) के फूल खिलते और कमल बंद होते हैं। कहीं बावली, तालाब, कुएँ विराज

मान हैं, जिनके सोपान मणियों से बँधे हुए हैं, जहाँ हंस, सारस, चक्रवाक आदि पक्षी नहाते और जल-बिहार करते हैं ॥ १६ ॥

कितहूँ बिसाल प्रबाल-जालन जटित अंगन-भूमि है।
जहँ ललित बागनि द्रुम लतनि मिलि रहे झिलिमिलि झूमि है॥
चंपा चमेली चारु चंदन चारिहूँ दिसि देखिए।
लवली लवंग यलानि केरे लाखहों लगि लेखिए॥२०॥

कहीं पर आँगनों के फ़र्श विशाल प्रबाल ( मूँगे के समूहों ) से जड़े हुए हैं। जहाँ सुंदर बागों में झूम रहे वृक्ष लताओं से लिपट रहे हैं। चारों ओर चंपा, चमेली, चारु चन्दन आदि के वृक्ष देख पड़ते हैं। लाखों लवली ( एक लता ); लौंग, इलायची के पेड़ लगे हुए लख पड़ते हैं॥२०॥

कहुँ केतकी कदली करौंदा कुन्द अरु करबीर हैं।
कहुँ दाख दाड़िम सेब कटहल तूत अरु जंभीर हैं॥
कितहूँ कदम्ब कदम्ब कहुँ हिंताल ताल तमाल हैं।
पीयूष ते मीठे फले कितहूँ रसाल रसाल हैं॥ २१ ॥

कहीं केतकी, केला, करौंदा, कुंद, कनेर, दाख ( अंगूर ), अनार, सेब, कटहल, शहतूत, जँभीरी नींबू, कदम के झुंड और कहीं हिंताल, ताल ( ताड़ ), तमाल के पेड़ लगे हैं। कहीं अमृत से भी मीठे फलोंवाले रसीले आम के पेड़ फले हुए हैं ॥ २१ ॥

पुन्नाग कहुँ कहुँ नागकसेरि कितहुँ बकुल असोक हैं।
कहुँ ललित अगर गुलाब पाटल पटल बेला थोक हैं॥
कितहूँ निवारी माधवी सिंगारहार कहूँ लसैं।
जहँ भाँति भाँतिन रंग रंग विहंग आनँद सों रसैं॥ २२ ॥

कहीं पुन्नाग, कहीं नागकेसर, कहीं मौलसिरी और अशोक के वृक्ष फूले हैं। कहीं ललित अगुरु, कहीं गुलाब, कहीं पाटल ( एक तरह का गुलाब ) के झुंड और कहीं ढेर के ढेर बेला खिले हुए हैं। कहीं निवाड़ी, कहीं माधवी, कहीं हरसिंगार शोभायमान हैं। इन पेड़ों पर तरह-तरह के रंग-बिरंगे पक्षी आनन्द से बोलते अथवा कलोल करते हैं ॥ २२ ॥

छप्पै

लसत बिहंगम बहु लवनित बहु भाँति बाग महँ।
कोकिल कीर कपोत केलि कल कल करंत तहँ।

मञ्जुल महरि मयूर चटुल चातक चकोरगन।
पियत मधुर मकरंद करत झंकार भृंगघन॥
भूषन सुबास फल फूल जुत छहुँ ऋतु बसत बसंत जहँ।
इमिराजदुग्ग राजत रुचिर अतिहि सुखद सिवराज कहँ॥ २३॥

उस सुन्दर बाग़ में बहुत से भाँति भाँति के पक्षी लसते हैं। कोयल, तोता, कबूतर कलरव करते हुए केलि या कलोल करते हैं। सुंदर महरि (एक पक्षी), मोर चंचल चातक और चकोरों के झुंड मीठे मकरंद (फूलों के रस) को पीते हैं, और भौंरों के झुंड गुंजार करते हैं। भूषण कवि कहता है, सुगंध, फलों और फूलों सहित उस स्थान में छहों ऋतुओं (वसंत, गर्मी, वर्षा, शरद्, हेमन्त और शिशिर) में बसन्त ही बना रहता है शिवराज के लिये सुखदायक सुन्दर राजदुर्ग (राजगढ़) इस तरह शोभायमान है॥ २३॥

दोहा

तहँ नृप रजधानी करी जीति सकल तुरकान।
सिव सरजा रुचि दान में कीन्हों सुजस जहान॥ २४॥

राजा (शिवाजी) सरजा शिवाजी ने सब तुर्कों को जीतकर वहीं राजधानी बनाई। उनकी रुचि दान देने में होने के कारण उनका सुयश संसार भर में फैल गया॥ २४॥

देसन देसन ते गुनी आवत जाचन ताहि।
तिनमें आयो एक कबि भूषन कहियतु जाहि॥ २५॥

देश देश से गुणी लोग शिवाजी से याचना करने (इच्छित वस्तु माँगने) को आते थे। उन्हीं में एक कवि भी आया, जिसको भूषण कहते हैं, अर्थात् जिसका नाम भूषण है॥ २५॥

कवि के वंश का वर्णन

द्विज कनौज कुल कस्यपी रतनाकरसुत धीर।
बसत तिबिक्रमपुर सदा तरनितनूजा तीर॥ २६॥

वह कान्यकुब्ज ब्राह्मण था। उसका गोत्र कश्यप था। वह धीर रत्नाकर पण्डित का पुत्र था। वह यमुना के किनारे बसे हुए त्रिविक्रमपुर में सदा रहता था (यह गाँव अब तिकमापुर के नाम से प्रसिद्ध है और कानपुर ज़िले में है)॥ २६॥

बीर बीरबर से जहाँ उपजे कबि अरु भूप।
देव बिहारीस्वर जहाँ बिस्वेस्वर तद्रूप॥ २७॥

जहाँ वीरबल ( बादशाह अकबर के प्रसिद्ध मुसाहब ) के समान वीर, कवि और राजा उत्पन्न हुए हैं। जहाँ वैसे ही देव, बिहारी, ईश्वर और विश्वेश्वर नाम के प्रसिद्ध कवि रहे हैं ॥ २७ ॥

कुल सुलंक चितकूटपति साहस सील समुद्र।
कविभूषन पदवी दई हृदयराम-सुत रुद्र ॥ २८ ॥

चित्रकूट के राजा, सोलंकी कुल में उत्पन्न, हृदयराम के पुत्र रुद्रशाह ने जो कि साहस और शील के समुद्र हैं, उक्त कवि को कवि-भूषण की पदवी दी ( जान पड़ता है, भूषण का असल नाम कुछ और था। उनकी यह भूषण उपाधि इतनी प्रसिद्ध हो गई कि असल नाम लुप्त ही हो गया। यहाँ तक कि भूषण ने भी अपने असल नाम का उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं समझी ) ॥ २८ ॥

सिवचरित्र लखि यों भयो कवि भूषन के चित्त।
भाँति भाँति भूषननि सों भूषित करौं कवित्त ॥ २९ ॥

महाराज शिवाजी के चरित्र को देखकर भूषण कवि के चित्त में यह बात आई कि भाँति-भाँति के भूषणों ( अलंकारों ) से भूषित कविता बनाऊँ ॥ २९ ॥

सुकबिन हूँ की कछु कृपा समुझि कबिन को पन्थ।
भूषन भूषनमय करत सिव-भूषन सुभ ग्रन्थ ॥ ३० ॥

कुछ सुकवियों की भी कृपा पाकर और कवियों के पंथ (मार्ग) को समझकर—अर्थात् उनके अलंकार-वर्णन की परम्परा को समझकर—कवि भूषण यह भूषणमय ( अर्थात् अलंकार-वर्णन-विषयक ) शिवराज-भूषण नाम का शुभ ग्रन्थ रचता है ॥ ३० ॥

भूषन सब भूषननि में उपमहि उत्तम चाहि।
याते उपमहि आदि दै बरनत सकल निबाहि ॥ ३१ ॥

भूषण कवि सब अलंकारों में उपमा (अलंकार) को ही उत्तम समझता है। इसलिये आदि में उपमा का ही वर्णन करके अन्य सभी अलंकारों का निर्वाह करता हुआ उनका वर्णन करता है ॥ ३१ ॥

# ग्रन्थारम्भ

## अर्थालंकार-वर्णन *

## उपमा अलंकार

लक्षण—दोहा

जहाँ दुहुँन की देखिए सोभा बनत समान।
उपमा भूषन ताहि को भूषन कहत सुजान॥ ३२॥

जहाँ दोनों पक्ष की समान शोभा बनते देखिए, उसे सुजान लोग उपमा अलंकार कहते हैं॥३२॥

जाको बरनन कीजिए सो उपमेय प्रमान।
जाकी सरबरि कीजिए ताहि कहत उपमान॥ ३३॥

जिसका वर्णन किया जाय वह उपमेय है और जिसकी सरबर (बराबरी या तुलना) कीजिए, उसे उपमान कहते हैं (उपमा के चार अंग होते हैं—१ उपमान, २ उपमेय, ३ वाचक और ४ धर्म। उपमा का उदाहरण हुआ—आँखें कमलदल सी विशाल हैं। इसमें 'आँखें' उपमेय, 'कमल-दल' उपमान, 'सी' वाचक और 'विशाल' धर्म है। इसी तरह सर्वत्र जानिए)॥ ३३॥

उदाहरण—कवित्त

मिलतहि कुरुख चकत्ता को निरखि कीन्हो सरजा ब्रजेस ज्यों दुचित सुरराज को। भूषन कुमिसि गैरमिसिल खरे किये को किये म्लेच्छ मुरछित करिकै गराज को॥ अरे ते गुसलखाने बीच ऐसे उमराय लै चले मनाय महाराज सिवराज को। दावदार निरखि रिसानो दीह दलराय जैसे गड़दार अड़दार गजराज को॥ ३४॥

मिलते ही चकत्ता (मुग़लों की चग़ताई नाम की एक शाखा में उत्पन्न) औरंगज़ेब का बुरा रुख़ देखकर शिवाजी ने (गुस्से में आकर) उसी तरह उसे दुचित्ता या शंकित कर दिया, जैसे कृष्णचंद्र ने (इन्द्रयज्ञ में विघ्न डालकर और गोवर्द्धन पर्वत उठाकर) सुरराज इन्द्र को शंकित कर दिया था †। भूषण कहता है, जैसे बुरा बहाना करके गैरमिसिल—बेतरतीब अर्थात् अनुचित जगह पर

---

* अर्थालंकार वे कहलाते हैं, जिनका सम्बन्ध अर्थ से होता है, अथवा जो अर्थ में होते हैं।

† हिंदी-मंदिर तथा नागरी-प्रचारिणी सभा से प्रकाशित भूषण-ग्रन्थावली में "सुरेश ज्यों दुचित ब्रजराज को" पाठ लिखा है। पर यह ठीक नहीं प्रतीत होता। कारण, परिणाम को देखते औरंगज़ेब को कृष्ण और शिवाजी का इन्द्र कहना ठीक न होगा। कृष्ण ने इन्द्र को नीचा दिखाया था, वैसे ही शिवा ने शाह को नीचा दिखाया। दूसरे कृष्ण जैसे देखने में बालक थे और इन्द्र इतने बड़े देवराज, वैसे ही शिवाजी और औरंगज़ेब भी। इसीलिये हमने इस प्रति में "ब्रजेस ज्यों दुचित सुरराज को" यह पाठ रक्खा है।—टीकाकार।

शिवाजी को शाही सिपाहियों ने खड़ा करना चाहा, वैसे ही उन्होंने गरजकर (वहाँ उपस्थित) म्लेच्छों ( मुसलमानों ) को मूर्च्छित कर दिया। शिवाजी के अड़ने ( या बिगड़ खड़े होने से ) जब शाह गुसलखाने में भागकर छिप रहा, तब उसके उमरा लोग महाराज शिवराज को वहाँ से मनाकर ( खुशामद करके ) इस तरह ले चले, जिस तरह दबंग, लंबे-चौड़े, दलपति, ऐंड़दार गजराज को रिसाया हुआ ( बिचला हुआ ) देखकर गड़दार लोग ( बिगड़े हुए मस्ताने हाथी को साँटे मारकर ठीक करनेवाले साँटेमार लोग ) चुमकार-पुचकारकर मनाते हैं ॥ ३४ ॥

सवैया

साइस्तखाँ दुरजोधन सो औ दुसासन सो जसवन्त निहार्‍यो।
द्रोन सो भाऊ करन्न करन्न सो और सबै दल सो दल भार्‍यो ॥
ताहि बिगोय सिवा सरजा भनै भूषन औनिछता यों पछार्‍यो।
पारथ के पुरुषारथ भारथ जैसे जगाय जयद्रथ मार्‍यो ॥३५॥

शाइस्ताखाँ[1] दुर्योधन के समान और यशवन्तसिंह[2] दुश्शासन के समान देख पड़े, भाऊसिंह[3] द्रोणाचार्य के समान, कर्णसिंह[4] कर्ण के समान तथा और सब दल ( शाही सेना ) कौरवों के दल के समान भारी था। भूषण कहता है, सरजा शिवाजी ने उसे पृथ्वी के फूल ( कुकरमुत्ते के छत्ते ) की तरह उखाड़कर यों पछाड़ा, जैसे महाभारत के युद्ध में जयद्रथ[5] को सतर्क करके पुरुषार्थी अर्जुन ने मारा था ॥ ३५ ॥

---

( १ ) शाइस्ताख़ाँ एक शाही सरदार था। सन् १६६३ में पूने पर शाही अधिकार स्थापित करके वहीं के गढ़ में यह रहता था। एक दिन शिवाजी रात को हिकमत से इसके निवासस्थान में पहुँच गए और केवल २५ सिपाहियों के साथ हमला करके शाइस्ताख़ाँ के लड़के तथा बहुत से शाही सिपाहियों को मार डाला। शाइस्ताखाँ जान लेकर खिड़की से फाँदकर भागा। इसी बीच में शिवाजी के वार से उसके हाथ की कई उँगलियाँ कट गईं, पर जान बच गई।

( २ ) यशवन्तसिंह मारवाड़ के महाराज थे। यह औरंगज़ेब की ओर से शाइस्ताख़ां के साथ दक्षिण को जीतने गए थे। पर अंत में शिवाजी से मिल गए और इन्हीं की मदद से शाइस्ताख़ाँ पर शिवाजी ने फ़तह पाई और उसे जान लेकर भागना पड़ा——ऐसी किंवदन्ती है।

( ३ ) भाऊसिंह बूँदी के प्रसिद्ध राजा थे। सन् १६५८ ई० में यह गद्दी पर बैठे थे।

( ४ ) कर्णसिंह बीकानेर के राजा थे। यह औरंगज़ेब के दोहज़ारी मंसबदार थे, और सन् १६३२ ई० से १६७४ तक इन्होंने राज्य किया था।

( ५ ) जयद्रथ सिंधुदेश का राजा और दुर्योधन की बहन दुःशला इसको ब्याही थी। इसने वनवास के समय जाकर पाण्डवों की अनुपस्थिति में द्रौपदी को ज़बरदस्ती ले भागने की चेष्टा की थी। इतने में वन से लौटते हुए पाण्डव राह में मिल गए। अर्जुन ने इसे परास्त कर दुर्गति करके छोड़ दिया। मारा इसलिये नहीं कि बहन दुःशला विधवा हो जायगी। जयद्रथ ने अपमान का बदला लेने को तप करके शिव से वरदान प्राप्त किया और उसी के बल से अर्जुन की अनुपस्थिति में पांडवों को परास्त किया। इसी से लड़ते समय इसी के कारण अभिमन्यु मारा गया। इससे कुपित होकर अर्जुन ने प्रतिज्ञा की कि आज सूर्यास्त के पहिले ही जयद्रथ को मारूँगा, उसे कोई बचा न सकेगा। अंत को उनकी प्रतिज्ञा कृष्णचन्द्र की सहायता से पूरी हुई। यह कथा महाभारत में विस्तार से है।

## लुप्तोपमा

लक्षण—दोहा

उपमावाचक पद धरम उपमेयो उपमान।
जामें सो पूर्णोपमा लुप्त घटत लौं मान॥ ३६॥

उपमावाचक पद, उपमेय, उपमान और धर्म, ये चारों बातें जिसमें हों, उसे पूर्णोपमा कहते हैं। इन अंगों में से कोई एक अंग कम होने से लुप्तोपमा होती है॥ ३६॥

उदाहरण—सवैया

पावक तुल्य अमीतन को भयो मीतन को भयो धाम सुधा को।
आनन्द भो गहिरो समुदै कुमुदावलि तारन को बहुधा को॥
भूतल माहिं बली सिवराज भो भूषन भाखत सत्रु मुधा को।
बन्दन तेज त्यों चन्दन कीरति सोंधे सिंगार बधू बसुधा को॥३७॥

शत्रुओं को अग्नि के तुल्य हुआ। मित्रों को अमृत का घर (अर्थात् चन्द्रमा) हुआ। कुमुदावली और तारों को बहुधा आनन्द का गहरा समुद्र (या समुदय) हुआ। भूषण कहता है, पृथ्वीतल में बली शिवराज मुधा यानी निष्फलता का शत्रु हुआ। वसुधा वधू का सुहावना शृङ्गार (उसका) तेज बंदन (ईंगुर या रोली का टीका) और कीर्ति चंदन हुई॥ ३७॥

कवित्त

आए दरबार बिललाने छरीदार देखि जापता करनहारे नेक हू न मनके। भूषन भनत भौंसिला के आय आगे ठाढ़े बाजे भये उमराय तुजुक करन के॥ साहि रह्यो जकि सिव साहि रह्यो तकि और चाहि रह्यो चकि बने ब्योंत अनबन के। ग्रीषम के भानु सो खुमान को प्रताप देखि तारे सम तारे गए मूँदि तुरकन के॥ ३८॥

शाही दरबार में शिवाजी को आया देखकर छड़ीदार (चोपदार) बिलला उठे, जाब्ता करनेवाले—शाही अदबक़ायदे की पाबंदी के निगराँ लोग (शिवराज को बेक़ायदे जाते देखकर भी) तनिक भी नहीं मिनके, किसी ने चूँ नहीं की। भूषण कहता है, कोई-कोई उमरा भोंसला शिवाजी के आगे खड़े हुए। उन पर इनका ऐसा रोब ग़ालिब हो गया, आतंक छा गया कि वे इनका अदब बजा लाने की इच्छा करने लगे। यह देखकर औरंगज़ेब बादशाह भौंचक सा रहा। अनबन

( बिगाड़ ) के ब्योंत बने देखकर शिवाजी महाराज शाह की ओर चकित से ताकते रहे । गर्मियों के सूर्य के समान ( प्रचंड ) खुमान ( शिवाजी ) का प्रताप देखकर तुर्कों की आँखों के तारे तारे से मुँद गए ॥ ३८ ॥

## अनन्वय

लक्षण—दोहा

जहाँ करत उपमेय को उपमेयै उपमान।
तहाँ अनन्वै कहत हैं भूषन सकल सुजान ॥३९॥

जहाँ एक ही वस्तु को उपमेय और उपमान कहा जाता है, वहाँ अनन्वय अलंकार होता है। भूषण कहता है, यह सभी सुजानों का मत है ॥ ३९ ॥

उदाहरण—सवैया

साहि तनै सरजा तव द्वार प्रतिच्छन दान की दुंदुभि बाजै।
भूषन भिच्छुक भीरन को अति भोजहु ते बढ़ि मौजनि साजै॥
राजन को गनराजन को गनैं साहिन में न इती छबि छाजै।
आजु गरीबनेवाज मही पर तो सो तुही सिवराज बिराजै॥४०॥

हे शाहू के पुत्र सरजा, तेरे द्वार पर हर घड़ी नगाड़े बजते हैं। भूषण कहता है, भिक्षुकों की भीड़ को राजा भोज से भी बढ़कर बड़ी मौज ( याचना पूर्ण होने से मिलनेवाला आनन्द ) तुमसे मिलती है। हे राजन्, राजों की क्या गिनती है, शाहों में भी इतनी शोभा नहीं देख पड़ती। आज इस पृथ्वी पर हे शिवराज, तुम्हारे समान ग़रीबनेवाज अर्थात् दीन-बन्धु तुम्हीं हो ॥ ४० ॥

## प्रथम प्रतीप

लक्षण—दोहा

जहँ प्रसिद्ध उपमान को करि बरनत उपमेय।
तहँ प्रतीप उपमा कहत भूषन कबिता प्रेय॥४१॥

जहाँ उपमान को उपमेय करके वर्णन किया जाय, वहाँ कविताप्रिय लोग प्रताप अलंकार कहते हैं। ( प्रतीप के पाँच भेद हैं। यह प्रथम प्रतीप का लक्षण है ) ॥ ४१ ॥

उदाहरण—सवैया

छाय रही जितही तितही अति ही छबि छीरधि रंग करारी।
भूषन सुद्ध सुधान के सौधनि सोधत सी धरि ओप उज्यारी॥

यों तम तोमहि चाबिकै चन्द चहूँ दिशि चाँदनि चारु पसारी ॥
ज्यों अफजल्लहि मारि मही पर कीरति श्रीसिवराज बगारी ॥४२॥

जहाँ तहाँ क्षीरसागर के रंग ( उज्ज्वलता ) की शोभा छा रही है। भूषण कहता है, उजियाली मानो ओप रखकर विशुद्ध सुधा के माथों ( महलों ) को शोधती-सी ( खोजती-सी ) है। चंद्रमा ने अन्धकार के समूह को चबाकर चारों ओर सुन्दर चाँदनी पसारी है, जैसे अफ़ज़लखाँ को मारकर श्रीशिवराज ने पृथ्वी पर अपनी कीर्त्ति फैलाई ( कीर्त्ति का उपमान चाँदनी होती है। यहाँ उसे उपमेय और कीर्त्ति को उपमान करके कहा है ) ॥ ४२ ॥

## द्वितीय प्रतीप

लक्षण—दोहा

करत अनादर बर्न्य को पाय और उपमेय।
ताहू कहत प्रतीप जे भूषण कविता प्रेय ॥ ४३ ॥

भूषण कहता है, जहाँ उपमान को उपमेय का स्थान देकर वर्णनीय का अनादर करे, उसे भी प्रतीप कहते हैं। यह द्वितीय प्रतीप हुआ ॥ ४३ ॥

उदाहरण

सिव प्रताप तव तरनि सम अरि पानिप हरि मूल।
गरब करत केहि हेत है बड़वानल तो तूल ॥ ४४ ॥

हे शिवाजी, तुम्हारा प्रताप सूर्य के समान शत्रुओं के पानी ( मान ) को सोख लेनेवाला है। फिर बड़वानल ( समुद्र के भीतर की आग ) तुम्हारे तेज के तुल्य होने का किसलिये गर्व करता है ? ॥ ४४ ॥

## तृतीय प्रतीप

लक्षण—दोहा

आदर घटत अबर्न्य को जहाँ बर्न्य के जोर।
तृतिय प्रतीप बखानहीं तहँ कबिकुल सिरमौर ॥ ४५ ॥

जहाँ वर्णनीय ( उपमेय ) के ज़ोर से उपमान का आदर घटे, वहाँ श्रेष्ठ कविगण तीसरा प्रतीप कहते हैं ॥ ४५ ॥

उदाहरण

गरब करत कत चाँदनी हीरक छीर समान।
फैली इती समाजगत कीरति सिवा खुमान ॥४६॥

समाज में इतनी खुमान शिवा की कीर्ति फैली है कि उसके आगे चाँदनी, हीरा और दूध (अपनी उज्ज्वलता का) घमंड क्यों करते हैं? (अर्थात् कीर्ति के आगे इन सबकी उज्ज्वलता फीकी है) ॥ ४६ ॥

चतुर्थ प्रतीप

दोहा—लक्षण

पाय बरन उपमान को जहाँ न आदर और।
कहत चतुर्थ प्रतीप हैं भूषन कबिसिरमौर ॥४७॥

जहाँ उपमान को उपमेय से हीन ठहराकर उसका आदर न किया जाय, वहाँ कविवर चतुर्थ प्रतीप कहते हैं ॥ ४७ ॥

उदाहरण—कवित्त

चन्दन में नाग, मद भर्‍यो इन्द्र-नाग, विषभरो सेसनाग कहै उपमा अबस को। भोर ठहरात, न कपूर बहरात, मेघ सरद उड़ात, बात लागे दिसि दस को॥ सम्भु नीलग्रीव, भौंर पुंडरीक ही बसत, सरजा सिवाजी सन भूषन सरन को। छीरधि में पंक, कलानिधि में कलंक, याते रूप एक टंक ये लहैं न तुव जस को ॥४८॥

भूषण कहता है, हे शिवाजी, चंदन में नाग लिपटे रहते हैं, इंद्र का हाथी मद से भरा है, शेष-नाग के विष है, अतः व्यर्थ उपमा कौन कहे? प्रातःकाल ठहरता नहीं (शीघ्र लुप्त हो जाता है), कपूर उड़ जाता है, शरद् ऋतु के बादल भी हवा लगने से दसो दिशाओं को उड़ते फिरते हैं, शंकर का कंठ नीला है, श्वेत कमल पर भौंरे बसते हैं, क्षीरसागर में कीचड़ है, चंद्रमा में कलंक है। इसी-लिये ये सब उज्ज्वल पदार्थ—जिनमें पूर्वोक्त दोष मौजूद हैं—तुम्हारे यश के रूप को, उज्ज्वलता को, रत्ती भर भी नहीं पाते ॥ ४८ ॥

पंचम प्रतीप

लक्षण—दोहा

हीन होय उपमेय सों नष्ट होत उपमान।
पंचम कहत प्रतीप तेहि भूषन सुकबि सुजान ॥४९॥

भूषण कहता है, सुकवि सुजान कहते हैं कि जहाँ उपमेय के आगे उपमान व्यर्थ बतलाया जाय या हीन हो, वहाँ पंचम प्रतीप होता है ॥ ४९ ॥

उदाहरण—कवित्त

तो सम हो सेस सो तो बसत पताललोक ऐरावत गज सो तो इन्द्रलोक सुनिए। दुरे हंस मानसर ताहि मैं कैलासधर सुधा सर-बर सोऊ छोड़ि गयो दुनिए॥ सूर दानी सिरताज महाराज सिवराज रावरे सुजस सम आजु काहि गुनिए। भूषन जहाँ लौं गनौं तहाँ लौं भटकि हार्‍यो लखिए कछू न केती बातैं चित चुनिए ॥५०॥

हे शूर, हे दानियों के शिरताज महाराज शिवराज, शेषनाग ( उज्ज्वलता में ) तुम्हारे ( यश के ) समान था, सो वह ( दबकर ) पाताल में बसता है। ऐरावत हाथी था, सो वह इन्द्रलोक में है, ऐसा सुना जाता है। हंस थे, सो वे मानस सरोवर में जा छिपे। कैलास पर्वत था, या कैलाशधर शिव थे, सो वह भी वहीं हैं। अमृत का सरोवर था, सो वह दुनिया को ही छोड़ गया। अब तुम्हारे सुयश के समान किसे कहिए ? भूषण कहता है, जहाँ तक देखा, वहाँ तक मैं भटककर हार गया। चित्त में कितनी ही बातें ( उपमान ) चुनता हूँ, पर कोई ठीक नहीं ठहरती ॥ ५० ॥

उदाहरण—सवैया

कुन्द कहा पय बृन्द कहा अरु चन्द्र कहा सरजा जस आगे।
भूषन भानु कृसानु कहाऽब खुमान प्रताप महीतल पागे॥
राम कहा द्विज राम कहा बलराम कहा रन मैं अनुरागे।
बाज कहा मृगराज कहा अति साहस मैं सिवराज के आगे ॥५१॥

भूषण कहता है, सरजा के यश के आगे कुंद क्या है, दूध क्या है, और चन्द्रमा क्या है ? ( अर्थात ये सब फीके हैं ) महीतल पर खुमान के प्रताप के रहते सूर्य और अग्नि क्या हैं, कुछ नहीं। शिवाजी के रण में भिड़ने पर ( उनके आगे ) राम, परशुराम अथवा बलराम क्या हैं। अति साहस करने में शिवराज के आगे बाज क्या है, मृगराज ( सिंह ) क्या है ? ॥ ५१ ॥

यों सिवराज को राज अडोल कियो सिव जोऽब कहा ध्रुव धू है।
कामना दानि खुमान लखे न कछू सुर-रूख न देव-गऊ है॥
भूषन भूपन में कुलभूषन भौंसिला भूप धरे सब भू है।
मेरु कछू न कछू दिगदन्ति न कुण्डलि कोल कछू न कछू है ॥५२॥

शिवजी ने शिवराज के राज्य को ध्रुव के समान अचल कर दिया है। कामना देनेवाले अर्थात् पूरी करनेवाले खुमान को देखकर कल्पवृक्ष या कामधेनु भी अब कुछ नहीं हैं। भूषण कहता है, भौंसिला-भूप कुलभूषण शिवाजी सारी पृथ्वी को एक भूषण ( गहने ) के समान धारण किए हैं, अतः उसके आगे ( पृथ्वी को धारण करनेवाले ) सुमेरु, दिग्गज, शेषनाग, वराह और कच्छप आदि कुछ नहीं के बराबर हैं ॥ ५२ ॥

## उपमेयोपमा

लक्षण—दोहा

जहाँ परस्पर होत है उपमेयो उपमान।
भूषन उपमेयोपमा ताहि बखानत जान ॥ ५३ ॥

जहाँ उपमान उपमेय को ही एक दूसरे का उपमान और उपमेय कहा जाय, उसे भूषण उपमेयोपमा अलंकार कहते हैं ॥ ५३ ॥

उदाहरण—कवित्त

तेरो तेज सरजा समत्थ दिनकर सो है दिनकर सोहै तेरे तेज के निकर सो। भौंसिला-भुवाल तेरो जस हिमकर सो है हिमकर सोहै तेरे जस के अकर सो ॥ भूषन भनत तेरो हियो रतनाकर सो रतनाकरो है तेरे हिय सुखकर सो। साहि के सपूत सिव साहि दानि तेरे कर सुरतरु सो है सुरतरु तेरो कर सो ॥ ५४ ॥

हे समर्थ सरजा, तेरा तेज सूर्य-जैसा है और तेरे तेज के समूह से सूर्य शोभित होता है। हे भौंसिला-भूपाल, तेरा यश चंद्रमा-सा है और चन्द्रमा तेरे यश की खान-सा सोहता है। भूषण कहता है, तेरा हृदय रत्नाकर ( सागर )-सा है और रत्नाकर तेरे सुखकारी हृदय-जैसा है। हे शाहि के सपूत, हे दानियों के बादशाह, तेरा हाथ कल्पवृक्ष-सा है और कल्पवृक्ष तेरे हाथ-सा ॥ ५४ ॥

## मालोपमा

लक्षण—दोहा

जहाँ एक उपमेय के होत बहुत उपमान।
ताहि कहत मालोपमा भूषन सुकबि सुजान ॥ ५५ ॥

जहाँ एक उपमेय के बहुत उपमान कहे जायँ, उसे सुकवि सुजान भूषण मालोपमा अलंकार कहते हैं ॥ ५५ ॥

उदाहरण—कवित्त

इन्द्र जिमि जंभ पर बाड़व सु अंभ पर रावन सदंभ पर रघुकुल-राज है। पौन बारिबाह पर सम्भु रतिनाह पर ज्यों सहस्रबाह पर राम द्विजराज है॥ दावा द्रुमदुण्ड पर चीता मृगझुंड पर भूषन बितुंड पर जैसे मृगराज है। तेज तमअंस पर कान्ह जिमि कंस पर त्यों मलिच्छ-बंस पर सेर सिवराज है॥ ५६ ॥

इन्द्र जैसे जंभासुर पर, बड़वानल जल ( सागर ) पर, रघुकुलराज ( रामचन्द्र ) घमंडी रावण पर, वायु बादल पर, परशुराम सहस्रबाहु अर्जुन राजा पर, दावानल वृक्षों के समूह पर, चीता मृगों के झुंड पर, शेर हाथी पर, तेज ( सूर्य का प्रकाश ) अन्धकार पर, कृष्णचन्द्र कंस पर ( ग़ालिब ) हैं, वैसे ही शिवराजसिंह म्लेच्छवंश पर हैं, अर्थात् म्लेच्छों का काल है ॥ ५६ ॥

## ललितोपमा

लक्षण—दोहा

जहँ समता को दुहुन की लीलादिक पद होत।
ताहि कहत ललितोपमा सकल कबिन के गोत ॥ ५७ ॥

जहाँ दोनों की ( उपमेय और उपमान की ) समता के लिये लीला आदि पद आते हैं, वहाँ सब कवि ललितोपमा अलंकार कहते हैं ॥ ५७ ॥

उदाहरण

बहसत निदरत हँसत जहँ छबि अनुहरत बखानि।
सत्रु मित्र इमि औरऊ लीलादिक पद जानि ॥ ५८ ॥

बहसते हैं, निदरते हैं, हँसते हैं, छवि की अनुहार करते हैं, ये तथा शत्रु और मित्र इत्यादि और भी पद लीला कहलाते हैं ॥ ५८ ॥

उदाहरण—कवित्त

साहितनै सरजा सिवा की सभा जा मधि है मेरुवारी सुर की सभा को निदरति है। भूषन भनत जाके एक एक सिखर ते केते धौं नदी नद की रेल उतरति है॥ जोन्ह को हँसत जोति हीरामनि-

मन्दिरन कन्दरन मैं छबि कुहू की उछरति है। ऐसो ऊँचो दुरग महाबली को जामैं नखतावली सों बहस दिपावली करति है ॥ ५९ ॥

शाहि के पुत्र सरजा की सभा जिसमें है, जो सुमेरु पर्वत पर बनी हुई देवताओं की सभा को भी निदरती है—उसका निरादर करती है। भूषण कहता है, जिसके एक एक शिखर से न जाने कितने नदी-नदों की रेल-पेल ( प्रवाह ) उतरती है। मणि-मन्दिरों के हीरा-मणि इत्यादि की ज्योति चाँदनी को हँसती है और कंदराओं में अमावस की छवि उघरती है—खुलती है। महाबली शिवाजी का ऐसा ऊँचा गढ़ है, जिसमें नक्षत्रों की कतार से दीपों की अवली बहस करती है ॥ ५९ ॥

## रूपक

लक्षण—दोहा

जहाँ दुहुन को भेद नहिं बरनत सुकवि सुजान।
रूपक भूषन ताहि को भूषन कहत बखान॥ ६० ॥

सुकवि सुजान जहाँ उपमेय और उपमान दोनों में भेद नहीं कहते, वहाँ रूपक अलंकार होता है ॥ ६० ॥

उदाहरण—छप्पै

कलिजुग जलधि अपार उदध अधरम्म उर्मिमय।
लच्छनि लच्छ मलिच्छ कच्छ अरु मच्छ मगरचय॥
नृपति नदी नद बृन्द होत जाको मिलि नीरस।
भनि भूषन सब भुम्मि घेरि किन्निय सुअप्प बस॥
हिंदुवान पुन्यगाहक बनिक तासु निबाहक साहिसुव।
बर बादवान किरबान धरि जस जहाज सिवराज तुव॥ ६१ ॥

कलियुग एक अपार सागर है, जिसमें अधर्म की लहरें ऊपर उठती हैं, लाखों म्लेच्छ ही कच्छ, मच्छ और मगरों के समूह हैं। राजा लोग नदी और नद के समान उससे मिलकर नीरस ( खारी और फीके या नीरस=निर्दय ) होते हैं। भूषण कहता है, उसने सारी पृथ्वी को घेरकर अपने वश में कर लिया है। हिन्दुओं के पुण्य के गाहक बनिये, और उन हिंदुओं का निर्वाह अर्थात् रक्षा करनेवाले शाहि के पुत्र शिवाजी हैं, जो तलवाररूप बादवान ( पाल ) के सहारे तुम्हारे यश का जहाज उस सागर में चल रहा है ॥ ६१ ॥

साहिन महँ समरत्थ जासु नवरंग साहि सिरु।
हृदय जासु अब्बास साहि बहुबल बिलास थिरु॥
एदिलसाहि कुतुब्ब जासु जुग भुज भूषन भनि।
पाय म्लेच्छ उमराय काय तुरकानि आनि गनि॥
यहि रूप अवनि अवतार धरि जेहि जालिम जग दंडियव।
सरजा सिव साहस खग्ग गहि कलिजुग सोइ खल खंडियव॥६२॥

अनेक बादशाहों से समर्थ बादशाह औरंगजेब जिसका शिर है, बली अब्बासखाँ * बादशाह जिसका हृदय है, जो बहुत बल के विलास का स्थल है। आदिलशाह † और कुतुबशाह ‡ जिसकी दोनों भुजाएँ हैं। भूषण कहता है, म्लेच्छ उमरा जिसके पैर हैं और अन्य तुर्कों का समूह शरीर है। इस रूप से पृथ्वी पर अवतार लेकर जिस जालिम ने जगत् को दंड दिया ( सताया ) है, उस खल कलियुग को सरजा शिवाजी ने साहस का खड्ग लेकर टुकड़े टुकड़े कर डाला ॥६२॥

तथा कवित्त

सिंह-थरि जाने बिन जावली जंगल भठी हठी गज एदिल पठाय-करि भटक्यौ। भूषन भनत देखि भभरि भगाने सब हिम्मत हिये में धारि काहुवै न हटक्यौ॥ साहि के सिवाजी गाजी सरजा समत्थ महा-मदगल अफजलै पंजा बल पटक्यौ। ता बिगिर ह्वै करि निकाम निज धाम कहँ आकुत महाउत लौं आँकुस लै सटक्यौ॥ ६३ ॥

सिंह के रहने की जगह बिना जाने जावली-रूप१ सिंह की भाठी में हठी गज के समान आदिलशाह को भेजकर (औरंगजेब) भटक गया, धोखा खा गया। भूषण कहता है, शिवाजी-रूप सिंह को देखकर सब भड़भड़ाकर भाग खड़े हुए। हृदय में हिम्मत रखकर कोई भी उन्हें

---

* अब्बासख़ाँ औरंगज़ेब का मित्र और फ़ारस का शाह था। इससे बादशाह औरंगज़ेब की बराबर चिट्ठी-पत्री चलती थी।

† आदिलशाह बीजापुर का अधिपति था। शिवाजी के पिता इसी के आश्रित या नौकर थे। सन् १६८८ ई० में औरंगज़ेब ने यह राज्य अपने हस्तगत करके इसे सामन्त बना लिया था।

‡ कुतुबशाह गोलकुंडा का अधिपति था। पूर्वोक्त सन् १६८८ में इस रियासत की भी दशा बीजापुर के समान हो गई थी।

( १ ) जावली में ही शिवाजी के हाथ से अफ़ज़लख़ाँ की मौत हुई।

नहीं हटक सका। शाहि के पुत्र, समर्थ, ग़ाज़ी शिवाजी ने महामतवाले गजराज से अफ़ज़लख़ाँ* को पंजे के बल पटका। उस हाथी-रूप अफ़ज़लख़ाँ के विना निकम्मा होकर महावत-सा याक़ूतख़ाँ अंकुश लेकर अपने घर को सटक गया ॥ ६३ ॥

## न्यून और अधिक रूपक

लक्षण—दोहा

घटि बढ़ि जहँ बरनन करै करिकै दुहुन अभेद।
भूषन कवि औरौ कहत द्वै रूपक के भेद ॥ ६४ ॥

जहाँ उपमान और उपमेय को अभिन्न कहते हुए भी कुछ कमी या कुछ अधिकता दिखाई जाय, वहाँ भूषण कवि न्यून रूपक और अधिक रूपक के नाम से रूपक के और भी दो भेद कहता है ॥ ६४ ॥

उदाहरण—कवित्त

साहितनै सिवराज भूषन सुजस तव बिगिरि कलंक चन्द्र उर आनियतु है। पंचानन एक ही बदन गनि तोहि गजानन गजबदन बिना बखानियतु है ॥ एक सीस ही सहससीस कला करिबे को दुहूँ दृग सों सहसदृग मानियतु है। दुहूँ कर सों सहसकर मानियतु तोहिं दुहूँ बाहु सों सहसबाहु जानियतु है ॥ ६५ ॥

भूषण कहता है, हे शाहजी के पुत्र शिवराज, तेरा सुयश जो है, वह विना कलंक का चन्द्रमा है, ऐसा मैं हृदय में लाता हूँ—समझता हूँ। तू एक ही मुख का पंचानन ( सिंह या महादेव ) है। तुझे गज के मुख से रहित गजानन ( गणेश ) कहता हूँ। तेरे एक ही शिर है, पर तू सहस्र शिरवाले शेषनाग का काम करता है, अर्थात् पृथ्वी को धारण किए हुए है। तू दो नेत्रों से ही

---

* अफ़ज़लख़ाँ का ज़िक्र इस ग्रंथ में प्रायः आया है। इसने यह चालाकी की थी कि युद्ध के पहले ही शिवाजी को बुला भेजा कि वह आकर बातचीत कर लें; अगर मित्रभाव से मामला तय न हो, तो फिर युद्ध किया जाय। ख़ाँ ने शिवाजी के पिता की मित्रता का दावा करके यह ढोंग रचा था, और मतलब यह था कि अकेले निरस्त्र शिवाजी को धोखे से मारकर आसानी से विजय प्राप्त कर ले। शिवाजी यवनों की चालाकी और दग़ाबाज़ी को अच्छी तरह जानते थे, अतः कपड़ों के नीचे लोहे का कवच पहनकर और बघनखा शस्त्र छिपाकर गए। अफ़ज़ल ने शिवाजी को दुश्चित्त जानकर पहले वार कर दिया। वार लोहे के कवच पर व्यर्थ गया। तब शिवाजी ने इसी बघनखे से उसका पेट फाड़ डाला। वह मर गया और उसकी सेना नष्ट-भ्रष्ट हो गई। यह घटना सन् १६५९ ई० में हुई थी।

सहस्र नेत्रोंवाले इन्द्र के समान है। तू दो ही हाथोंवाला सहस्रकर ( सूर्य ) है, और दो ही बाहुओं के रहने पर भी सहस्रबाहु अर्जुन-सा प्रतापी है। ऐसा मैं जानता हूँ ॥ ६५ ॥

तथा

जेते हैं पहार भुव पारावार माहिं तिन सुनि के अपार कृपा गहे सुख फैल है। भूषन भनत साहितनै सरजा के पास आइबे को चढ़ी उर हौसन की ऐल है ॥ किरबान बज्र सों बिपच्छ करिबे के डर आनिकै कितेकौ आये सरन की गैल है। मघवा मही मैं तेजवान सिवराज बीर कोटकरि सकल सपच्छ किए सैल है ॥ ६६ ॥

पृथ्वी और सागर में जितने पहाड़ हैं, उन्होंने ( तेरी ) अपार कृपा सुनकर बड़ा सुख प्राप्त किया है। भूषण कहता है, शाहि के पुत्र सरजा शिवा के पास आने को उनके हृदय में बड़ी प्रबल हौस ( इच्छा ) उमड़ रही है। [ इंद्र ने पर्वतों के पक्ष ( पंख ) काट डाले हैं, यह प्रवाद है। ] खड्ग और वज्र से अपने विपक्ष ( पंखों से हीन, दूसरे अर्थ में असहाय—अनाथ ) कर डालने का डर हृदय में लाकर कितने ही पर्वतों ने तेरी शरण की राह पकड़ी है। कारण, पृथ्वी पर के इन्द्र तेजस्वी वीर शिवराज ने गढ़ बनवाकर कितने ही पहाड़ों को सपक्ष ( पंख-सहित, दूसरे अर्थ में सनाथ ) कर दिया है ॥ ६६ ॥

## परिणाम

लक्षण—दोहा

जहँ अभेद करि दुहुन सों करत और से काम।
भनि भूषन सब कहत हैं तासु नाम परिनाम ॥ ६७ ॥

जहाँ उपमान और उपमेय में भेद न रखकर उपमेय की क्रिया का उपमान के द्वारा किया जाना कहा जाय, उस अलंकार का नाम परिणाम है ॥ ६७ ॥

उदाहरण—सवैया

भूषन तीखन तेज तरन्नि सों बैरिन को कियो पानिप हीनो।
दारिद दौ करि बारिद सों दलि त्यों धरनीतल सीतल कीनो ॥
भौंसिला भूप बली भुव को भुज भारी भुजंगम सों भरु लीनो।
साहितनै कुलचन्द सिवा जस चन्द सों चन्द कियो छबि छीनो ॥ ६८ ॥

भूषण कहता है, उसके सूर्य के समान तेज ने वैरियों को पानी ( मान ) से हीन कर दिया है। उसने मेघ-जैसे ( दान में दिए गए ) हाथियों के मदजल से ( याचकों अथवा कवि आदि गुणियों के ) दारिद्र्य-दावानल को बुझाकर पृथ्वीतल को शीतल कर दिया है। भौंसिला-भूप बली शिवाजी ने शेषनाग के समान अपनी भुजा पर पृथ्वी का भारी भार ले लिया है। शाहि के पुत्र कुलचंद्र शिवाजी ने अपने यश के चंद्रमा से चंद्रमा की छवि को क्षीण कर दिया है॥ ६८॥

तथा—कवित्त

वीर बिजैपुर के उजीर निसिचर गोलकुंडावारे घूघू ते उड़ाए हैं जहान सों। मन्द करी मुख रुचि चन्द चकता की कियो भूषन भुषित द्विज चक्र खान पान सों॥ तुरकान मलिन कुमुदिनी करी है हिन्दुवान नलिनी खिलायो बिबिध बिधान सों। चारु सिव नाम को प्रतापी सिव साहि सुव तापी सब भूमि यों कृपान भासमान सों॥ ६९॥

भूषण कहता है, शिव नाम के प्रतापी शाहि के पुत्र शिवाजी ने भासमान ( सूर्य के समान प्रकाशमान ) तलवार से इस प्रकार सारी पृथ्वी को तपाया कि बीजापुर के वीर वज़ीर को निशिचर ( रात को घूमनेवाले जीवजन्तु तथा राक्षस ) और गोलकुंडावालों को घुग्घू ( वह पक्षी, जिसे रात को नहीं सूझता ) के समान जहान से उड़ा दिया, चकत्ता ( औरंगज़ेब ) के मुख-चन्द्र की कान्ति मन्द कर दी, ब्राह्मणरूप चक्रवाकों को खान-पान के दान से प्रसन्न कर दिया, कुमुदिनी ( कोकाबेली ) के समान तुर्कों को मलिन कर दिया और अनेक भाँति से कमलों के समान हिन्दुओं को प्रफुल्लित बनाया॥ ६९॥

## उल्लेख

लक्षण—दोहा

कै बहुते कै एक जहँ एक बस्तु को देखि।
बहु बिधि कर उल्लेख हैं सो उल्लेख उलेखि॥ ७०॥

बहुत या एक वस्तु को देखकर उसका जहाँ बहुत प्रकार से उल्लेख अर्थात् वर्णन किया जाय, वहाँ उल्लेख अलंकार होता है॥ ७०॥

उदाहरण—सवैया

एक कहैं कल्पद्रुम है इमि पूरत है सबकी चित चाहै।
एक कहैं अवतार मनोज को यों तन मैं अति सुन्दरता है॥

भूषन एक कहैं महि इन्दु यों राज बिराजत बाढ़्यो महा है।
एक कहै नरसिंह है संगर एक कहै नरसिंह सिवा है ॥७१॥

कोई कहते हैं, शिवाजी सबके चित्त की चाह ( कामना ) पूर्ण करता है, इसलिये कल्पवृक्ष है। कोई कहते हैं, वह कामदेव का अवतार है, उसके शरीर में ऐसी सुन्दरता है। कोई कहते हैं, वह पृथ्वी का इंद्र है; क्योंकि उसका राज्य चारों ओर इन्द्र के समान बढ़ रहा है। भूषण कहता है, कोई कहते हैं, वह युद्धभूमि में मनुष्य-सिंह है और कोई कहते हैं, वह साक्षात् नरसिंह का अवतार है॥ ७१॥

तथा—कवित्त

कवि कहैं करन करनजीत कमनैत, अरिन के उर माहिं कीन्ह्यो इमि छेव है। कहत धरेस सब धराधर सेस ऐसो और धराधरन को मेट्यो अहमेव है॥ भूषन भनत महाराज सिवराज तेरो राजकाज देखि कोऊ पावत न भेव है। कहरी यदिल मौज लहरी कुतुब कहै बहरी निजाम के जितैया कहैं देव है॥ ७२॥

कवि लोग कहते हैं, शिवाजी कर्ण के समान ( दानी ) है। धनुर्द्धर लोग कर्ण को उसे जीतनेवाले अर्जुन के समान ( पराक्रमी ) कहते हैं; क्योंकि उसने शत्रुओं के हृदय में ऐसा गहरा घाव कर दिया है। राजा लोग उसे धराधर शेषनाग-सा कहते हैं; क्योंकि उसने और धराधर ( पृथ्वीपति ) राजों का अहंकार मिटा दिया है। भूषण कहता है, हे महाराज शिवराज, तेरे राजकाज को देखकर कोई ठीक-ठीक तेरा भेद नहीं जान पाता। आदिलशाह तुझे कहरी ( आफ़त ढानेवाला ) कहता है, क़ुतुबशाह तुझे लहरी या मनमौजी कहता है और निज़ाम को जीतनेवाला होने के कारण बहरी ( बाहरी ) लोग तुझे देव कहते हैं॥ ७२॥

तथा

पैज प्रतिपाल भूमि भार को हमाल चहूँ चक्क को अमाल भयो दण्डक जहान को। साहिन को साल भयो ज्वाल को जवाल भयो हर को कृपाल भयो हार के बिधान को॥ बीर रस ख्याल सिवराज भुवपाल तुव हाथ को बिसाल भयो भूषन बखान को। तेरो करबाल भयो दच्छिन को ढाल भयो हिन्दु को दिवाल भयो काल तुरकान को॥ ७३॥

भूषण कहता है, हे शिवराज भूपाल, तेरा खड्ग पैज ( प्रतिज्ञा ) को पालनेवाला, भूमि-भार के लिये हमाल ( बोझ उठानेवाला ), चारों चक्र ( पृथ्वी के चारों छोरों ) का अमाल ( आमिल=

अमल करनेवाला या हाकिम ) और जहान का शासन करनेवाला हुआ। वह खड्ग शाहों को सालनेवाला, ज्वाला का जवाल तथा मुंडमाला जुटाने के कारण रुद्र के लिये कृपालु हुआ। वह वीर-रस का आगार तेरा खड्ग तेरे बाहुओं के बल को बढ़ानेवाला है। उसका बखान कौन कर सकता है? वह दक्षिण देश के लिये ढाल, हिंदुओं के लिये दीवाल और तुर्कों के लिये काल हुआ ॥७३॥

## स्मृति

लक्षण—दोहा

सम सोभा लखि आन की सुधि आवत जेहि ठौर।
स्मृति भूषन तेहि को कहत भूषन कबि-सिरमौर ॥ ७४ ॥

एक-सी शोभा देखकर जहाँ वैसी ही दूसरी वस्तु का स्मरण हो आवे, वहाँ कविवर स्मृति अलंकार कहते हैं ॥ ७४ ॥

उदाहरण—कवित्त

तुम सिवराज ब्रजराज अवतार आज तुमही जगत काज पोषत भरत हौ। तुम्हें छाँड़ि याते काहि बिनती सुनाऊँ मैं तिहारे गुन गाऊँ तुम ढील क्यों धरत हौ॥ भूषन भनत वहि कुल मैं नयो गुनाह नाहक समुझि यह चित्त हि हरत हौ। और बाम्हननि देखि करत सुदामा सुधि मोहिं देखि काहे सुधि भृगु की करत हौ ॥ ७५ ॥

हे शिवराज, तुम आज पृथ्वी पर श्रीकृष्ण का अवतार हो। तुम्हीं संसार का काम चलाने या उसका पालन-पोषण करते हो। इसलिये तुम्हें छोड़कर मैं किसे विनती सुनाऊँ? मैं तुम्हारे गुण गाता हूँ। तुम ढीले या शिथिल क्यों पड़ते हो? भूषण कहता है, उस ब्राह्मण-कुल में उत्पन्न हुआ जानकर व्यर्थ ही मेरी ओर से गुनाह ( अपराध ) होने की बात मन में लाते हो। और ब्राह्मणों को देखकर सुदामा की याद करते हो फिर मुझे देखकर क्यों भृगु की सुध करते हो? ( भृगु ने विष्णु के हृदय में लात मारी थी, यह कथा पुराणों में प्रसिद्ध है ) ॥ ७५ ॥

## भ्रम

लक्षण—दोहा

आन बात को आन मैं होत जहाँ भ्रम आय।
तासों भ्रम सब कहत हैं भूषन सुकवि बनाय ॥ ७६ ॥

और बात में और बात का जहाँ भ्रम हो, वहाँ भ्रम अलंकार होता है ॥ ७६ ॥

उदाहरण—सवैया

पीय पहारन पास न जाहु यों तीय बहादुर सों कह सोषें।
कौन बचैहै नवाब तुम्हैं भनै भूषन भौंसिला भूप के रोषें॥
बन्दि साइस्ताखाँ हू को किया जसवन्त से भाऊ करन्न से दोषें।
सिंह सिवा के सुबीरन सों गो अमीर न बाँचि गुनी जन घोषें॥७७॥

भूषण कहता है, बहादुरखाँ* से उसकी स्त्रियाँ क़सम धराकर यों कहती हैं कि हे प्यारे, पहाड़ों ( शिवाजी के राज्य ) के पास न जाओ। ऐ नवाब, भौंसला-भूप शिवाजी के क्रोध करने पर तुमको कौन बचावेगा? उसने शाइस्ताखाँ को क़ैद कर लिया और यशवन्तसिंह, भाऊसिंह तथा कर्णसिंह-जैसे वीर उससे डरते हैं, अथवा ( भिड़ने के कारण ) उक्त वीर शाइस्ताखाँ को दोष देते हैं। गुणीजन कहते हैं कि शिवराजसिंह के वीरों से ( सामना करके ) कोई अमीर-उमरा नहीं बचा॥ ७७॥

## सन्देह

लक्षण—दोहा

कै यह कै वह यों जहाँ होत आनि सन्देह।
भूषन सो सन्देह है यामैं नहिं सन्देह॥ ७८॥

यह है अथवा वह, इस तरह का जहाँ सन्देह होता है, वहाँ भूषण कहता है कि सन्देह अलंकार है, इसमें सन्देह नहीं॥ ७८॥

उदाहरण—कवित्त

आवत गुसुलखाने ऐसे कछू त्योर ठाने जाने अवरंगजू के प्रानन को लेवा है। रस खोट भये ते अगोट आगरे में सातौ चौकी डाँकि आनि घर कीन्हीं हद रेवा है॥ भूषन भनत वह चहूँ चक्क चाहि कियो पातसाहि चकता की छाती माहिं छेवा है। अन्यो न परत ऐसे काम है करत कोऊ गंधरब देवा है कि सिद्ध है कि सेवा है॥ ७९॥

शिवाजी ने क्रोध करके गुसलख़ाने में ( औरंगज़ेब के भागकर छिपने पर ) ऐसी कुछ त्योरियाँ बदलीं कि औरंगज़ेब ने जाना, यह मेरे प्राणों का लेनेवाला है। रसभंग होने से शिवाजी ने आगरे में सुरक्षित सातों चौकियाँ नाँघकर नर्मदा की सीमा को अपना घर बनाया, अर्थात् आगरे

---

* यह दक्खिन का सूबेदार था।

से चलकर नर्मदा पर आकर ठहरे। भूषण कहता है, शिवाजी ने पृथ्वी के चारों छोरों के राज्य को प्राप्त करने की इच्छा करके चकत्ता बादशाह औरंगजेब की छाती में छेरा-सा लगाया, अर्थात् घाव कर दिया। जान नहीं पड़ता, ऐसे काम करनेवाला शिवाजी कोई गन्धर्व है, देव है या सिद्ध है ॥ ७९ ॥

## शुद्धापन्हुति

लक्षण—दोहा

**आन बात आरोपिये साँची बात दुराय।**
**शुद्धापन्हुति कहत हैं भूषन सुकबि बनाय ॥ ८० ॥**

सच्ची बात को छिपाकर जहाँ और ही बात का आरोप किया जाय, उसे सुकवि भूषण शुद्धापन्हुति अलंकार कहते हैं ॥ ८० ॥

उदाहरण—कवित्त

**चमकतीं चपला न फेरत फिरंगैं भट इन्द्र को न चाप रूप बैरख समाज को। धाए धुरवा न छाए धूरि के पटल मेघ गाजिबो न बाजिबो है दुंदुभि दराज को ॥ भौंसिला के डरन डरानी रिपुरानी कहैं पिय भजौ देखि उदौ पावस के साज को। घन की घटा न गज घटनि सनाह साज भूषन भनत आयो सैन सिवराज को ॥ ८१ ॥**

ये बिजली नहीं चमकतीं, भटलोग फिरंगें ( किर्चें ) फिरा रहे हैं। यह इन्द्र का धनुष नहीं है, झंडे फहरा रहे हैं। ये धुरवा ( मेघ ) नहीं दौड़ रहे हैं, आकाश में धूल छाई हुई है। ये मेघ नहीं गरज रहे हैं, नगाड़े बजते हैं। भूषण कहता है, भोंसला शिवाजी के डर से डरी हुई शत्रुओं की स्त्रियाँ पावस का उदय देखकर कहती हैं कि हे प्रिय! भागो, ये घन की घटा नहीं, हाथियों पर सवार लौहकवचों से सुसज्जित शिवराज की सेना आई है ॥ ८१ ॥

## हेतु-अपन्हुति

लक्षण—दोहा

**जहाँ जुगुति सों आनको कहिए आन छपाय।**
**हेत अपन्हुति कहत हैं ताकहँ कबि-समुदाय ॥ ८२ ॥**

जहाँ युक्ति से किसी बात को छिपाकर और का और ही बताइए, वहाँ सुकवि-समुदाय हेतु-अपन्हुति अलंकार कहते हैं ॥ ८२ ॥

उदाहरण—दोहा

सिव सरजा के कर लसै सो न होय किरवान।
भुज भुजगेश भुजंगिनी भखति पौन अरि प्रान॥ ८३॥

सरजा शिवाजी के हाथ में लसनेवाली कृपाण नहीं है, यह भुजारूप नागराज की नागिन है, जो शत्रुओं के प्राणरूपी पवन को खाकर रहती है॥ ८३॥

उदाहरण—कवित्त

भाखत सकल सिवजी को करवाल पर भूषन कहत यह करि कै विचार को। लीन्हो अवतार करतार के कहे ते काल म्लेच्छन हरन उद्धरन भुवभार को॥ चंडी ह्वै घुमंडी अरि चंड मुंड चाबि करि पीवत रुधिर कछु लावत न बार को। निज भरतार भूत भूतन की भूख मेटि भूषित करत भूतनाथ भरतार को॥ ८४॥

सब लोग कहते हैं, यह शिवाजी की तलवार है; पर भूषण विचार करके यह कहता है कि ब्रह्मा के कहने से काल ने म्लेच्छों को मारकर पृथ्वी का उद्धार करने के लिये यह अवतार लिया है*। यह तलवार चंडी होकर (काली बनकर) शत्रुरूपी चंड-मुंड (दानवों) को चबाती है (दूसरा अर्थ यह भी निकलता है कि प्रचंड शत्रुओं के मुंड चबाती है) और उनका रुधिर पीने में देर नहीं लगाती। यह अपने भर्ता (पति) रुद्र और भूतों की भूख मिटाकर शंकर को मुंडमालाओं से भूषित करती है॥ ८४॥

## पर्यस्तापन्हुति

लक्षण—दोहा

बस्तु गोय ताको धरम आन बस्तु में रोपि।
पर्यस्तापन्हुति कहत कबि भूषन मति ओपि॥ ८५॥

किसी वस्तु को छिपाकर जहाँ उसके धर्म का आरोप अन्य वस्तु में करते हैं, वहाँ कविलोग पर्यस्तापन्हुति अलंकार कहते हैं॥ ८५॥

---

* हिन्दी-मन्दिर की प्रति में 'कलि' पाठ है। फुटनोट में इसका अर्थ 'कलियुग' लिखा है। पर यह ठीक नहीं प्रतीत होता। कलियुग का काम म्लेच्छों को मारकर पृथ्वी का भार उतारना नहीं है। बल्कि इसके विपरीत है। इससे हमने 'काल' रक्खा है। काल आने पर ही पृथ्वी का भार उतरता है।—टीकाकार

उदाहरण

काल करत कलिकाल में नहिं तुरकन को काल।
काल करत तुरकान को सिव सरजा करबाल॥ ८६॥

कलिकाल में काल जो है, वह तुर्कों को नहीं मारता, बल्कि सरजा शिवाजी की तलवार तुर्कों को मारती है॥ ८६॥

उदाहरण—कवित्त

तेरे ही भुजन पर भूतल को भार कहिबे को सेसनाग दिगनाग हिमाचल है। तेरो अवतार जग पोसन भरनहार कछु करतार को न तामधि अमल है॥ साहि तनै सरजा समत्थ सिवराज कबि भूषन भनत जीबो तेरोई सफल है। तेरो करबाल करै म्लेच्छन को काल बिन काज होत काल बदनाम धरातल है॥ ८७॥

हे शिवाजी, तेरी ही भुजाओं पर पृथ्वी का भार है, शेषनाग, दिग्गज और हिमाचल तो कहने भर को (पृथ्वी का भार धारण करनेवाले) हैं। तेरा अवतार जगत् का पालन और पोषण करता है, उसमें कर्तार का कुछ अमल-दखल नहीं है। हे शाहि के पुत्र समर्थ सरजाह शिवाजी, भूषण कवि कहता है, तेरा ही जीना सफल है। तेरी तलवार म्लेच्छों को मारती है, काल तो पृथ्वी पर बेकार ही (उन्हें मारने के लिये) बदनाम होता है॥ ८७॥

भ्रान्तापन्हुति

लक्षण—दोहा

सङ्क आन को होत ही जहँ भ्रम कीजे दूरि।
भ्रान्तापन्हुति कहत हैं तेहि भूषन कबिभूरि॥ ८८॥

जहाँ और किसी बात की शंका होते ही वह भ्रान्ति दूर की जाय, वहाँ भ्रान्तापन्हुति अलंकार कहलाता है॥ ८८॥

उदाहरण—कवित्त

साहि तनै सरजा के भय सों भगाने भूप मेरु में लुकाने ते लहत जाय ओत हैं। भूषन तहाँऊ मरहटपति के प्रताप पावत न कल अति कौतुक उदोत हैं। "सिव आयो सिव आयो" संकर के आगमन सुनिकै

परान ज्यों लगत अरि गोत हैं। सिव सरजा न यह सिव है महेस करि
ऐसे उपदेस जच्छ रच्छक से होत हैं॥ ८९॥

शाहि के पुत्र सरजा के भय से भागे हुए भूप सुमेरु पर जाकर छिपने पर विश्राम पाते हैं। भूषण कहता है, पर मराठों के पति के प्रताप से वहाँ भी उन्हें कल नहीं मिलती। बड़ा कौतुक होता है। वहाँ शंकर के आने पर "शिव आए, शिव आए" ये शब्द सुनकर शत्रुगण वहाँ से भी (शिवाजी के आने की आशंका से) भागने लगते हैं। तब यक्ष लोग यह कहकर कि "यह सरजा शिवाजी नहीं, शिव महादेव हैं" उनके रक्षक से होते हैं॥ ८९॥

उदाहरण—सवैया

एक समै सजि कै सब सैन सिकार को आलमगीर सिधाए।
आवत है सरजा सँभरौ इक ओर ते लोगन बोल जनाए॥
भूषन भो भ्रम औरँग के सिव भौंसिला भूप की धाक धुकाए।
धायकै सिंह कह्यो समुझाय करौलनि आय अचेत उठाए॥ ९०॥

एक समय सब सेना सजाकर आलमगीर औरंगज़ेब शिकार को चला। एक ओर से कुछ (शिकारी) लोगों ने ये शब्द सुनाए कि "सरजा (शिवाजी, पक्षान्तर में सिंह) आता है, सँभलो"। तब औरंगज़ेब को यह भ्रम हुआ कि सरजा शिवाजी आ गए, और भौंसिला-भूप की धाक (आतंक) से उसका कलेजा धड़क उठा (तथा वह मूर्च्छित होगया)। उस समय अन्य शिकारी साथियों ने दौड़कर समझाया कि सिंह आया है, और उन्होंने अचेत बादशाह को उठाया॥९०॥

## छेकापन्हुति

लक्षण—दोहा

जहाँ और को संक करि साँच छिपावत बात।
छेकापन्हुति कहत हैं भूषन कबि अवदात॥ ९१॥

जहाँ और बात की शंका करके सच्ची बात छिपाई जाती है, वहाँ भूषण कहता है कि कवि लोग छेकापन्हुति अलंकार कहते हैं॥ ९१॥

उदाहरण

तिमिरबंसहर अरुनकर आयो सजनी भोर।
सिव सरजा चुप रहि सखी सूरजकुल सिरमौर॥ ९२॥

एक सखी दूसरी से कहती है—सजनी, तिमिर ( सूर्य के पक्ष में अँधेरा, शिवाजी के पक्ष में तैमूरलंग बादशाह ) के वंश को हरनेवाला और अरुण अर्थात् लाल कर ( सूर्य के पक्ष में किरणें, शिवाजी के पक्ष में मुग़लों के रक्त से लाल हाथ ) वाला, कुल-सिरमौर सवेरे आया। दूसरी पूछती है—कौन, सरजा शिवाजी ? पहली कहती है—चुप रह सखी। शिवाजी नहीं, सूर्य ॥ ९२ ॥

तथा

दुरगहि बल पंजन प्रबल सरजा जिति रन मोहिं।
औरँग कहै दिवान सों सपन सुनावत तोहिं ॥ ९३ ॥
सुनि सु उजीरन यों कह्यो सरजा सिव महराज।
भूषन कहि चकता सकुचि नहिं सिकार मृगराज ॥ ९४ ॥

औरंगज़ेब अपने दीवान से कहता है, मैं तुझे स्वप्न सुनाता हूँ कि दुर्गहि-बल अर्थात् अपने गढ़ के बल से ( शिवा के पक्ष में दुर्गा ही के बल से ), प्रबल पंजोंवाले सरजा ( शेर, दूसरा अर्थ शिवाजी ) ने रण में मुझे जीत लिया। यह सुनकर वज़ीर ने यों कहा—क्या सरजा शिवाजी महाराज ने ? भूषण कहता है, तब चकत्ता औरंगज़ेब ने सकुचकर कहा—नहीं जी, शिकार में मृगराज ने ॥ ९३–९४ ॥

## कैतवापन्हुति

लक्षण—दोहा

जहँ कैतव छल ब्याज मिसि इनसों होत दुराव।
कहत कैतवापन्हुतिहि भूषन कहि सतिभाव ॥ ९५ ॥

जहाँ कैतव ( कपट ), छल, व्याज, मिस ( बहाने ) आदि से बात छिपाई जाय, उसे कैतवापन्हुति कहते हैं ( इस अलंकार में कैतव, मिस आदि शब्द अवश्य प्रयुक्त होते हैं ) ॥ ९५ ॥

उदाहरण—कवित्त

साहिन के सिच्छक सिपाहिन के पातसाह संगर मैं सिंह के से जिनके सुभाव हैं। भूषन भनत सिव सरजा की धाक ते वै काँपत रहत चित्त गहत न चाव हैं ॥ अफजल की अगति सासता की अपगति बहलोल बिपति सों डरे उमराव हैं। पक्का मतो करिकै मलिच्छ मनसब छोंड़ि मक्का ही के मिस उतरत दरियाव हैं ॥ ९६ ॥

जो लोग शाहों के शिक्षक, सिपाहियों के बादशाह हैं और समर में सिंह का-जैसा जिनका

स्वभाव है, भूषण कहता है, सरजा शिवाजी की धाक से वे भी काँपते रहते हैं, उनके चित्त में उत्साह नहीं होता। अफ़ज़लखाँ की दुर्दशा, शाइस्ताखाँ की दुर्गति और बहलोलखाँ * की विपत्ति से उमरालोग डर गए। पक्की राय करके सब म्लेच्छ अपने शाही मनसबों को छोड़कर मक्का जाने ही के बहाने समुद्र के पार उतर जाते हैं (जिसमें शिवाजी से जान बचे)॥ ९६॥

## उत्प्रेक्षा

### लक्षण—दोहा

आन बात को आन में जहँ सम्भावन होय।
बस्तु हेतु फल जुत कहत उत्प्रेक्षा है सोय॥ ९७॥

और बात की और बात में जहाँ संभावना हो, उसे उत्प्रेक्षा अलंकार कहते हैं। इसके तीन भेद हैं—एक वस्तूत्प्रेक्षा, दूसरी हेतूत्प्रेक्षा और तीसरी फलोत्प्रेक्षा होती है॥ ९७॥

## वस्तूत्प्रेक्षा

### उदाहरण—सवैया

दानव आयो दगा करि जावली दीह भयारो महामद भार्यो।
भूषन बाहुबली सरजा तेहि भेंटिबे को निरसंक पधार्यो।
बीछू के घाय गिरे अफजल्लहि ऊपर ही सिवराज निहार्यो।
दाबि यों बैठ्यो नरिन्द अरिन्दहि मानो मयन्द गयन्द पछार्यो॥ ९८॥

जावली (वह स्थान, जहाँ शिवाजी ने अफ़ज़लखाँ को मारा था) में दानव (अफ़ज़लखाँ) दगा करने को आया, जो लंबा-चौड़ा भयावना और बड़ा घमंडी था। भूषण कहता है, बाहुबल से युक्त शिवाजी बिना किसी शंका के—बेखटके—उससे मिलने को पधारे—गए। बिच्छू (एक शस्त्र) के घाव को खाकर जब अफ़ज़लखाँ गिरा, तो शिवाजी उसके ऊपर ही देख पड़े। वह नरेन्द्र अपने श्रेष्ठ शत्रु को नीचे दबाकर इस तरह बैठे, जैसे शेर ने हाथी को पछाड़ दिया॥ ९८॥

साहि तनै सिव साहि निसा में निसाँक लियो गढ़ सिंह सोहानो।
राठिवरो को सँहार भयो लरिकै सरदार गिर्यो उदैभानो॥

---

* बहलोलखाँ सन् १६६१ में बीजापुर की तरफ़ से शिवाजी से युद्ध करने गया था। पर सेनापति शीदी जौहर से बीजापुर के अधिकारियों से बिगाड़ हो गया। अतः यह शीदी को परास्त करने में लग गया और सफल हुआ। फिर सन् १६७३ में वज़ीर ख़वासख़ां के भेजने से यह शिवाजी से युद्ध करने गया। मराठों की सेना ने इसे बहुत दिक़ किया। इसने सन् १६७५ में ख़वासख़ां की हत्या करा डाली और आप बीजापुर के नाबालिग़ बादशाह का रक्षणावेक्षण करनेवाला बन गया। सन् १६७७ में कुतुबशाह से युद्ध करने की इसने तैयारी की थी। पर इसे शिकस्त खानी पड़ी और १६७८ सन् में इसकी मृत्यु हो गई।

**भूषन यों घमसान भो भूतल घेरत लोथनि मानो मसानौ।**
**ऊँचे सुछज्ज छटा उचटी प्रगटी परभा परभात की मानौ ॥ ९९ ॥**

शाहि के पुत्र शिवशाह ने रात को निश्शंक होकर सुहावना सिंहगढ़* ले लिया। राठौर क्षत्रियों की सेना का संहार हुआ और लड़कर सरदार उदयभानु गिर गया। भूषण कहता है, ऐसा घमासान संग्राम हुआ कि लाशों से पटकर वहाँ की पृथ्वी मसान-सी मालूम पड़ने लगी। ( क़िले में आग लगाने से अथवा लोथों के रक्त से ) ऊँचे छज्जों पर उसकी ऐसी छटा छिटकी कि जान पड़ा, मानों प्रातःकाल की प्रभा ( लाली ) प्रकट हुई है ॥ ९९ ॥

तथा—कवित्त

**दुरजनदार भजि भजिबे सम्हार चढ़ीं उत्तर पहार डरि सिवाजी नरिन्द ते। भूषन भनत बिन भूषन बसन साधे भूखन पियासन हैं नाहन को निन्दते ॥ बालक अयाने बाट बीच ही बिलाने कुम्हिलाने मुख कोमल अमल अरबिन्द ते। दृग जल कज्जल कलित बढ्यो कढ्यो मानो दूजा सोत तरनितनूजा को कलिन्द ते ॥ १०० ॥**

दुष्ट शत्रुओं की नारियाँ भाग-भागकर शिवाजी नरेश के भय से बेसँभाल होकर उत्तर के पहाड़ पर चढ़ चलीं। भूषण कहता है, वे गहनों और वस्त्रों के बिना, भूख और प्यास को सहती हुई, अपने पतियों की निन्दा करती जाती थीं। छोटे-छोटे नासमझ बच्चे उनके राह में ही मर गए या खो गए। उन स्त्रियों के कमलों से भी कोमल मुख कुम्हला गए। काजल से मिले हुए आँसुओं की धारा उनके नेत्रों से ऐसी बही कि जान पड़ा, जैसे कलिन्द पर्वत से यमुना का दूसरा प्रवाह उमड़ चला ॥ १०० ॥

---

* सिंहगढ़ को पहले कोंडाने कहते थे। इस बहुत मज़बूत क़िले को शिवाजी ने सन् १६४७ में प्राप्त किया था। १६६५ में शिवाजी को दबकर यह क़िला जयपुर के राजा मिर्ज़ा जयसिंह को दे देना पड़ा था। महावीर उदयभानु राठौर इस क़िले का रक्षक था। इस क़िले को हस्तगत करने के लिये शिवाजी ने फिर चेष्टा की। इस क़िले को उदयभानु से लेने का बीड़ा शिवाजी के दाहने हाथ परमपराक्रमी तानाजी ने उठाया। तानाजी ने अपने भाई का समझाना नहीं माना और चढ़ाई करने को तैयार हो गया। उदयभानु के पराक्रम को जाननेवाला तानाजी का भाई ( सुरजाजी ) भी भाई के साथ गया। रात को दोनों भाइयों ने क़िले पर छापा मारा। २-३ सौ मराठों के साथ उक्त दोनों भाई क़िले के अंदर पहुँच गए। मालूम होने पर वीर उदयभानु भी तुरन्त सेना लेकर भिड़ गया। घोर समर के उपरान्त उदयभानु के सिपाहियों के पैर उखड़ गए। द्वन्द्व युद्ध की नौबत आई। तानाजी इस युद्ध में उदयभानु के हाथों मारा गया। अन्त को भाई के शोक से व्याकुल वीर सुरजाजी उदयभानु से लड़ा और उसने उदयभानु को मार डाला। तानाजी की मृत्यु से शिवाजी को बड़ा दुःख हुआ, और क़िला मिलने से उन्हें अधिक प्रसन्नता नहीं हुई। यह घटना सन् १७२५ की है।

तथा—दोहा

महाराज सिवराज तुव सुघर धवल धुव किात्ति।
छबि छटानि सौं छुवति सी छिति अंगन दिगभित्ति ॥ १०१ ॥

हे महाराज शिवराज, तुम्हारी उज्ज्वल, धवल, सुन्दर कीर्ति अपनी छवि की छटाओं से ब्रह्माण्डरूप घर के पृथ्वीरूप आँगन और दसो दिशारूप दीवारों को छूती-सी है ( अर्थात् सारी पृथ्वी और दसो दिशाओं में व्याप्त है ) ॥ १०१ ॥

## हेतूत्प्रेक्षा

उदाहरण—कवित्त

लूट्यो खान दौरा जोरावर सफजंग अरु लह्यो मार तलबखाँ मानहुँ अमाल है। भूषन भनत लूट्यो पूना में सइस्तखान गढ़न में लूट्यो त्यों गढ़ोइन को जाल है॥ हेरि हेरि कूटि सलहेरि बीच सरदार घेरि घेरि लूट्यो सब कटक कराल है। मानो हय हाथी उमराव करि साथी अवरंग डरि सिवाजी पै भेजत रिसाल है॥ १०२ ॥

ख़ानदौरा* को लूटा, ज़ोरावरख़ाँ, सफ़दरजंग† और तलबख़ाँ‡ ने मार पाई। तलबख़ाँ ने अमाल ( आमिल=हाकिम ) होने की हैसियत से मानों भेंट में मार पाई। भूषण कहता है, पूने में शाइस्ताख़ाँ को लूटा। गढ़ों में छोटे-छोटे गढ़ों को लूट लिया। सलहेरि गढ़ के बीच खोज-खोजकर सब सरदारों को कुचलकर घेर-घेर कर सारी विकराल शाही सेना को लूटा। मानों औरंगज़ेब घोड़े, हाथी और उमरा साथ करके शिवाजी के पास ( युद्ध के लिये सेना नहीं ) ख़िराज ( कर ) भेजता है॥ १०२ ॥

## फलोत्प्रेक्षा

उदाहरण

जाहि पास जात सो तौ राखि ना सकत याते तेरे पास अचल सुप्रीति नाधियतु है। भूषन भनत सिवराज तव कित्ति सम और की न कित्ति कहिबे को काँधियतु है॥ इन्द्र को अनुज तैं उपेंद्र अवतार

* ख़ानदौरा का नाम नौशेरीख़ाँ था, ख़ानदौरा उपाधि इसे मिली थी। यह सन् १६३४ में दक्षिण का सूबेदार बनाया गया था। बीजापुर की रियासत से लड़कर इसने बादशाह को लाभ पहुँचानेवाली सुलह की थी। प्रयाग का क़िला जीतने को भी यह बादशाह की ओर से भेजा गया था।

† सफ़दरजंग शाही सरदार था। छत्रसाल महाराज से भी इसने युद्ध किया था।

‡ तलबख़ाँ भी एक सरदार था। इतिहास में इसका और ज़ोरावरख़ाँ का उल्लेख नहीं मिलता।

याते तेरो बाहुबल लै सलाह साधियतु है। पाँय तर तिन्हैं नित निडर बसायबे को कोट बाँधियतु मानो पाग बाँधियतु है॥ १०३॥

जिसके पास जाते हैं, वह तो रख नहीं सकता, रक्षा नहीं कर सकता, इससे तेरे पास (तेरी शरण में) अचल जो पहाड़ हैं, वे प्रीति को बाँधते हैं। भूषण कहता है, हे शिवराज, तेरी कीर्ति के समान और किसी की कीर्ति नहीं कही जा सकती। तू इन्द्र के छोटे भाई उपेन्द्र (वामन) का अवतार है, इसी से तेरे बाहुबल का सहारा लेने की (पर्वत) सलाह करते हैं (क्योंकि इन्द्र के भय से भीत हैं। कारण, इन्द्र ने कुपित होकर पहाड़ों के पंख वज्र से काट डाले थे)। वे जब तेरे चरणों के तले (शरण में) आते हैं, तब तू उन्हें निडर होकर रहने को कोट (गढ़) नहीं उन पर बनवाता, उनके सिर पर पगड़ी बाँधता है (शिवाजी के क़िले प्रायः पहाड़ों पर ही अधिक बने थे)॥ १०३॥

तथा—दोहा

दुवन सदन सबके बदन सिव सिव आठो जाम।
निज बचिबे को जपत जनु तुरकौ हर को नाम॥ १०४॥

शत्रुओं के घरों में सबके मुखों में आठौ पहर शिव शिव (शिवाजी) ये ही शब्द रहते हैं। मानों अपने बचने के लिये तुर्क भी शिव का नाम जपते हैं॥ १०४॥

## गम्यगुप्तोत्प्रेक्षा

लक्षण

मानो इत्यादिक बचन आवत नाहिं जेहि ठौर।
उत्प्रेक्षा गमगुप्त सों भूषन भनत अमोर॥ १०५॥

'मानो' इत्यादि वचन जिस जगह नहीं आते, उसे गम्यगुप्तोत्प्रेक्षा कहते हैं॥ १०५॥

उदाहरण—कवित्त

देखत उँचाई उदरत पाग सूधी राह द्योस हू मैं चढ़ैं ते जे साहस-निकेत हैं। सिवाजी हुकुम तेरा पाय पैदलन सलहेरि परनालो ते वै जीते जनु खेत हैं॥ सावन भादौं की भारी कुहू की अँध्यारी चढ़ि दुग्ग पर जात मावलीदल सचेत हैं। भूषन भनत ताकी बात मैं बिचारी तेरे परताप रबि की उज्यारी गढ़ लेत हैं॥ १०६॥

भूषण कहता है, हे शिवाजी, सलहेरि और परनालागढ़ ऐसे ऊँचे हैं कि ऊपर सिर उठाकर उन्हें देखने में पगड़ी गिर पड़ती है, उनकी सीधी राह पर दिन में चढ़ना भी बड़े साहस का काम है; पर तेरा हुक्म पाकर पैदल मावली-सेना* ने उन्हें खेल की तरह सहज में मँझाकर जीत लिया। सावन-भादों की अमावस की भारी अँधेरी में उन गढ़ों पर सावधान मावली-सेना चढ़ती है। मेरे विचार में वे सिपाही नहीं, तेरे प्रताप के सूर्य की उजियाला है, जो उन गढ़ों को जीतकर लिए लेती है ॥ १०६ ॥

तथा—दोहा

और गढ़ोई नदी नद सिव गढ़पाल दरयाव।
दौरि दौरि चहुँ ओर ते मिलत आनि यहि भाव ॥ १०७ ॥

चारों ओर से गढ़रक्षक शिवाजी को छोटे-छोटे किले इस तरह मिलते हैं, ( जैसे ) वे सब नदी-नद हैं और शिवाजी समुद्र ॥ १०७ ॥

## रूपकातिशयोक्ति

लक्षण

ज्ञान करत उपमेय को जहँ केवल उपमान।
रूपकातिशयउक्ति सो भूषन कहत सुजान ॥ १०८ ॥

जहाँ केवल उपमान ही उपमेय का बोध कराता है, वहाँ रूपकातिशयोक्ति अलंकार होता है ॥ १०८ ॥

उदाहरण—कवित्त

बासव से बिसरत बिक्रम की कहा चली बिक्रम लखत बीर बखत-बलन्द के। जागे तेज बृंद सिवाजी नरिंद मसनंद माल मकरंद कुलचंद साहिनंद के। भूषन भनत देस देस बैरि नारिन में होत अचरज घर घर दुख दंद के। कनक लतानि इन्दु इन्दु माँहि अरबिंद भरैं अरबिंदन ते बुन्द मकरंद के॥ १०९ ॥

बखत-बलन्द ( सौभाग्यशाली ) वीर शिवाजी का विक्रम देखकर इन्द्र जैसे भूल जाते हैं, तब विक्रमादित्य की तो बात ही क्या है ! मालमकरंद के कुल के चन्द्र शाहि के पुत्र शिवाजी नरेन्द्र

* मावली लोग बड़े वीर और विश्वासपात्र थे। इनकी सेना से शिवाजी को बड़ी सहायता मिलती थी। जहाँ कोई सेना काम न कर सकती थी, वहाँ मावली-सेना काम करती थी। ये पहाड़ी होते थे और पैदल सेना में काम करते थे।

के सिंहासन पर बैठने पर उनका तेज जो जाग्रत् हुआ, उसे देखकर देश-देश में रहनेवाले वैरियों की स्त्रियों के मन में कठिन दुःख होता है। भूषण कहता है, जिससे उनके घर-घर यह आश्चर्य देख पड़ता है कि कनकलताओं पर चंद्रमा, चंद्रमा में कमल और कमलों से मकरन्द के बूँद झरते हैं (यहाँ कनकलता वैरियों की स्त्रियों के शरीर को, चंद्रमा उनके मुख को, कमल उनके नेत्रों को और मकरन्द-बुंद उनके आँसुओं को कहा है) ॥१०९॥

## भेदकातिशयोक्ति

लक्षण—दोहा

जहाँ आनही भाँति की बरनत बात कछूक।
भेदकातिशयउक्ति सो भूषन कहत अचूक ॥११०॥

जिस जगह और ही तरह की कुछ बात वर्णन की जाय, वहाँ भेदकातिशयोक्ति अलंकार होता है॥ ११०॥

उदाहरण—कवित्त

श्रीनगर नयपाल जुमिला के छितिपाल भेजत रिसाल चौरगढ़ कुही बाज की। मेवार ढुँढार मारवार औ बुँदेलखंड झारखंड बाँधौ धनी चाकरी इलाज की॥ भूषन जे पूरब पछाँह नरनाह ते वै ताकत पनाह दिलीपति सिरताज की। जगत को जैतवार जीत्यो अवरंगजेब न्यारी रीति भूतल निहारी सिवराज की॥ १११॥

श्रीनगर, नैपाल, चौरगढ़[1] आदि देशों के सब राजा औरंगजेब को कर देते हैं (इसके आगे का अंश "कुही बाज की" अस्पष्ट है। इसके अर्थ की ठीक संगति तो नहीं लगती; पर यह अर्थ किया जा सकता है कि जैसे कुही—जिसे 'बहरी' भी कहते हैं और जो बाज़ की तरह शिकारी होती है—बाज को दबती है, और मिला हुआ शिकार उसके आगे छोड़ जाती है, वैसे ही ये सब राजा बादशाह को दबते हैं)। मेवाड़[2], जयपुर, मारवाड़[3], बुंदेलखंड[4], झाड़खंड[5] और बान्धवगढ़ (रीवाँ) के राजों ने बादशाह से बचने का इलाज उसकी नौकरी (सेवा) ही को समझा, अर्थात्

---

१ इसका पता नहीं चलता।

२ उदयपुर—चित्तौड़।

३ जोधपुर।

४ इस समय झाँसी, बाँदा, महोबा, जालौन ये चार ज़िले, इलाहाबाद की तीन तहसीलें तथा बास से ऊपर देसी राज्य बुँदेलखण्ड के अन्तर्गत हैं। बुँदेला क्षत्रियों का राज्य यहाँ अधिक था।

५ उड़ीसा में है।

इन्होंने अपनी जान बचाने के लिये बादशाह की मातहती मंजूर कर ली। भूषण कहता है, पूर्व और पश्चिम के देशों के जो राजा हैं, वे सिरताज दिल्ली-पति औरंगज़ेब की पनाह ताकते हैं, अर्थात् शरण ग्रहण करते हैं। परन्तु पृथ्वीतल पर शिवराज की रीति न्यारी ही मैंने निहारी। उसने जगत् को जीतनेवाले औरंगजेब को भी जीत लिया ॥ १११ ॥

## अक्रमातिशयोक्ति

लक्षण—दोहा

जहाँ हेतु अरु काज मिलि होत एक ही साथ।
अक्रमातिशयउक्ति सो कहि भूषन कबिनाथ ॥ ११२ ॥

जहाँ कारण और कार्य एक ही साथ होते हैं, उसे कविवर अक्रमातिशयोक्ति अलंकार कहते हैं ॥ ११२ ॥

उदाहरण—कवित्त

उद्धत अपार तुव दुंदुभी धुकार साथ लंघैं पारावार बाल बृन्द रिपुगन के। तेरे चतुरंग के तुरंगन के रँगे रज साथ ही उड़ात रजपुंज हैं परन के॥ दच्छिन के नाथ सिवराज तेरे हाथ चढ़ैं धनुष के साथ गढ़ कोट दुरजन के। भूषन असीसैं तोहिं करत कसीसैं पुनि बानन के साथ छूटैं प्रान तुरकन के ॥ ११३ ॥

शिवाजी, तेरे नगाड़ों की प्रचंड और अपार धुकार ( शब्द ) के साथ ही तेरे शत्रुओं की नारियाँ सागर को नाँघती हैं। तेरी चतुरंगिणी सेना के घोड़ों के ( धावे के समय ) धूल से रँग जाने के साथ ही, अर्थात् तेरे घोड़ों की टापों से धूल उड़ने के साथ ही, पर जो शत्रु हैं, उनके रजपुंज अर्थात् राज्यों के समूह उड़ जाते हैं। हे दक्षिण के अधिपति शिवराज, धनुष के साथ ही शत्रुओं के गढ़-कोट तेरे हाथ चढ़ जाते हैं अर्थात् हस्तगत हो जाते हैं। भूषण तुझे आशीर्वाद देता है कि तेरे बाण खिंचकर छूटने के साथ ही तुर्कों के प्राण छूट जाते हैं ॥ ११३ ॥

## चञ्चलातिशयोक्ति

लक्षण—दोहा

जहाँ हेतु चरचाहि मैं काज होत तत्काल।
चंचलातिशयउक्ति सो भूषन कहत रसाल ॥ ११४ ॥

जहाँ कारण की चर्चा ही में तत्काल कार्य हो जाता है, उसे चञ्चलातिशयोक्ति अलंकार कहते हैं ॥ ११४ ॥

उदाहरण

आयो आयो सुनत ही सिव सरजा तुव नावँ।
बैरि नारि दृग जलन सों बूड़ि जात अरि गावँ ॥ ११५ ॥

हे सरजा शिवाजी, "शिवाजी आया, शिवाजी आया" इस प्रकार तुम्हारा नाम सुनते ही वैरियों की स्त्रियों के आँसुओं से शत्रुओं के गाँव डूब जाते हैं ॥ ११५ ॥

तथा—कवित्त

गढ़नेर गढ़ चाँदा भागनेर बीजापुर नृपन की नारी रोय हाथन मलति हैं। करनाट हबस फिरंगहू बिलायत बलख रूम अरि तिय छतियाँ दलति हैं ॥ भूषन भनत साहितनै सिवराज एते मान तब धाक आगे दिसा उबलति हैं। तेरी चमू चलिबे की चरचा चले ते चक्रवर्तिन की चतुरंग चमू बिचलति हैं ॥ ११६ ॥

गढ़नेर[1], चाँदागढ़[2], भागनेर[3], बीजापुर के राजों की रानियाँ रोकर हाथ मलती हैं। कर्नाटक[4], हबस[5], फिरंग[6], विलायत[7], बलख[8], रूम[9] आदि देशों में रहनेवाले शत्रुओं की स्त्रियों की छाती फटती है, अथवा वे अपनी छाती पीटती हैं। भूषण कहता है, हे शाहिजी के पुत्र शिवराज, तुम्हारी धाक से दसो दिशाएँ उबलती या तपती हैं। तेरी फ़ौज के चलने की चर्चा चलते ही चक्रवर्ती बादशाहों की फ़ौजें विचलित हो उठती हैं, भागकर तितर-बितर होने लगती हैं ॥ ११६ ॥

## अत्यन्तातिशयोक्ति

लक्षण—दोहा

जहाँ हेतु ते प्रथम ही प्रगट होत है काज।
अत्यंतातिशयोक्ति सो कहि भूषण कबिराज ॥ ११७ ॥

---

१ यह प्रान्त कड़ा-मानिकपुर के निकट था। इसे मुग़लों ने सन् १५६० में जीतकर अपने अधीन कर लिया था।

२ यह पहले मराठों के हाथ में था। सन् १८१८ में यह ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकार में आया।

३ यह गोलकुंडा के समीप ४ मील पर था। इसे मुहम्मद कुतुबुल्मुल्क (गोलकुंडा के) ने अपनी पत्नी (भागमती) के नाम पर बसाया था।

४ इस देश पर शिवाजी ने सन् १६७६-७८ में आक्रमण किया था।

५ हबशियों का मुल्क—अबीसीनिया।

६ फ़िरंगियों का देश।

७ टर्की, काबुल, फ़ारस आदि मुसलमानी राज्य।

८ बलख़-बुखारा—टर्की का एक प्रसिद्ध नगर।

९ रूम—टर्की।

जहाँ कारण से पहले ही कार्य प्रकट होता है, वहाँ कविराज अत्यन्तातिशयोक्ति अलंकार कहते हैं ॥ ११७ ॥

उदाहरण—कवित्त

मंगन मनोरथ के प्रथमहिं दाता तोहिं कामधेनु कामतरु सो गना-इयतु है। याते तेरे गुन सब गाय को सकत कबि बुद्धि अनुसार कछु हम गाइयतु है ॥ भूषन भनत साहितनै सिवराज निज बखत बढ़ाय करि तोहिं ध्याइयतु है। दीनता को डारि औ अधीनता बिडारि दीह दारिद को मारि तेरे द्वार आइयतु है ॥ ११८ ॥

माँगनेवालों के माँगने के पहले ही उनके मनोरथ को पूरा कर देने के कारण तुझे कामधेनु और कल्पवृक्ष के तुल्य गिनता हूँ। इससे तेरे सब गुणों को कौन कवि गा सकता है ? कोई नहीं। तथापि बुद्धि के अनुसार मैं कुछ गाता हूँ। भूषण कहता है, शाहि के पुत्र शिवराज, अपने भाग्य कर बढ़ाकर तुझको ध्याता हूँ—अर्थात् तेरा ध्यान करने के पहले ही मेरा सौभाग्य बढ़ गया। पहले ही दीनता ( गरीबी ) को फेंककर, अधीनता को भगाकर और लंबे-चौड़े दारिद्र्य को मारकर तेरे द्वार पर आया जाता है ॥ ११८ ॥

तथा—दोहा

कबि तरुबर सिव सुजस रस सींचे अचरज मूल।
सुफल होत है प्रथम ही पीछे प्रगटत फूल ॥ ११९ ॥

कविरूप वृक्षों को शिवाजी के सुयशरूप जल ने सींचकर यह आश्चर्य कर दिखाया है कि पहले सुफल होता है—कामना पूर्ण होती है, और पीछे वे फूलते हैं—अर्थात् प्रसन्न होते हैं ॥ ११९ ॥

## सामान्य-विशेष

लक्षण

कहिबे जहँ सामान्य है कहे जु तहाँ बिशेष।
सो सामान्य बिशेष है बरनत सुकबि अशेष ॥ १२० ॥

जहाँ कोई सामान्य बात कहने में विशेषता का आश्रय लिया जाय, वहाँ सामान्य-विशेष अलंकार होता है ॥ १२० ॥

उदाहरण

और नृपति भूषन कहैं करैं न सुगमौ काज।
साहि तनै सिवसुजस को करै कठिनऊ आज ॥ १२१ ॥

भूषण कहता है, और राजा लोग जहाँ सुगम ( सहज ) काम भी नहीं करते, वहाँ हे शाहि के पुत्र शिवाजा, तुम्हारा सुयश कठिन कामों को भी आज ही ( शीघ्र ही ) कर डालता है ॥ १२१ ॥

तथा—सवैया

जीत लई बसुधा सिगरी घमसान घमंड कै बीरनहू की।
भूषन भौंसिला छीनि लई जगती उमराव अमीरनहू की॥
साहितनै सिवराज की धाकनि छूटिगई धृति धीरनहू की।
मीरन के उर पीर बढ़ी यों जु भूलि गई सुधि पीरनहू की॥१२२॥

वीरों की भी सारी पृथ्वी घमासान युद्ध करके जीत ली। भूषण कहता है, भौंसिला शिवाजी ने अमीर-उमराओं की भी धरती छीन ली। शाहि के पुत्र शिवराज की धाक से धीरों का भी धैर्य छूट गया। मीरों के हृदय में पीर ऐसी बढ़ी कि उन्हें पीरों की भी सुध भूल गई॥ १२२ ॥

## तुल्ययोगिता

लक्षण—दोहा

तुल्यजोगिता तहँ धरम जहँ बरन्यन को एक।
कहूँ अबरन्यन को कहत भूषन बरनि बिबेक॥ १२३ ॥

जहाँ अनेक वर्ण्यों ( उपमेयों ) और अवर्ण्यों ( उपमानों ) का एक ही धर्म हो, वहाँ तुल्ययोगिता अलंकार होता है॥ १२३ ॥

उदाहरण—कवित्त

चढ़त तुरंग चतुरंग साजि सिवराज चढ़त प्रताप दिन दिन अति जंग मैं। भूषन चढ़त मरहट्टन के चित्त चाव खग्ग खुलि चढ़त है अरिन के अंग मैं॥ भौंसिला के हाथ गढ़ कोट हैं चढ़त अरि जोट है चढ़त एक मेरु गिरिसृंग मैं। तुरकान गन ब्योमयान हैं चढ़त बिन मान है चढ़त बदरंग अवरंग मैं॥ १२४॥

चतुरंग सेना सजकर तुरंग ( घोड़े ) पर शिवराज के चढ़ने पर युद्ध में उनके प्रति अंग में प्रतिदिन प्रताप चढ़ता है। भूषण कहता है, मराठों के चित्त में चाव चढ़ता है, और खड्ग खुलकर शत्रुओं के अंग पर चढ़ता है। भोंसिला शिवा के हाथ गढ़ और कोट चढ़ते हैं और उनके शत्रुओं के झुंड सुमेरु पहाड़ के शिखर पर भागकर चढ़ते हैं। तुर्क लोग आकाशयान पर चढ़ते अर्थात्

सम्मुख समर में मरकर विमान में चढ़कर स्वर्ग जाते हैं और औरंगज़ेब के मुख पर ( मान नष्ट होने के कारण ) बदरंग अर्थात् स्याही चढ़ती है ॥ १२४ ॥

तथा—दोहा

सिव सरजा भारी भुजन भुव भरु धर्‌यो सभाग।
भूषन अब निहचिंत हैं सेसनाग दिगनाग ॥ १२५ ॥

भाग्यशाली सरजा शिवा ने अपनी भारी भुजाओं पर भूमि का भार धारण कर रक्खा है, अब शेषनाग और दिग्गज निश्चिन्त हैं ॥ १२५ ॥

द्वितीय लक्षण

हित अनहित को एक सो जहँ बरनत ब्यवहार।
तुल्यजोगिता और सो भूषन ग्रंथ बिचार ॥ १२६ ॥

जहाँ हित और अहित का एक-सा व्यवहार वर्णन किया जाय, वहाँ और दूसरे प्रकार का तुल्ययोगिता अलंकार होता है ॥ १२६ ॥

उदाहरण—कवित्त

गुनन सों इनहूँ को बाँधि लाइयतु पुनि गुनन सों उनहूँ को बाँधि लाइयतु है। पाय गहि इनहूँ को रोज ध्याइयतु अरु पाय गहि उनहूँ को रोज ध्याइयतु है ॥ भूषन भनत महराज सिवराज रस रोस तो हिये में एक भाँति पाइयतु है। दोहाई कहे ते कबि लोग ज्याइयतु अरु दोहाई कहे ते अरि लोग ज्याइयतु है ॥ १२७ ॥

गुणों से इन ( कवियों ) को भी बाँध लाते हो—अपनी ओर आकृष्ट करते हो—और गुणों ( रस्सा ) से उन ( शत्रुओं ) को भी बाँध लाते हो। पैर पकड़कर ( छूकर ) इनको भी रोज ध्याते हो, और पाकर पकड़कर उनको भी धर लाते हो । भूषण कहता है, महाराज शिवराज, तुम्हारे हृदय में रस ( प्रेम ) और रोष ( क्रोध ) एक-सा ही पाया जाता है। दोहा हा कहने से आप कवि लोगों को जिलाते हैं और "दोहाई" कहने से शत्रुओं को भी जीने देते हैं ॥ १२७ ॥

## दीपक

लक्षण—दोहा

बर्न्य अबर्न्यन को धरम जहँ बरनत हैं एक।
दीपक ताको कहत हैं भूषन सुकबि बिबेक ॥ १२८ ॥

जहाँ उपमेय और उपमान का एक ही धर्म कहा जाता है, वहाँ दीपक अलंकार होता है ॥ १२८॥

उदाहरण—सवैया

कामिनि कंत सों जामिनि चन्द सों दामिनि पावस मेघ घटा सों।
कीरति दान सों सूरति ज्ञान सों प्रीति बड़ी सनमान महा सों॥
भूषन भूषन सों तरुनी नलिनी नव पूषन देव प्रभा सों।
जाहिर चारिहु ओर जहान लसै हिंदुवान खुमान सिवा सों॥ १२६॥

कामिनी पति से, रात्रि चन्द्रमा से, बिजली वर्षाकाल की घनघटा से, कीर्ति दान से, सूरत ज्ञान से, प्रीति महासम्मान से, भूषण कहता है, स्त्री गहनों से, कमलिनी नवोदित सूर्य की प्रभा से जैसे संसार में शोभा पाती है, वैसे ही हिंदुओं की शोभा खुमान शिवा से है। यह चारों ओर ज़ाहिर है ॥ १२६ ॥

## दीपकावृत्ति

लक्षण—दोहा

दीपक पद के अरथ जहँ फिरि फिरि करत बखान।
आवृति दीपक तहँ कहत भूषन सुकबि रजान॥ १३०॥

जहाँ वारंवार दीपक ( एक ही अर्थव ले ) पदों की आवृत्ति होती है, वहाँ दीपकावृत्ति अलंकार होता है ॥ १३० ॥

उदाहरण

सिव सरजा तव दान को करि को सकत बखान।
बढ़त नदीगन दान-जल उमड़त नद गजदान॥ १३१॥

सरजा शिवाजी तेरे दान का कौन बखान कर सकता है? तेरे दान के जल से ( दान में किए गए संकल्प के जल से ) नदियाँ उमड़ पड़ती हैं और हाथियों के दान-जल ( कपोलों से बहनेवाले मदजल ) के नद उमड़ने लगते हैं ॥ १३१ ॥

तथा—सवैया

चक्रवती चकता चतुरंगिनि चारिउ चापि लई दिसि चक्का।
भूप दरीन दुरे भनि भूषन एक अनेकन बारिधि नक्का॥
औरँग साहि सों साहि को नन्द लख्यो सिव साहि बजाय के डंका।
सिंह की सिंह चपेट सहै गजराज सहै गजराज को धक्का॥१३२॥

चक्रवर्ती चकत्ता ( औरंगजेब बादशाह ) ने चतुरंगिणी सेना से पृथ्वी के चारों चक्र ( छोर ) चाप लिए ( दबा लिए ), भूषण कहता है, कुछ राजा लोग पर्वतों की खोहों में जा छिपे और अनेकों समुद्र नाँघ गए। पर शाहि का पुत्र शिवाजी डंका बजाकर औरंगज़ेब शाह से लड़ा। सिंह की चपेट को सिंह ही सहता है और गजराज ही गजराज के धक्के को सहता है ॥ १३२ ॥

तथा—कवित्त

अटल रहे हैं दिगअन्तन के भूप धरि रैयाति को रूप निज देस पेस करि कै। राना रह्यो अटल बहाना करि चाकरी को बाना तजि भूषन भनत गुन भरि कै॥ हाड़ा रायठौर कच्छवाहे गौर और रहे अटल चकत्ता को चमाऊ धरि डरि कै। अटल सिवाजी रह्यो दिल्ली को निदरि धीर धरि ऐंड़ धरि तेग धरि गढ़ धरि कै॥ १३३॥

दिगन्तों के भूप रैयत का रूप रखकर ( प्रजा बनकर ) और अपना देश पेश करके—समर्पण करके—अटल रहे। राना ( चित्तौड़ के ) चाकरी का बहाना करके और अपना क्षत्रिय का बाना छोड़कर अटल रहे। भूषण कहता है, हाड़ा,* राठौर,† कछवाहे,‡ गौर× आदि क्षत्रिय भयभीत होकर चकत्ता ( शाह ) के चँवर हाथ में लेकर अटल रहे। पर शिवाजी वीर धीरज धरकर, दिल्ली को निदरकर—कुछ भी न समझकर—ऐंड़ ( स्वाभिमान ) पकड़कर, हाथ में खड्ग पकड़कर तथा अपने गढ़ का आश्रय लेकर अटल रहा—डटा रहा ॥ १३३ ॥

## प्रतिवस्तूपमा

लक्षण—दोहा

बाक्यन को जुग होत जहँ एकै अरथ समान।
जुदो जुदो करि भाषिये प्रतिवस्तूपम जान॥ १३४॥

जहाँ उपमेय, उपमान, दोनों वाक्य तो एक-से ही हों, पर उनका अर्थ अलग-अलग हो, वहाँ प्रतिवस्तूपमा अलंकार होता है ॥ १३४ ॥

उदाहरण—छन्द

मदजल धरन द्विरद बल राजत बहु जलधरन जलद छबि साजैं।

---

* बूँदी-कोटे के नरेश क्षत्रिय।
† जोधपुर का राजवंश।
‡ जयपुर का राजवंश।
× यह भी एक क्षत्रियों का वंश है। ये राजपूताने में रहते थे। पृथ्वीराज के काल में इनका बड़ा सम्मान था।

पुहुमिधरन फननाथ लसत अति तेजधरन ग्रीषम रबि छाजै॥
खरगधरन सोभा तहँ राजत रुचि भूषन गुनधरन समाजै।
दिल्लिदलन दक्खिन दिसि थम्भन ऐंड़धरन सिवराज बिराजै॥१३५॥

जैसे मदजल धारण करनेवालों में हाथियों के दल की शोभा होती है, बहुत जल धारण करनेवालों में जलदों (बादलों) की शोभा सजती है, पृथ्वी को धारण करनेवालों में शेषनाग अत्यन्त शोभित हैं, तेज धारण करनेवालों में ग्रीष्म-ऋतु के सूर्य की शोभा होती है, भूषण कहता है, वैसे ही शिवाजी के यहाँ खड्ग धारण करनेवालों की शोभा और गुणियों के समाज में रुचि देख पड़ती है। ऐसा दिल्ली को दलनेवाला, दक्षिण दिशा को थामनेवाला खंभ और ऐंड़दार शिवराज विराजता है॥ १३५॥

## दृष्टान्त

लक्षण—दोहा

जुग बाक्यन को अरथ जहँ प्रतिबिम्बित सो होत।
ताहि कहत दृष्टांत हैं भूषन सुमति उदोत॥ १३६॥

जहाँ उपमेय और उपमान, दोनों वाक्यों का अर्थ प्रतिबिम्बित-सा हो—बिम्ब-प्रतिबिम्ब-सा प्रतीत होता हो, वहाँ दृष्टान्त अलंकार होता है॥ १३६॥

उदाहरण

सिव औरंगहि जिति सकै और न राजा राव।
हत्थि मत्थ पर सिंह बिनु आन न घालै घाव॥ १३७॥

हे शिवाजी, औरंगजेब को (तेरे सिवा) और कोई राजा-राव नहीं जीत सकता। हाथी के मस्तक पर सिंह के विना और कोई घाव नहीं कर सकता॥ १३७॥

चाहत निरगुन सगुन को ज्ञानवन्त गुन धीर।
यही भाँति निरगुन गुनिहि सिवा नेवाजत बीर॥ १३८॥

निर्गुण सगुण (ईश्वर) को जैसे ज्ञानवान् गुणी धीर पुरुष चाहते हैं, उसी तरह वीर शिवाजी निर्गुण (अवगुणों से रहित) गुणी लोगों पर अनुग्रह करते हैं॥ १३८॥

सवैया

देत तुरीगन गीत सुने बिनु देत करीगन गीत सुनाए।
भूषन भावत भूप न आन जहान खुमान की कीरति गाए॥

मङ्गन को भुवपाल घने पै निहाल करै सिवराज रिझाए।
आन ऋतैं बरसैं सरसैं पै बढ़ैं नदियाँ ऋतु पावस पाए ॥ १३९ ॥

भूषण कहता है, शिवाजी गीत ( कविता ) सुने बिना घोड़े और कविता सुनकर हाथियों के झुण्ड ( कवियों को ) देते हैं। खुमान शिवाजी की कीर्ति का गान करने पर संसार में और राजा नहीं भाते, नहीं रुचते ( उधर, अन्य राजों का गुण गाने की ओर प्रवृत्ति नहीं होती )। माँगनेवालों को घने राजा हैं, अनेक नरपाल हैं। परन्तु शिवराज जो हैं, वह रिझाने पर निहाल कर देते हैं ( अर्थात् फिर दूसरे किसी दाता के पास जाने की आवश्यकता नहीं रहती )। अन्य ऋतुओं में वर्षा चाहे जितनी हो, परन्तु नदियाँ वर्षाऋतु को ही पाकर उमड़ती हैं ॥ १३९ ॥

## निदर्शन

लक्षण—दोहा

सदस बाक्य जुग अरथ को करिए एक अरोप।
भूषन ताहि निदर्सना कहत बुद्धि दै ओप ॥ १४० ॥

जहाँ ( उपमान और उपमेय, इन ) दोनों वाक्यों के अर्थ में ( भेद रहने पर भी ) एक अर्थ का आरोप हो, वहाँ निदर्शन अलङ्कार होता है ॥ १४० ॥

उदाहरण—सवैया

मच्छहु कच्छ मैं कोल नृसिंह मैं बावन मैं भनि भूषन जो है।
जो द्विजराम मैं जो रघुराज मैं जोऽब कह्यो बलरामहु को है ॥
बौद्ध मैं जो अरु जो कलकी महँ बिक्रम हूबे को आगे सुनो है।
साहस भूमि अधार सोई अब श्रीसरजा सिवराज मैं सो है ॥ १४१ ॥

मत्स्य अवतार में, कच्छप अवतार में, शूकर अवतार में, नृसिंह अवतार में, वामन अवतार में, परशुराम अवतार में, रामचन्द्र में, बलराम में, बुद्ध अवतार में जो विक्रम था और कल्कि-अवतार में आगे होनेवाला विक्रम सुना है, वही विक्रम अब साहस और भूमि के आधार सरजा श्रीशिवराज में है ॥ १४१ ॥

तथा—कवित्त

कीरति सहित जो प्रताप सरजा मैं बर मारतंड मध्य तेज चाँदनी सो जानी मैं। सोहत उदारता औ सीलता खुमान मैं सो कंचन मैं मृदुता सुगंधता बखानी मैं ॥ भूषन भनत सब हिन्दुन को भाग फिरै चढ़े ते

कुमति चकता हू की निसानी मैं। सोहत सुबेस दान कीरति सिवा मैं
सोई निरखी अनूप रुचि मोतिन के पानी मैं॥ १४२॥

शिवाजी में कीर्ति-सहित जो प्रताप है, वही सूर्यमंडल के बीच तेज की चाँदनी ( प्रकाश ) मैंने जानी है। खुमान में उदारता और शील जो सोहता है, वही मैंने सोने में कोमलता और सुगन्ध ( के समान ) बखानी है। भूषण कहता है, हिन्दुओं का भाग्य फिरा और चकत्ता ( औरंगज़ेब ) के कुबुद्धि चढ़ने से ( पैदा होने से ) उसका भी नसीब पलट गया। शिवाजी में जो सुन्दर दान ( देने की ) कीर्ति है, वही मैंने मोतियों के पानी ( आब ) में अनुपम रुचि ( चमक ) देखी है॥ १४२॥

तथा—दोहा

औरन को जो जनम है सो वाको यक रोज।
औरन को जो राज सो सिव सरजा की मौज॥ १४३॥

औरों का जीवन भर शिवाजी के लिये एक दिन है। औरों का जो राज्य है, वह शिवाजी की मौज ( इच्छा पर निर्भर ) है॥ १४३॥

साहिन सो रन माँड़िबो कीबो सुकबि निहाल।
सिव सरजा को ख्याल है औरन को जंजाल॥ १४४॥

शाहों से युद्ध ठानना, सुकवियों को निहाल करना सरजा शिवाजी का एक ख़याल या खेल भर है, पर वही औरों के लिये जंजाल ( कठिन ) है॥ १४४॥

## व्यतिरेक

लक्षण

सम छबिवान दुहून मैं जहँ बरनत बढ़ि एक।
भूषन कबि कोबिद सबै ताहि कहत ब्यतिरेक॥ १४५॥

समान छविवाले दोनों में जहाँ एक को बढ़ाकर वर्णन किया जाता है, वहाँ व्यतिरेक अलङ्कार होता है॥ १४५॥

उदाहरण—छप्पै

त्रिभुवन में परसिद्ध एक अरि बल वह खण्डिय।
यह अनेक अरि बल बिहंडि रनमंडल मंडिय॥
भूषन वह ऋतु एक पुहुमि पानिपहि बढ़ावत।
यह छहु ऋतु निसिदिन अपार पानिप सरसावत॥

सिवराज साहि-सुव सत्य नित हय गज लक्खन संचरइ।
यक्कइ गयंद यक्कइ तुरंग किमि सुरपति सरवरि करइ ॥ १४६ ॥

इन्द्र ने तीनों लोकों में प्रसिद्ध एक शत्रु बल असुर को खंडित किया—मारा है, किन्तु इन शिवाजी ने अनेक शत्रुओं के बल ( सेना ) को नष्ट करके युद्धक्षेत्र की शोभा बढ़ाई है। भूषण कहता है, वह ( इन्द्र ) एक ही ऋतु ( वर्षा ) में पृथ्वी पर जल को बढ़ाता है, और यह ( शिवाजी ) छहो ऋतुओं में दिन-रात अपार पानी ( मान ) सरसाते अर्थात् बढ़ाते हैं। शाहि के पुत्र शिवराज के साथ नित्य लाखों घोड़े-हाथी चलते हैं, पर इन्द्र के पास एक ही हाथी ( ऐरावत ) और एक ही घोड़ा ( उच्चैःश्रवा ) है। फिर वह इन्द्र शिवाजी की कैसे सरबर ( बराबरी ) करे ? ॥ १४६ ॥

तथा—कवित्त

दारुन दुगुन दुरजोधन ते अवरंग भूषन भनत जग राख्यो छल मढ़िके। धरम धरम बल भीम पैज अरजुन नकुल अकिल सहदेव तेज चढ़िके ॥ साहि के सिवाजी गाजी कस्यो दिली माँहि चंड पांडवनहू ते पुरुषारथ सुबढ़िके। सूने लाखभौन ते कढ़े वे पाँच राति मैं जु द्योस लाख चौकी ते अकेले आयौ कढ़िके ॥ १४७ ॥

दुर्योधन से दूने दारुण औरंगजेब ने, भूषण कहता है, जगत् को छल से मढ़ रक्खा है, अर्थात् अपने कपट-जाल में फँसा रक्खा है। शाहि के पुत्र गाजी शिवाजी ने दिल्ली में पाण्डवों से भी बढ़कर प्रचण्ड पुरुषार्थ किया। कारण, पाण्डव तो सूने लाख-भवन ( लाक्षागृह ) से रात में निकले थे, और उसमें युधिष्ठिर के धर्म, भीमसेन के बल, अर्जुन की पैज, नकुल की बुद्धि और सहदेव के तेज ने मिलकर यह काम किया था; किन्तु शिवाजी अकेले ही ( अपने धर्म बल, पैज, बुद्धि और तेज के प्रभाव से ) दिन में लाख चौकियों ( पहरों ) से, अथवा लाखों की चौकी से निकल आये ॥ १४७ ॥

## सहोक्ति

लक्षण—दोहा

वस्तुन को भासत जहाँ जनरंजन सह भाव।
ताहि सहोक्ति बखानहीं जे भूषन कबिराव ॥ १४८ ॥

जहाँ लोक-मनोरञ्जन के साथ वस्तुओं का भावार्थ प्रकट किया जाय, वहाँ सहोक्ति अलङ्कार कहा जाता है ॥ १४८ ॥

उदाहरण—कवित्त

छूट्यो है हुलास आमखास एक संग छूट्यो हरम सरम एक संग बिनु ढंग ही। नैनन ते नीर धीर छूट्यो एक संग छूट्यो सुख रुचि मुख रुचि त्यों ही बिन रंग ही॥ भूषन बखाने सिवराज मरदाने तेरी धाक बिललाने न गहत बल अंग ही। दक्खिन के सूबा पाय दिल्ली के अमीर तजैं उत्तर की आस जीव आस एक संग ही॥ १४९॥

भूषण कहता है, हे शिवराज मर्दाने, दक्षिण का सूबा ( अर्थात् सूबेदारी ) पाकर दिल्ली के अमीरों का हुलास ( प्रसन्नता ) छूटती है, एक साथ ही आमखास, हरम ( अंतःपुर ) और शर्म छूटती है। उनके नयनों से नीर ( आँसू ) छूटता है, हृदय से धैर्य छूटता है, सुख की रुचि और मुख की रुचि ( कान्ति ) एक साथ ही छूट जाती है, चेहरों पर बदरंग छा जाता है। तेरी धाक ( आतंक ) से वे बिललाने फिरते हैं, अंग ( शरीर ) बल नहीं धरता। वे अमीर उत्तर को लौटकर आने की आशा और जीवन की आशा एक संग ही छोड़ देते हैं॥ १४९॥

## विनोक्ति

लक्षण—दोहा

बिना कछू जहँ बरनिए कै हीनो कै नीक।
ताको कहत बिनोक्ति हैं कबि भूषन मति ठीक॥ १५०॥

जहाँ 'बिना' शब्द के साथ किसी वस्तु को हीन या अच्छा कहा जाय, वहाँ विनोक्ति अलङ्कार होता है॥ १५०॥

उदाहरण

सोभमान जग पर किये सरजा सिवा खुमान।
साहिन सों बिनु डर अगड़ बिन गुमान को दान॥ १५१॥

सरजा खुमान शिवा शाहों से बिना भय की ऐंठ और याचकों को बिना गुमान का दान करके जगत् में सर्वोपरि विराजता है॥ १५१॥

तथा—सवैया

को कबिराज बिभूषन होत बिना कबि साहितनै को कहाये।
को कबिराज सभाजित होत सभा सरजा के बिना गुन गाये॥

को कबिराज भुवालन भावत भौंसिला के मन मैं बिनु भाये।
को कबिराज चढ़ै गजबाजि सिवाजी की मौज मही बिनु पाये॥१५२॥

शाहि-तनय का कवि कहलाए विना कौन कवि कविराज-विभूषण होता है, अर्थात् कोई नहीं। सरजा की सभा में उनके गुण गाए विना कौन कविराज सभाजित् (सभा को जीतने वाला) होता है? कोई नहीं। भौंसिला के मन को भाए विना कौन कविराज राजों को भाता है, कोई नहीं। शिवाजी की मौज (कृपा) और उनसे पृथ्वी पाए विना कौन कविराज घोड़ों और हाथियों पर चढ़ता है? कोई नहीं॥ १५२॥

तथा—कवित्त

बिना लोभ को बिबेक बिना भय जुद्ध टेक साहिन सों सदा साहितनै सिरताज के। बिना ही कपट प्रीति बिना ही कलेस जीति बिना ही अनीति रीति लाज के जहाज के॥ सुकबि समाज बिन अपजस जस भनि भूषन भुसिल भूप गरिबनेवाज के। बिना ही बुराई ओज बिना काज धनी फौज बिना अभिमान मौज राज सिवराज के॥ १५३॥

शाहि के पुत्र सिरताज शिवाजी के विना लोभ का विवेक और विना भय की युद्ध की टेक है। विना कपट की प्रीति, विना क्लेश की जीत और विना अनीति की रीति (व्यवहार) है। वह लज्जा के जहाज हैं। भूषण कहता है, गरीबनेवाज भौंशिला-भूप के सुकवि लोग विना अपयश (ऐब) का यश कहते हैं। उनका ओज (प्रताप या तेज) विना बुराई है, उनकी घनी सेना विना काम है (उसे ऐसा कोई शत्रु ही नहीं मिलता, जिससे उसे लड़ना पड़े), और उनकी मौज विना अभिमान के है॥ १५३॥

तथा

कीरति को ताजी करी बाजी चढ़ि लूटि कीन्ही भई सब सेन बिनुबाजी बिजैपुर की। भूषन भनत भौंसिला भुवाल धाक ही सों धीर धरबी न फौज कुतुब के धुर की॥ सिंह उदैभान बिन अमर सुजान बिन मान बिन कीन्ही साहिबी त्यों दिलीसुर की। साहिसुव महाबाहु सिवाजी सलाह बिन कौन पातसाह की न पातसाही मुरकी॥ १५४॥

शिवाजी ने बाजी (घोड़े) पर चढ़कर लूट की और कीर्ति ताजी की। बीजापुर की सब सेना विना बाजी की हुई, अर्थात् उसके हाथ से बाजी निकल गई, वह परास्त हो गई। भूषण

कहता है, भौंसिला-भूपाल की धाक ही से कुतुबशाह के पक्ष की फौज धैर्य नहीं धारण करती, अधीर हो उठती है। शाहि-सुत महाबाहु शिवाजी से सलाह ( सुलह ) के बिना किस बादशाह की बादशाही नहीं खण्डित हुई ॥ १५४ ॥

## समासोक्ति

लक्षण—दोहा

बरनन कीजै आन को ज्ञान आन को होय।
समासोक्ति भूषन कहत कबि कोबिद सब कोय ॥ १५५ ॥

वर्णन तो और का कीजिए और जान कोई और पड़े, वहाँ समासोक्ति अलङ्कार होता है ॥ १५५ ॥

उदाहरण

बड़ो डील लखि पील को सबन तज्यो बन थान।
धनि सरजा तू जगत में ताको हर्यो गुमान ॥ १५६ ॥

फील ( हाथी और दूसरे पक्ष में औरंगजेब ) का बड़ा डील-डौल देखकर सभी ने बन की जगह छोड़ दी। हे सरजा ( सिंह और दूसरे पक्ष में शिवाजी ), तूने उसका गुमान हरा, इसलिये जगत् में तू धन्य है ॥ १५६ ॥

तथा

तुही साँच द्विजराज है तेरी कला प्रमान।
तो पर सिव किरपा करी जानत सकल जहान ॥ १५७ ॥

तू ही सच्चा द्विजराज ( ब्राह्मण और पक्षान्तर में चन्द्रमा ) है, तेरी कला ( कला और भाग्य ) प्रमाण है; तुझ पर शिव ( महादेव और शिवाजी ) ने कृपा की है, यह सब जहान जानता है ॥ १५७ ॥

तथा कवित्त

उत्तर पहार बिधनोल खंडहर झारखंडहु प्रचार चारु केली है बिरद की। गोर गुजरात अरु पूरब पछाँह ठौर जन्तु जंगलीन की बसति मारि रद की ॥ भूषन जो करत न जाने बिनु घोर सोर भूलि गयो आपनी उँचाई लखे कद की। खोइयो प्रबल मद गल गजराज एक सरजा सों बैर कै बड़ाई निज मद की ॥ १५८ ॥

उत्तर के पहाड़ी मुल्क, विधनौल* (विदनौर), खँडहर† और झाड़खण्ड, ये तेरी (विरद) प्रशंसा के प्रचार के सुन्दर क्रीड़ास्थल हैं। तूने ग़ोर‡ गुजरात और पूर्व व पश्चिम के अन्य स्थानों में रहनेवाले जंगली जीवों की बस्ती को मारकर तबाह कर दिया। भूषण कहते हैं, हे प्रबल मदजल बहानेवाले मस्त गजराज, तू बिना जाने घोर गर्जना कर रहा है। तू अपने क़द की ऊँचाई लखकर उसी में भूल गया है (तुझे यह घमंड हो गया है कि मैं इतना ऊँचा हूँ, इसलिये सर्वश्रेष्ठ जीव हूँ)। तूने एक सरजा (सिंह और शिवाजी) से बैर करके अपने मद को खो दिया॥ १५८॥

## परिकर और परिकरांकुर

### लक्षण—दोहा

साभिप्राय विशेषननि भूषन परिकर मान।
साभिप्राय बिसेष्य ते परिकर अंकुर जान॥ १५९॥

जहाँ विशेषण अभिप्राय सहित हों, वहाँ परिकर अलंकार और जहाँ विशेष्य साभिप्राय हो वहाँ परिकरांकुर अलंकार होता है॥ १५९॥

### परिकर का उदाहरण—कवित्त

बचैगा न समुहाने बहलोलखाँ अयाने भूषन बखाने दिल आनि मेरा बरजा। तुझ ते सवाई तेरा भाई सलहेरि पास कैद किया साथ का न कोई बीर गरजा॥ साहिन के साहि उसी औरंग के लीन्हें गढ़ जिसका तू चाकर औ जिसकी है परजा। साहि का ललन दिली दल का दलन अफजल का मलन सिवराज आया सरजा॥ १६०॥

भूषण कहता है, हे अजान बहलोलखाँ, मेरा मना करना मान ले, सामने जाने से फिर तू नहीं बचेगा। तुझसे सवाया पराक्रमी जो तेरा भाई था, उसे सलहेर के पास शिवाजी ने कैद कर लिया, और उसके साथ का कोई भी वीर नहीं गरजा, सामने जाकर नहीं भिड़ा। शाहों के शाह उसी औरंगजेब के गढ़ शिवाजी ने जीत लिए, जिसका तू नौकर और परजा (रैयत) है। देख, शाहि का पुत्र, दिल्ली की सेना को दलनेवाला, अफजलखाँ को मल डालनेवाला सरजा (शेर) शिवराज आया है॥ १६०॥

---

* मँगलोर के पास यह इसी नाम के प्रान्त की राजधानी थी।

† यह चंबल और नर्मदा के बीच, सुल्तानपुर के पास, एक कसबा था।

‡ एक शहर। यह अफ़ग़ानिस्तान के अंदर है। भारत पर चढ़ाई करनेवाला प्रसिद्ध मुहम्मद ग़ोरी यहीं का था।

तथा

ज़ाहिर जहान जाके धनद समान पेखियतु पासवान यों खुमान चित्त चाय है। भूषन भनत देखे भूख न रहत सब आप ही सों जात दुख दारिद बिलाय है॥ खीझे ते खनक माहिं खलभल डरत है रीझे ते पलक माहिं कीन्हे रंक राय है। जंग जुरि अरिन के अंग को अनंग कीबो दीबो सिव साहब को सहज सुभाय है॥ १६१॥

खुमान के चित्त में यों चाव है कि उसके जगत्प्रसिद्ध और कुबेर के समान (धनी) पासवान (पास रहनेवाले मुसाहब) देख पड़ते हैं। भूषण कहता है, उसे देखने से भूख प्यास नहीं रहती (ऐसी चित्त को तृप्ति होती है) और आप ही से सब दुःख तथा दारिद्र्य बिला जाते हैं। वह खीझने पर दुनिया भर में खलभल (हलचल) डाल देता है, और रीझने पर पलक मारते ही रंक को राव बना देता है। युद्ध में भिड़कर शत्रुओं को अनंग (कामदेव को भस्म करना और पक्षान्तर में शत्रुओं को अंगहीन बना देना) कर डालना प्रभु शिव (महादेव, पक्षान्तर में शिवाजी) का सहज स्वभाव है॥ १६१॥

तथा—दोहा

सूरसिरोमनि सूर कुल सिव सरजा मकरन्द।
भूषन क्यों औरँग जिते कुलमलिच्छ कुलचन्द॥ १६२॥

मकरंदवंशी शिवाजी शूर-शिरोमणि, सूर्य के कुल में उत्पन्न है। फिर म्लेच्छ-कुल-चंद औरंगजेब उसे कैसे जीत सकता है? (मतलब यह कि सूर्य के आगे चंद्रमा के समान औरंगज़ेब का शिवाजी के आगे फीका पड़ जाना ही उचित है)॥ १६२॥

परिकरांकुर का उदाहरण

भूषन भनि सबही तबहि जीत्यो हो जुरि जंग।
क्यों जीते सिवराज सों अब अंधक अवरंग॥ १६३॥

भूषण कहता है, युद्ध ठानकर औरंगजेब ने सभी राजों को जीत लिया; पर अब वह अंधक (अंधा, पक्षान्तर में अन्धकासुर) शिवराज (पक्षान्तर में शिवजी) से कैसे जीत सकता है?॥ १६३॥

## श्लेष

लक्षण—दोहा

एकबचन मैं होत जहँ बहु अर्थन को ज्ञान।
स्लेस कहत हैं ताहि को भूषन सुकबि सुजान॥ १६४॥

एक वचन में जहाँ कई अर्थ निकलें, वहाँ श्लेष अलंकार होता है॥ १६४॥

उदाहरण—कवित्त

सीता संग सोभित सुलच्छन सहाय जाके भूपर भरत नाम भाई नीति चारु है। भूषन भनत कुल सूर कुल भूषन हैं दासरथी सब जाके भुज भुव-भारु है॥ अरि लङ्क तोर जोर जाके संग बानर हैं सिंधुर हैं बाँधे जाके दल को न पारु है। तेगहि कै भेंटैं जौन राकस मरद जानै सरजा सिवाजी राम ही को अवतारु है॥ १६५॥

भूषण कहता है, सरजा शिवाजी रामचन्द्र ही का अवतार है; क्योंकि राम के संग सीता सोहती हैं और शिवाजी सी जो श्री (लक्ष्मी) है, ता संग उसके साथ सोहते हैं। रामचंद्र के सहाय सुलच्छन अर्थात् सुन्दर भाई लक्ष्मण हैं, और शिवाजी के सहायक सुलक्षण (अच्छे लक्षण धैर्य आदि) हैं। राम के पृथ्वी पर भरत नाम के भाई हैं, जिनकी सुन्दर नीति है, और शिवाजी के पक्ष में उनकी सुन्दर नीति पृथ्वी पर लोगों को भाई है, जिससे उनका नाम भूमण्डल भर में व्याप्त है। राम सूर्यकुल हैं और शिवाजी भी सूर (सूर्य) के कुल के या शूर घराने के हैं। दोनों ही कुलभूषण हैं। राम के पक्ष में वह दाशरथि (दशरथ के पुत्र) हैं और उनकी भुजाओं पर पृथ्वी का भार है, और शिवाजी के पक्ष में जिनके रथी (योद्धा) दास हैं तथा हाथों पर पृथ्वी का भार है। राम ने शत्रु की लंक (लंकापुरी) तोड़ी, शिवाजी ने भी शत्रुओं की लंक (कमर) तोड़ दी। राम के साथ वानरों का जोर है, शिवाजी के बाण जोरदार हैं राम ने सिंधु (सागर) को बाँधा है, और शिवाजी के यहाँ सिंधुर (हाथी) बँधे रहते हैं। दोनों ही के दल (सेना) का पार नहीं है। रामजी ने तो (विभीषण आदि को) ग्रहण करके भेंटा (गले लगाया) है, और राक्षसों का मर्दन करना जानते हैं तथा शिवाजी जिस मर्द को राक्षस-(सा क्रूर या अत्याचारी) जानते हैं, उसे पकड़कर तेग की भेंट करते हैं॥ १६५॥

तथा

देखत सरूप को सिहात न मिलन काज जग जीतिबे की जामें रीति छल बल की। जाके पास आवै ताहि निधन करत वेगि भूषन

भनत जाकी संगति न फल की ॥ कीरति कामिनी रच्यो सरजा सिवा की एक बस कै सकै न बसकरनी सकल की। चंचल सरस एक काहू पै न रहै दारी गनिका समान सूबेदारी दिल्ली दल की ॥ १६६ ॥

चंचल, सरस ( रसीली तथा लोभ पैदा करनेवाली ) और छिनाल वेश्या के समान दिल्ली-दल की सूबेदारी किसी एक के पास नहीं रहती ( टिकती )। सरूप ( स्वरूप ) को देखकर मिलने के लिये कौन नहीं ललचाता ? जिसमें ( गणिका और सूबेदारी, दोनों में ) छल-बल से युक्त जगत् भर के जीतने की रीति ( व्यवहार और ढंग ) देख पड़ती है। जिसके पास आती है, उसी का निधन ( मृत्यु ) करती है। गणिका के पक्ष में उसी को निर्धन कर देती है—कंगाल बना देती है। भूषण कहता है, जिसकी संगति फल देनेवाली नहीं है। सूबेदारी के पक्ष में किसी को नहीं फलती। शिवाजी एक कीर्ति-कामिनी ( कीर्तिरूपिणी अपनी पत्नी ) के वश में है, इसी से सबको वश में करनेवाली यह सूबेदारी उन्हें वश नहीं कर सकती* ॥ १६६ ॥

## अप्रस्तुत प्रशंसा

### लक्षण—दोहा

प्रस्तुति लीन्हें होत जहँ अप्रस्तुत परसंस।
अप्रस्तुतपरसंस सो कहत सुकबि अवतंस ॥ १६७ ॥

जहाँ प्रकट रूप से न कहकर अप्रकट रूप से प्रशंसा की जाय, वहाँ अप्रस्तुत प्रशंसा अलंकार होता है ॥ १६७ ॥

### उदाहरण

हिन्दुनि सों तुरकिनि कहैं तुम्हैं सदा संतोष।
नाहिन तुम्हरे पतिन पर सिव सरजा कर रोष ॥ १६८ ॥

तुर्कों की स्त्रियाँ हिन्दुओं की स्त्रियों से कहती हैं, तुम्हें सदा सन्तोष ( चैन ) है; क्योंकि तुम्हारे पतियों पर सरजा शिवाजी का रोष नहीं है ॥ १६८ ॥

अरि-तिय भिल्लिनि सों कहैं धन बन जाय इकंत।
सिव सरजा सों बैर नहिं सुखी तिहारे कंत ॥ १६९ ॥

---

* श्लेष दो प्रकार का होता है—सभंग ( जिसमें शब्द के टुकड़े करके दूसरे अर्थ निकलते हैं ) और अभंग ( जिसमें समूचे शब्द ही से कई अर्थ निकलते हैं )। ऊपर के दोनों छन्दों में दोनों तरह के श्लेष आए हैं। यथा—"सीता संग शोभित" सभंग श्लेष है और "सुलच्छन सहाय जाके" में अभंग।—टीकाकार

शत्रुओं की नारियाँ घने वन के एकान्त में जाकर भीलनियों से कहती हैं कि तुम्हारे पति सुखी हैं; क्योंकि सरजा शिवाजी से उनका वैर नहीं है ॥ १६९ ॥

तथा—सवैया

काहू पै जात न भूषन जे, गढ़पाल की मौज निहाल रहे हैं।
आवत हैं जु गुनी जन दच्छिन भौंसिला के गुन गीत लहे हैं॥
राजन राव सबे उमराव खुमान की धाक धुके यों कहे हैं।
संक नहीं सरजा सिवराज सों आज दुनी में गुनी निरभै हैं ॥१७०॥

भूषण कहता है, जो किसी के पास नहीं जाते, गढ़पाल (शिवा) की मौज (कृपा) से निहाल रहते हैं, ऐसे जो गुणीजन दक्षिण में आकर भौंसिला (शिवा) के गुणों के गीत गाते हैं, उन्हें देखकर, खुमान (शिवा) की धाक (रोब या आतंक) से काँप रहे सभी राजा, राव, उमराव यों कहते हैं कि गुणीजनों को सरजा शिवाजी से कोई शंका नहीं है, वे आज संसार में निर्भय हैं ॥ १७० ॥

## पर्यायोक्ति

लक्षण—दोहा

बचनन की रचना जहाँ बर्ननीय पर जानि।
परजायोकति कहत हैं भूषन ताहि बखानि ॥ १७१ ॥

जहाँ उपमेय पर वचन-रचना की जाती है, वहाँ पर्यायोक्ति अलंकार होता है ॥ १७१ ॥

उदाहरण—कवित्त

महाराज सिवराज तेरे बैर देखियतु घन बन ह्वै रहे हरम हबसीन के। भूषन भनत तेरे बैर रामनगर जवारि परबाह बहे रुधिर नदीन के॥ सरजा समर्त्थ बीर तेरे बैर बीजापुर बैरी बयरनि कर चीन्ह न चुरीन के। तेरे रोष देखियतु आगरे दिल्ली के बीच सिन्दुर के बिन्दु मुख इन्दु जवनीन के॥ १७२॥

हे महाराज शिवराज, तेरे वैर से हबशियों के हरम (अन्तःपुर) घने वन हो रहे देख पड़ते हैं (अर्थात् उन्हें सपरिवार घर छोड़कर जंगलों में रहना पड़ रहा है)। भूषण कहता है, तेरे वैर से रामनगर की जवारि (जथे) में रक्त की नदियों के प्रवाह बहे हैं। हे सरजा समर्थ वीर, तेरे वैर से बीजापुरवाले वैरियों की औरतों के हाथों में चुड़ियों के चिह्न भी नहीं रह गए। तेरे

रोष ( क्रोध ) से आगरे और दिल्ली के बीच यवनियों के मुखचंद्रों पर सेंदुर के बिंदु देख पड़ते हैं ( मतलब यह कि अपनी जान बचाने के लिये मुसलमानिनें हिंदू स्त्रियों का वेष धारण करती हैं ) ॥ १७२ ॥

## व्याजस्तुति

### लक्षण—दोहा

अस्तुति में निन्दा कढ़ै निन्दा में स्तुति होय।
ब्याजस्तुति ताको कहत कबि भूषन सब कोय ॥ १७३ ॥

जहाँ स्तुति में निन्दा निकले अथवा निन्दा में स्तुति होती हो, वहाँ सब कवि व्याजस्तुति अलंकार कहते हैं ॥ १७३ ॥

### उदाहरण—कवित्त

पीरी पीरी हुन्न तुम देत हौ मँगाय हमैं सुबरन हम सों परखि करि लत हौ। एक पल ही मैं लाख रूखन सों लेत लोग तुम राजा ह्वै कै लाख दीबे को सचेत हौ ॥ भूषन भनत महराज सिवराज बड़े दानी दुनी ऊपर कहाये केहि हेत हौ। रीझि हँसि हाथी हमैं सब कोऊ देत कहा रीझि हँसि हाथी एक तुमहियै देत हौ ॥ १७४ ॥

तुम हमें पीली-पीली हुन्नें* मँगाकर देते हो और हमसे सुवर्ण ( सोना और सुन्दर अक्षर अर्थात् कविता ) परखकर लेते हो। लोग एक ही पल में रूखों ( वृक्षों और रूखे मिजाजवालों ) से लाख ( लाख और लाखों रुपए ) ले लेते हैं, और तुम राजा होकर लाख ( लाखों की दौलत देने को सचेत अर्थात् तैयार हो। भूषण कहता है, हे महाराज शिवराज, तुम दुनिया के ऊपर बड़े दानी ( सर्वश्रेष्ठ अलौकिक दानी ) किसलिये कहलाए हो ? रीझकर हँसकर क्या एक तुम्हीं हमको हाथी देते हो, सभी लोग ( हमारी कविता से) रीझकर हँसकर हमें हाथी (हथोरी — ताली) देते हैं ॥१७४॥

### तथा

तू तो रातदिन जग जागत रहत वेऊ जागत रहत रातदिन बनरत हैं। भूषन भनत तू बिराजै रज भरो वेऊ रज भरी देहन दरी मैं बिचरत हैं ॥ तू तौ सूरगन को बिदारि बिहरत सूरमंडलै बिदारि वेऊ

---

* हुन एक सोने का छोटा सिक्का होता था। हूण लोगों ने इसे चलाया था, और यह बात इसके नाम से भी प्रकट होती है, जो हूण का अपभ्रंश है।

सुरलोक रत हैं। काहे ते सिवाजी गाजी तेरोई सुजस होत तोसों अरिबर सरिबर सी करत हैं॥ १७५॥

तू तो रात-दिन जगत् में जागता रहता है, और वे ( तेरे शत्रु ) भी रातोदिन वन में रहकर जगते हैं। भूषण कहता है, तू रज ( राजलक्ष्मी ) से भरा हुआ विराजता है, और वे भी रज ( धूल ) से भरे ( सने हुए ) शरीर से पर्वतों की कन्दराओं में विचरते हैं। तू सूरगन ( शूरगण ) को फाड़कर विहार करता है, और वे भी सूर ( सूर्यमण्डल ) को भेदकर सुरलोक को जाते हैं। हे शिवाजी गाजी, फिर तेरा ही सुयश क्यों होता है? तेरे श्रेष्ठ शत्रु तेरी सरवर ( बराबरी )-सी करते हैं॥ १७५॥

## प्रथम आक्षेप

लक्षण—दोहा

पहिले कहिये बात कछु पुनि ताको प्रतिषेध।
ताहि कहत आच्छेप हैं भूषन सुकबि सुमेध॥ १७६॥

पहले कुछ बात कहिए और फिर उसका प्रतिषेध ( निषेध ) कीजिए, ऐसा जहाँ हो, वहाँ आक्षेप अलंकार होता है॥ १७६॥

उदाहरण—सवैया

जाय भिरौ न भिरे बचिहौ भनि भूषन भौंसिला भूप सिवा सों।
जाय दरीन दुरौ दबि औ तजि कै दरियाव लँघौ लघुना सों॥
सीछन काज उजीरन को कढे बोल यों एदिलसाहि सभा सों।
छूटि गयो तो गयो परनालो सलाह की राह गहौ सरजा सों॥ १७७॥

भूषण कहता है, आदिलशाह की सभा ( दरबार ) में वजीरों को शिक्षा देने के लिये ये वचन निकले ( अर्थात् किसी ने यह कहा ) कि जाकर भिड़ो; मगर भौंसिला-भूप शिवाजी से भिड़कर ( जीते ) न बचोगे। जाकर कन्दराओं में छिपो; लेकिन ( वहाँ भी टिक न सकोगे ) कन्दराओं को भी छोड़कर तेज़ी से —फुर्ती से— समुद्र के पार चले जाओ। परनाला ( पन्हालगढ़ ) छूट गया— हाथ से निकल गया—तो गया, अब सरजा से सलाह ( सुलह ) की राह पकड़ो॥ १७७॥

## द्वितीय आक्षेप

लक्षण—दोहा

जेहि निषेध अभ्यास ही भनि भूषन सो और।
कहत सकल आच्छेप हैं जे कबि-कुल-सिरमौर॥ १७८॥

जहाँ अभ्यास से ही निषेध हो, वहाँ कविकुलशिरोमणियों के मत से दूसरे प्रकार का आक्षेप अलंकार होता है ।। १७८ ।।

उदाहरण—कवित्त

पूरब के उत्तर के प्रबल पछाँह हू के सब बादसाहन के गढ़ कोट हरते । भूषन कहैं यों अवरंग सों वजीर जीति लीबे को पुरतगाल सागर उतरते ॥ सरजा सिवा पर पठावत मुहीम काज हजरत हम मरिबे को नाहिं डरते । चाकर हैं उजुर कियो न जाय नेक पै कछु दिन उबरते तो घने काज करते ॥ १७९ ॥

भूषण कहता है, औरंगज़ेब से उसके वज़ीर कहते हैं कि हम पूर्व, उत्तर और पश्चिम के प्रबल बादशाहों से उनके गढ़ छीन लेते, पुर्तगाल को जीतने के लिये सागर उतर जाते; पर आप हमें जो युद्ध करने के लिये सरजा शिवाजी के ऊपर भेजते हैं, सो ठीक नहीं । हज़रत, हम मरने को नहीं डरते; आपके नौकर हैं, इसलिये उज़्र भी नहीं किया जाता; लेकिन इस हुक्म से जो उबरते, अर्थात् शिवाजी पर चढ़ाई करने की आज्ञा अगर न मिलती और हम जीते बच जाते, तो ( हुज़ूर के ) बहुत काम करते ।। १७९ ।।

## विरोध

लक्षण—दोहा

द्रब्य क्रिया गुन में जहाँ उपजत काज बिरोध ।
ताको कहत बिरोध हैं भूषन सुकबि सुबोध ॥ १८० ॥

वस्तु, क्रिया और गुण में जहाँ कार्य का विरोध उत्पन्न होता है, वहाँ सुबोध कवि लोग विरोध अलंकार कहते हैं ।। १८० ।।

उदाहरण—सवैया

श्रीसरजा सिव तो जस सेत सों होत हैं बैरिन के मुख कारे ।
भूषन तेरे अरुन्न प्रताप सपेद लखे कुनबा नृप सारे ॥
साहितनै तव कोप कृसानु ते बैरि गरे सब पानिपवारे ।
एक अचंभव होत बड़ो तिन ओंठ गहे अरि जात न जारे ॥ १८१ ॥

हे सरजा शिवाजी, तेरे श्वेत ( उज्ज्वल ) यश से वैरियों के मुँह काले होते हैं । भूषण कहत

है, तेरे अरुणवर्ण (अथवा सूर्य-सदृश लाल) प्रताप से तेरे शत्रु सब राजा कुटुम्ब सहित सफेद पड़ जाते हैं। हे शाहि के पुत्र, तेरे क्रोध की आग से सभी पानीवाले (अभिमानी) वैरी गल गए। पर यह एक बड़ा आश्चर्य होता है कि वे जब होठों से तृण पकड़कर (यह शरणागत की निशानी है) आते हैं, तो फिर उन शत्रुओं को तुम्हारा कोप-कृशानु नहीं जलाता ॥ १८१ ॥

## विरोधाभास

### लक्षण—दोहा

जहँ बिरोध सो जानिए साँच बिरोध न होय।
तहाँ बिरोधाभास कहि बरनत हैं सब कोय ॥ १८२ ॥

जहाँ विरोध-सा प्रतीत होता हो, पर वास्तव में सचमुच विरोध न हो, वहाँ विरोधाभास अलंकार होता है ॥ १८२ ॥

### उदाहरण—सवैया

दच्छिन नायक एक तुही भुव भामिनि को अनुकूल ह्वै भावै।
दीनदयाल न तोसो दुनी पर म्लेच्छ को दीनहिं मारि मिटावै ॥
श्रीसिवराज भनै कबि भूषन तेरे सरूप को कोउ न पावै।
सूर सुबंस में सूरसिरोमनि ह्वै करि तू कुलचन्द्र कहावै ॥१८३॥

कवि भूषण कहता है, हे श्रीशिवराज, तू ही एक दक्षिण नायक (दक्षिण दिशा का राजा और अनेक स्त्रियों से एक-सा प्रेम रखनेवाला नायक) है। तू पृथ्वीरूप भामिनी को अनुकूल (माफिक और एक पत्नी-व्रत नायक) होकर भाता है। दुनिया में तुझ-सा दीनदयालु और नहीं है, और तू म्लेच्छों के दीन (धर्म) को मारकर मिटाता है। तेरी समता या तेरे स्वरूप को कोई नहीं पाता। सूर (सूर्य) के वंश में उत्पन्न होकर तू शूर-शिरोमणि कुल-चन्द्र कहलाता है ॥ १८३ ॥

## प्रथम विभावना

### लक्षण—दोहा

भयो काज बिन हेतु ही बरनत हैं जिहि ठौर।
तहँ बिभावना होत है भूषन कबि सिरमौर ॥ १८४ ॥

जहाँ कारण के विना ही कार्य का होना कहा जाता है, वहाँ विभावना अलंकार होता है ॥ १८४ ॥

उदाहरण—सवैया

बीर बड़े बड़े मीर पठान खरो रजपूतन को गन भारो।
भूषन आय तहाँ सिवराज लयो हरि औरँगजेब को गारो॥
दीन्हो कुज्वाब दिलीपति को अरु कीन्हो वजीरन को मुँह कारो।
नायो न माथहि दक्खिननाथ न साथ में सैन न हाथ हथ्यारो ॥१८५॥

भूषण कहता है, जहाँ बड़े-बड़े वीर, मीर, पठान और राजपूतों का भारी समूह खड़ा था, वहाँ आकर शिवराज ने औरंगज़ेब का गरूर हर लिया। दिल्ली के स्वामी को मुँह पर ही कड़ा जवाब दिया और वज़ीरों का मुँह काला कर दिया। दक्षिण के नाथ ने साथ में सेना और हाथ में हथियार न रहने पर भी शाह को अपना सिर नहीं नवाया ॥ १८५ ॥

तथा—दोहा

साहितनै सिवराज की सहज टेव यह ऐन।
अनरीझे दारिद हरै अनखीझे अरिसैन ॥ १८६ ॥

शाहि-तनय शिवराज का यह सहज स्वभाव है कि विना रीझे ही ( रीझने के पहले ही ) वह दारिद्र्य को हर लेता है, और विना खीझे ही शत्रु-सेना का नाश कर डालता है ॥ १८६ ॥

## द्वितीय और तृतीय विभावना

लक्षण

जहाँ हेतु पूरन नहीं उपजत है पर काज।
कै अहेतु ते और यों द्वै बिभावना साज ॥ १८७ ॥

जहाँ कारण पूर्ण न होने पर भी कार्य पूरा हो, वहाँ हेतु-विभावना ( दूसरी ) अलंकार होता है, और जहाँ कारण के विरुद्ध कार्य हो, वहाँ अहेतु-विभावना (तीसरी ) अलंकार होता है ॥ १८७॥

उदाहरण—कवित्त ( हेतु-विभावना )

दच्छिन को दाबि करि बैठो है सइस्तखान पूना माहिं दूना करि जोर कारबार को। हिन्दुवान खम्भ गढ़पति दलथम्भ भनि भूषन भरैया कियो सुजस अपार को ॥ मनसबदार चौकीदारन गँजाय महलन में मचाय महाभारत के भार को। तो सो को सिवाजी जेहि दो सौ आदमी सों जीत्यो जंग सरदार सौ हजार असवार को १८८॥

पूना में दूना तलवार का ज़ोर करके शाइस्ताखाँ दक्षिण देश को दबाकर बैठा। भूषण कहता है, हिन्दुओं के खंभ और गढ़पतियों के दल को थामनेवाले अर्थात् गढ़पतियों के सरदार शिवाजी ने वहाँ अपार यश ( का काम ) किया। मनसबदारों, चौकीदारों को मर्दित करके और महलों में महाभारत का-सा युद्ध मचाकर तू ने दो सौ सिपाहियों से सौ हज़ार सवारों के सरदार ( शाइस्ताखाँ ) को जंग में जीत लिया। तुझ-सा शिवाजी, और कौन है? ॥१८८॥

तथा ( अहेतु-विभावना )

ता दिन अखिल खलभलैं खल खलक में जा दिन सिवाजी ग़ाजी नेक करखत हैं। सुनत नगारन अगार तजि अरिन की दारगन भाजत न बार परखत हैं॥ छूटे बार बार छूटे बारन ते लाल देखि भूषन सुकबि बरनत हरखत हैं। क्यों न उतपात होहिं बैरिन के झुंडन में कारे घन उमड़ि अँगारे बरखत हैं॥ १८९ ॥

शिवाजी ग़ाज़ी जिस दिन कुछ भी करखते हैं, क्रोध करते हैं, उस दिन सारे संसार की खल-मण्डली में खलभल ( हलचल ) मच जाती है, वे घबरा उठते हैं। उनके नगाड़ों की आवाज़ सुनते ही शत्रुओं की नारियाँ अपने घर छोड़कर भाग खड़ी होती हैं, तनिक देर भी नहीं रुकतीं। सुकवि भूषण यह वर्णन करते हुए हर्षित होता है कि उनके बाल बारम्बार खुल जाते हैं और उनमें गुँथे हुए लाल ( एक रत्न ) खुल-खुलकर गिरते हैं। वैरियों के झुंड में उत्पात क्यों न हो, जब कि वहाँ काले बादल ( वैरियों की स्त्रियों के बिखरे हुए केश ) अंगारे ( लाल मणियाँ ) बरसाते हैं॥ १८९ ॥

## चतुर्थ विभावना

लक्षण—दोहा

जहाँ प्रगट भूषन भनत हेतु काज ते होय।
सो विभावना औरऊ कहत सयाने लोय॥ १९० ॥

भूषण कहता है, जहाँ कार्य से कारण की उत्पत्ति हो, वहाँ भी विभावना अलंकार होता है॥ १९० ॥

उदाहरण

अचरज भूषन मन बढ़्यो श्रीसिवराज खुमान।
तव कृपान धुव धूम ते भयो प्रताप कृसान॥ १९१ ॥

श्रीशिवराज, भूषण के मन में यह देखकर आश्चर्य बढ़ा कि तुम्हारी कृपाण के धुएँ से प्रताप की आग पैदा हुई ( तलवार का रंग धुएँ का-सा होता है, और प्रताप या तेज की उपमा अग्नि से देना स्वाभाविक ही है ) ॥ १६१ ॥

तथा—कवित्त

साहितनै सिव तेरो सुनत पुनीत नाम धाम धाम सबही को पातक कटत है। तेरो जस काज आज सरजा निहारि कबि मन भोज बिक्रम कथा ते उचटत है ॥ भूषन भनत तेरो दान संकलप जल अचरज सकल मही में लपटत है। और नदी नदन ते कोकनद होत तेरो कर कोकनद नदी-नद प्रगटत है ॥ १६२ ॥

हे शाहि के पुत्र शिवाजी, तेरा पवित्र नाम सुनते ही घर-घर सबके पाप कट जाते हैं। हे सरजा, तेरे यश के कार्य को देखकर आज विक्रमादित्य और महाराज भोज की कथा से कवि का मन उचट जाता है ( अर्थात् तेरे यश के आगे विक्रम और भोज के यश का वर्णन करने में कवि का मन नहीं लगता )। भूषण कहता है, तेरे दान के संकल्प का जल सारी पृथ्वी में अचरज भर देता है। और नदियों तथा नदों से लाल कमल निकलते हैं, पर तेरे कर-कमल से ( दान संकल्प-जल के ) नदी-नद प्रकट होते हैं ॥ १६२ ॥

## विशेषोक्ति

लक्षण—दोहा

जहाँ हेतु समरथ भयहु प्रगट होत नहिं काज।
तहाँ बिसेसोकति कहत भूषन कबि सिरताज ॥ १६३ ॥

जहाँ कारण समर्थ ( प्रबल ) होने पर भी कार्य नहीं प्रकट होता, वहाँ विशेषोक्ति अलंकार होता है ॥ १६३ ॥

उदाहरण—सवैया

दै दस पाँच रुपैयन को जग कोऊ नरेस उदार कहायो।
कोटिन दान सिवा सरजा के सिपाहिन साहिन को बिचलायो ॥
भूषन कोऊ गरीबन सों भिरि भीमहु ते बलवंत गनायो।
दौलत इन्द्र समान बढ़ी पै खुमान के नेक गुमान न आयो ॥ १६४ ॥

जगत् में कोई राजा दस पाँच रुपए देकर ही उदार कहलाना चाहता है, पर सरजा शिवाजी के

करोड़ों के दान ने सिपाहियों और शाहों को विचलित —चकित—कर दिया है। भूषण कहता है, कोई ग़रीबों से भिड़कर— लड़कर—अपने को भीमसेन से भी बढ़कर बलवान् गिनता है ; पर शिवाजी की दौलत (वैभव) इन्द्र के समान बढ़ने पर भी उनके मन में तनिक भी घमंड नहीं आया॥ १९४ ॥

## असम्भव

लक्षण—दोहा

अनहूवे की बात कछु प्रगट भई सी जानि।
तहाँ असंभव बरनिये सोई नाम बखानि॥ १९५ ॥

जहाँ असंभव-सी बात वर्णन की जाय, वहाँ असंभव अलंकार होता है॥ १९५ ॥

उदाहरण

औरँग यों पछितात मैं करतो जतन अनेक।
सिवा लेइगो दुरग सब को जानै निसि एक॥ १९६ ॥

औरंगज़ेब अपने मन में यों पछताता है कि मैं अनेक यत्न करता, लेकिन यह कौन जानता था कि शिवाजी एक ही रात को सब क़िले ले लेगा ? ॥ १९६ ॥

तथा—कवित्त

जसन के रोज यों जलूस गहि बैठ्यो जोऽब इन्द्र आवै सोऊ लागै औरँग की परजा। भूषन भनत तहाँ सरजा सिवाजी गाजी तिनको तुजकु देखि नेकहू न लरजा॥ ठान्यो न सलाम भान्यो साहि को इलाम धूमधाम कै न मान्यो रामसिंह हू को बरजा। जासों बैर करि भूप बचै न दिगंत ताके दन्त तोरि तखत तरे ते आयो सरजा॥ १९७ ॥

जशन (उत्सव) के दिन बादशाह औरंगज़ेब यों जलूस के साथ बैठा कि इन्द्र भी जो आवे, तो वह उसकी प्रजा (रैयत) जान पड़े। भूषण कहता है, वहाँ सरजा शिवाजी वीर शाह और उसके साथियों की शान या रोब को देखकर ज़रा भी नहीं काँपा। उसने सलाम नहीं किया, शाह की आज्ञा को तोड़ा, और धूमधाम करके रामसिंह* का भी बरजना नहीं माना। जिस

* यह जयपुर के राजकुमार और मिर्ज़ा जयसिंह के बेटे थे। इतिहास के पाठक जानते हैं कि मिर्ज़ा जयसिंह जब चढ़ाई करके दक्षिण गए, तब शिवाजी ने उन्हें एक पत्र लिखा था, जिसमें हिंदू होकर हिंदू के विरुद्ध युद्ध करने के लिये उन्हें मीठी भर्त्सना दी थी। जयसिंह ने ही समझा-बुझाकर शिवाजी को दिल्ली भेजा था और यह प्रतिज्ञा की थी कि बादशाह उनका सम्मान करेगा, दग़ा न होगी। कुँअर रामसिंह ने बादशाह का बुरा रुख़ देखकर पिता की प्रतिज्ञा रखने के लिये शिवाजी को दिल्ली से निकल भागने में सहायता पहुँचाई थी।

औरंगजेब से बैर करके कोई राजा दिगन्त ( दिशाओं के छोर ) में भी भागकर नहीं बचता, उसी के दाँत तोड़कर ( मान मर्दन करके ) तख़्त के तले से ( पास से ) शिवाजी चले आए ( और शाह उनका कुछ बिगाड़ नहीं सका ) ॥ १९७ ॥

## असंगति प्रथम

लक्षण—दोहा

हेतु अनत ही होत जहँ काज अनत ही होय।
ताहि असंगति कहत हैं भूषन सुमति समोय॥ १९८॥

कारण जहाँ अन्यत्र हो और कार्य अन्यत्र, वहाँ असंगति अलंकार होता है ॥ १९८ ॥

उदाहरण—कवित्त

महाराज सिवराज चढ़त तुरंग पर ग्रीवा जात नै कर गनीम अति बल की। भूषन चलत सरजा की सैन भूमि पर छाती दरकति है खरी अखिल खल की॥ कियो दौरि घाव उमरावन अमीरन पै गई कटि नाक सगरेई दिली दल की। सूरत जराइ कीन्हो दाह पातसाह उर स्याही जाय सब पातसाही मुख झलकी॥ १९९॥

महाराज शिवराज जब घोड़े पर चढ़ते हैं, तब महाबली शत्रु की गर्दन झुक जाती है। भूषण कहता है, पृथ्वी पर शिवाजी की सेना के चलने पर संपूर्ण दुष्टों की छाती दरक जाती है। शिवाजी ने जब दौड़कर अमीर-उमरावों पर चोट करके उन्हें घायल किया, तो सारे दिल्ली के कटक की नाक कट गई ( बेइज्जती हो गई )। शिवाजी ने सूरत शहर को जलाया तो बादशाह की छाती में जलन होने लगी, और उसकी सारी स्याही जाकर बादशाही ( सल्तनत ) के मुख पर झलकी ॥ १९९ ॥

## असंगति द्वितीय

लक्षण—दोहा

आन ठौर करनीय सो करै और ही ठौर।
ताहि असंगति और कवि भूषन कहत सगौर॥ २००॥

और जगह करने का काम और ही जगह जहाँ किया जाय, वहाँ भी असंगति अलंकार होता है ॥ २०० ॥

उदाहरण—कवित्त

भूपति सिवाजी तेरी धाक सों सिपाहिन के राजा पातसाहन के मन ते अहं गली। भौंसिला अभंग तू तौ जुरतौ जहाँई जंग तेरी एक फते होत मानो सदा संग ली॥ साहि के सपूत पुहुमी के पुरहूत कवि भूषन भनत तेरी खरगउ दंगली। सत्रुन की सुकुमारी थहरानी सुन्दरी औ सत्रु के अगारन में राखे जंतु जंगली॥ २०१॥

हे महाराज शिवाजी, तेरे आतंक से सिपाहियों ( शूरों ), राजों और बादशाहों के मन से अहंकार गिर गया। हे भौंसिला, तू अभंग है, टूटनेवाला नहीं है। तू जहाँ युद्ध करता है, वहाँ तेरी हा फतह होती है। उसको ( विजय को ) मानव तूने सदा संग ले रक्खा है। हे शाहि के सपूत, हे पृथ्वी के इन्द्र: कवि भूषण कहता है, तेरी दंगली तलवार ने भी शत्रुओं की सुकुमारी सुन्दरी स्त्रियों को कँपा दिया है और शत्रुओं के घरों में जंगली जानवर रख दिए हैं, अथात् उन्हें उजाड़ कर जंगल बना दिया है॥ २०१॥

## असंगति तृतीय

लक्षण—दोहा

करन लगै औरै कछू करै औरई काज।<br>
तहाँ असंगति होत है कहि भूषन कविराज॥ २०२॥

जहाँ करने तो कुछ और लगे, पर काम और ही कर बैठे, वहाँ भी असंगति होती है॥२०२॥

उदाहरण—सवैया

साहितने सरजा सिव के गुन नेकहु भाखि सक्यो न प्रबीनो।<br>
उद्यतहोत कछू करिबे को करै कछु बीर महारस भीनो॥<br>
ह्याँ ते गयो चकतै सुख देन को गोसलखाने गयो दुख दीनो।<br>
जाय दिली दरगाह सुसाह को भूषन बैरि बनाय ही लीनो॥ २०३॥

भूषण कहता है, शाहितनय सरजा शिवाजी के गुण को प्रवीण लोग तनिक भी नहीं कह सके। वीर-रस में सना हुआ वह करने को कुछ उद्यत होता है, पर करता कुछ और ही है। यहाँ से चकत्ता औरंगज़ेब को सुख देने के लिये गया, पर ग़ुसलखाने में जाकर औरंगज़ेब को दुःख दिया। दिल्ली की दरगाह में जाकर शाह को अपना वैरी ही बना लिया॥ २०३॥

### बिषम

लक्षण—दोहा

कहाँ बात यह कहँ वहै यों जहँ करत बखान।
तहाँ बिषम भूषन कहत भूषन सुकबि सुजान॥ २०४॥

कहाँ यह बात और कहाँ वह, यों जहाँ बखान किया जाय, वहाँ विषम अलंकार होता है ॥२०४॥

उदाहरण—सवैया

जावलि बार सिंगारपुरी औ जवारि को राम के नैरि को गाजी।
भूषन भौंसिला भूपति ते सब दूरि किये करि कीरति ताजी॥
बैर कियो सिवजी सों खवासखाँ डौंड़ियै सैन बिजैपुर बाजी।
बापुरो एदिल साहि कहाँ कहाँ दिल्ली को दामनगीर सिवाजी ॥२०५॥

जावली[1], बार[2], सिंगारपुरी[3], जवारि रामनेरि ( रामनगर ) के जो ग़ाज़ी ( शूर-वीर ) थे, उन्हें भौंसिला-भूपति शिवाजी ने मार भगाया और अपनी कीर्ति ताज़ी की। ख़वासख़ाँ * ने शिवाजी से वैर किया तो बीजापुर में ही शिवाजी की सेना के नगाड़े बजे। कहाँ बेचारा आदिलशाह ( बीजापुर का ) और कहाँ दिल्ला फ़तेह करने का दावा रखनेवाला शिवाजी ! अन्तरं महदन्तरम् !!! ॥ २०५ ॥

लै परनालो सिवा सरजा करनाटक लौं सब देस बिगूँचे।
बैरिन के भगे बालकबृन्द भनै कबि भूषन दूरि पहुँचे॥
नाँघत नाँघत घोर घने बन हारि परे यों कटे मनो कूँचे।
राजकुमार कहाँ सुकुमार कहाँ बिकरार पहार वे ऊँचे ॥२०६॥

सरजा शिवा ने परनाला लेकर कर्नाटक तक सब देशों का तहसनहस कर डाला या उन्हें अपने हाथ में कर लिया। भूषण कहता है, वैरियों के बालकवृन्द भागे और वे दूर पहुँचे। घोर

---

( १ ) यहाँ चंद्रराव मोरे का राज्य था। शिवाजी का इस पर अधिकार सन् १६५५ में हुआ था। वहीं अफ़ज़लख़ां, शिवाजी के हाथ से, सन् १६५९ में मारा गया था।

( २ ) यह स्थान जावली के पास ही था।

( ३ ) यह सितारा के दक्षिण-पश्चिम कोण में है। सन् १६६१ में इसपर शिवाजी का क़ब्ज़ा हुआ था।

( ४ ) इसे जयपुर भी कहते हैं। राजपूताने का जयपुर इससे भिन्न है।

* शिवाजी से इसने कई युद्ध किए। यह बीजापुर के मुख्य वज़ीर ( ख़ां मोहम्मद ) का बेटा था। पीछे आदिलशाह के कमसिन बेटे ( सुलतान सिकंदर ) का गार्जियन हुआ। यह औरंगज़ेब से मिल गया था। अंत को बहलोलख़ाँ की साज़िश से मारा गया।

घने वन नाँघते-नाँघते हारकर यों गिर पड़े, जैसे उनके कूँचे ( घुड़नस, जो पैर में होती है ) कट गए। कहाँ सुकुमार राजकुमार और कहाँ वे विकराल ऊँचे पहाड़ ! ॥ २०६ ॥

## सम

लक्षण—दोहा

जहाँ दुहूँ अनुरूप को करिये उचित बखान।
सम भूषन तासों कहत भूषन सकल सुजान ॥ २०७ ॥

जहाँ दोनों अनुरूप वस्तुओं का उचित बखान किया जाय, वहाँ सम अलंकार होता है ॥ २०७ ॥

उदाहरण—सवैया

पञ्च हजारिन बीच खड़ा किया मैं उसका कुछ भेद न पाया।
भूषन यों कहि औरँगजेब उजीरन सों बेहिसाब रिसाया॥
कम्मर की न कटारी दई इसलाम ने गोसलखाना बचाया।
जोर सिवा करता अनरत्थ भली भई हत्थ हथ्यार न आया ॥ २०८ ॥

भूषण कहता है—औरंगजेब अपने वज़ीरों से कहनेलगा कि "मैंने उसे पंजहज़ारी मनसबदारों के बीच खड़ा किया ( पर वह सन्तुष्ट नहीं हुआ ); उसका कुछ भेद न पाया ( वह क्या चाहता है, यह समझ में नहीं आया ) वह (अर्थात् शिवाजी बेहद ख़फा हुआ)। उसने कमर का कटारी नहीं दी। इसलाम ( अर्थात् दीन अथवा ईश्वर ) ग़ुसलख़ाना बचाया ( अर्थात् ग़ुसलख़ाने में मेरी जान बचाई )। शिवा ज़रूर अनर्थ कर डालता; अच्छा हुआ, जो उसके हाथ में ( उस समय ) हथियार नहीं आया" ॥ २०८ ॥

तथा—दोहा

कछु न भयो केतो गयो हार्‌यो सकल सिपाह।
भली करै सिवराज सों औरँग करै सलाह ॥ २०९ ॥

( शाह के पक्ष के लोग कहते हैं ) अभी कुछ नहीं हुआ; कितना गया है। सब सिपाही ( योद्धा ) हार गए। औरंगज़ेब अच्छा करे, जो शिवराज से सुलह कर ले ॥ २०९ ॥

## विचित्र

लक्षण

जहाँ करत हैं जतन फल चित्त चाह बिपरीत।
भूषन ताहि बिचित्र कहि बरनत सुकबि विनीत ॥ २१० ॥

जहाँ प्रकट में यत्न कुछ और किया जाय, पर चित्त में उसके विपरीत फल की चाह हो, वहाँ विचित्र अलंकार होता है ॥ २१० ॥

उदाहरण

तैं जय सिंहहिं गढ़ दिये सिव सरजा जस हेत।
लीन्हे कैयौ बरस में बार न लागी देत ॥ २११ ॥

हे सरजा शिवाजी, तू ने यश के लिये राजा जयसिंह * को क़िले दिये। लिया तो उन्हें कई वर्षों में था, पर देने में कुछ भी देर नहीं लगी ॥ २११ ॥

तथा—कवित्त

बेदर कल्यान दै परेंभा आदि कोट साहि एदिल गँवाय है नवाय निज सीस को। भूषन भनत भागनगरी कुतुब साहि दै करि गँवायो रामगिरि से गिरीस को॥ भौंसिलाभुवाल सहितनै गढ़पाल दिन दोऊ न लगाये गढ़ लेत पँचतीस को। सरजा सिवाजी जयसाह मिरजा को लीने सौगुनी बड़ाई गढ़ दीन्हे हैं दिलीस को॥ २१२ ॥

भूषण कहता है, आदिलशाह ने बेदर †, कल्यान ‡, परेंआ ( परेंदा ) आदि के क़िले अपने शीश को नवाकर ( झुकाकर ) गँवाए ( अर्थात् शिवाजी को दिए ); क़ुतुबशाह ने भागनगरी ( भागनेर ) देकर रामगिरि-जैसे पहाड़ी क़िले को गँवाया; भौंसिला-भूपाल गढ़पाल सरजा शिवाजी ने जिन पैंतिस क़िलों को लेने में दो दिन भी नहीं लगाए, उन्हीं को सौ गुनी बड़ाई लेकर मिर्जा जयसिंह की मार्फ़त दिल्ली के बादशाह को दे डाला ॥ २१२ ॥

लक्षण—दोहा

जहँ मनबांछित अरथ ते प्रापति कछु अधिकाय।
तहाँ प्रहरषन कहत हैं भूषन जे कविराय ॥ २१३ ॥

जितना चाहो, उतने से अधिक जहाँ कुछ मिले, वहाँ प्रहर्षण अलंकार होता है ॥ २१३ ॥

---

* यह महाराज बड़े वीर और राजनीतिज्ञ थे। इन्हें बादशाह से मिर्ज़ा की उपाधि मिली थी। इनका ज़िक्र पहले रामसिंह-संबंधी नोट में आ चुका है। इनसे शिवाजी को दबना पड़ा था। इन्हें शिवाजी ने मुग़लों के सब क़िले और अहमदनगर के निज़ामशाही बादशाहों से जीते हुए ३२ में से २० क़िले वापस देकर संधि की थी। राजा जयसिंह की मृत्यु विष देने से हुई। सन् १६६६ के मार्च की यह घटना है। इन्हें बादशाह ने छःहज़ारी मनसब दे रक्खा था।

† यह बहमन-वंश के बादशाहों की राजधानी थी।

‡ यह सूबा कोंकण में था। निज़ामशाही बादशाहों का पहले यहाँ राज्य था। सन् १६३६ में आदिलशाह ने और सन् १६४८ में उससे शिवाजी ने इसे जीत लिया।

उदाहरण—कवित्त

साहितनै सरजा की कीरति सों चारो ओर चाँदनी बितान छिति छोर छाइयतु है। भूषन भनत ऐसो भूप भौंसिला है जाको द्वार भिच्छुकन सों सदाई भाइयतु है॥ महादानी सिवाजी खुमान या जहान पर दान के प्रमान जाके यों गनाइयतु है। रजत की हौंस किये हेम पाइयतु जासों हयन की हौंस किये हाथी पाइयतु है॥ २१४॥

शाहितनय सरजा शिवाजी की कीर्ति से चारों ओर पृथ्वी के छोर तक चाँदनी के वितान (चँदोवे) छा जाते हैं। भूषण कहता है, भौंसिला-भूप ऐसा है, जिसका द्वार भिक्षुकों को सदा भाता है। खुमान शिवाजी इस संसार में महादानी हैं, जिनके दान का प्रमाण यों गिनाया जाता है कि चाँदी की इच्छा करने पर सोना मिलता है और घोड़े की इच्छा करने पर हाथी पाया जाता है॥ २१४॥

## विषादन

लक्षण—दोहा

जहँ चितचाहे काज ते उपजत काज बिरुद्ध।
ताहि विषादन कहत हैं भूषन बुद्धि बिसुद्ध॥ २१५॥

जहाँ इच्छित कार्य से विरुद्ध कार्य उत्पन्न हो, वहाँ विषादन अलंकार होता है॥ २१५॥

उदाहरण—सवैया

दारहि दारि मुरादहि मारि कै संगरसाह सुजै बिचलायो।
कै कर मैं सब दिल्ली की दौलति औरहु देस घने अपनायो॥
बैर कियो सरजा सिव सों यक औरँग के न भयो मनभायो।
फौज पठाई हुती गढ़ लेन को गाँठिहु के गढ़ कोट गँवायो॥२१६॥

दारा (अपने बड़े भाई) को मारकर, मुराद (यह भी भाई था) को मारकर, युद्ध में शाह सुजा (यह तीसरा भाई था) को हराया (औरंगजेब के तीनों भाई उसके हाथ से मारे गए थे)। फिर दिल्ली की सब दौलत हाथ में करके और भी घने देश अपने अधिकार में कर लिए। पर जब सरजा शिवाजी से वैर किया, तब औरंगजेब के मन की बात नहीं हुई। उसने अपनी सेना गढ़ लेने को भेजी, लेकिन अपनी गाँठ के भी गढ़ और कोट गँवा दिए।॥ २१६॥

तथा—दोहा

महाराज सिवराज तव बैरी तजि रस रुद्र।
बचिबे को सागर तिरे बूढ़े सोक-समुद्र॥ २१७॥

हे महाराज शिवराज, तेरे वैरी रौद्र रस ( अर्थात् युद्ध ) त्यागकर बचने के लिये सागर के पार उतर गए, पर वे शोक के सागर में डूब गए॥ २१७॥

## अधिक

लक्षण

जहाँ बड़े आधार ते बरनत बढ़ि आधेय।
ताहि अधिक भूषन कहत जानि सुग्रंथ प्रमेय॥ २१८॥

जहाँ आधार से आधेय को बढ़ाकर उसका वर्णन किया जाय, वहाँ अधिक अलंकार होता है॥ २१८॥

उदाहरण

सिव सरजा तव हाथ को नहिं बखान करि जात।
जाको बासी सुजस सब त्रिभुवन में न समात॥ २१९॥

हे सरजा शिवाजी, तुम्हारे हाथ का बखान नहीं किया जा सकता, जिसमें रहनेवाला तुम्हारा सुयश त्रिभुवन में नहीं समाता॥ २१९॥

तथा—कवित्त

सहज सलीलसील जलद से नील डील पब्बय से पील देत नाहिं अकुलात है। भूषन भनत महाराज सिवराज देत कंचन को ढेर जो सुमेरु सो लखात है॥ सरजा सवाई कासों करि कबिताई तव हाथ की बड़ाई को बखान करि जात है। जाको जस टंक सातो दीप नव खंड महिमंडल की कहा ब्रहमंड ना समात है॥ २२०॥

सहज ही लीला करने के स्वभाववाले, पानी ( अर्थात् मेघ ) के समान नीले रंगवाले, पहाड़ के समान ऊँचे डीलडौल के ( अथवा वज्र के समान कठोर शरीर के ) हाथी देते शिवाजी नहीं अकुलाते अर्थात् नहीं ऊबते। भूषण कहता है, महाराज शिवराज सुवर्ण का ढेर देते हैं, जो सुमेरु सा देख पड़ता है। हे सरजा, कवित्त करके तुम्हारे सुयश का बखान किससे किया जा सकता

है ? तुम्हारा टंक ( एक छोटी तौल, छटाँक का छठा हिस्सा ( अर्थात् थोड़ा-सा भी यश सातो द्वीप*, नवो खण्ड† पृथ्वी मण्डल की कौन कहे, सारे ब्रह्माण्ड में नहीं समाता ॥ २२० ॥

## अन्योन्य

लक्षण—दोहा

अन्योन्या उपकार जहँ यह बरनन ठहराय।
ताहि अन्योन्या कहत हैं अलंकार कबिराय ॥ २२१ ॥

जहाँ परस्पर एक से दूसरे की शोभा अथवा उपकार होने का वर्णन किया जाय, वहाँ अन्योन्य अलंकार होता है ॥ २२१ ॥

उदाहरण—सवैया

तो कर सों छिति छाजत दान है दानहू सों अति तो कर छाजे।
तैंही गुनी कि बड़ाई सजे अरु तेरी बड़ाई गुनी सब साजे॥
भूषन तोहि सों राज बिराजत राज सों तू सिवराज बिराजै।
तो बल सों गढ़ कोट गजैं अरु तू गढ़ कोटन के बल गाजे॥ २२२ ॥

हे शिवाजी, पृथ्वी पर तेरे हाथ से दान की शोभा होती है और दान से तेरा हाथ सुशोभित होता है। तू गुणी लोगों की बड़ाई करता है और गुणी लोग भी तेरी बड़ाई करते हैं। भूषण कहता है, तुझसे राज्य की शोभा होती है और राज्य से तू शोभायमान है। तेरे बल से गढ़-कोट ( अर्थात् उनमें रहनेवाली सेना ) गरजते हैं, और तू गढ़-कोटों के बल गरजता है ॥२२२॥

## विशेष

लक्षण—दोहा

बरनत हैं आधेय को जहँ बिनही आधार।
ताहि बिसेष बखानहीं भूषन कबिसरदार ॥ २२३ ॥

जहाँ आधेय को बिना आधार के वर्णन किया जाय, वहाँ विशेष अलंकार होता है ॥२२३॥

उदाहरण

सिव सरजा सों जंग जुरि चन्द्रावत रजवन्त।
राव अमर गो अमरपुर समर रही रज तन्त ॥ २२४ ॥

---

* सात द्वीप ये हैं—जंबु, प्लक्ष, कुश, क्रौंच, शाक, शाल्मलि, पुष्कर। ( भागवत )

† नव खंड ये हैं—भारत, इलावर्त, किम्पुरुष, भद्राश्व, केतुमाल, हिरण्मय, रम्य, हरि, कुरु। ( भागवत )

सरजा शिवाजी से युद्ध में भिड़कर तेहेवला—जोशीला चन्दावतवंशी राव अमरसिंह* अमरपुर ( स्वर्ग ) चला गया; पर उसकी वीरता समर में रह गई ॥ २२४ ॥

उदाहरण—कवित्त

सिवाजी खुमान सलहेरि मैं दिलीस दल कीन्हो कतलाम करवाल गहि कर मैं। सुभट सराहे चन्दावत कछवाहे ढाहे मुगलौ पठान फरकत परे फर मैं ॥ भूषन भनत भौंसिला के भट उदभट जीति घर आए धाक फैली घर घर मैं। मारु के करैया अरि अमरपुरै गे तऊ अजौं मारु मारु सोर होत है समर मैं ॥ २२५ ॥

खुमान शिवाजी ने तलवार हाथ में लेकर सलहेरि के युद्ध में दिल्लीश्वर के दल में क़त्लेआम कर दिया। सराहे अर्थात् मशहूर सुभट चंदावत और कछवाहे काट-काट कर गिरा दिए। मुग़ल और पठान भी फर ( फड़-मैदान ) में पड़े फटकते थे। भूषण कहता है, भौंसिला शिवाजी के उद्भट भट ( विकट योद्धा ) समर जीतकर घर लौट आए और उनकी धाक घर-घर में फैल गई। मार के करनेवाले यद्यपि स्वर्ग चले गए, तथापि अभी तक समरभूमि में "मारो-मारो" का शोर होता है ॥ २२५ ॥

## व्याघात

लक्षण—दोहा

और काज करता जहाँ करै औरई काज।
ताहि कहत व्याघात हैं भूषन कबि-सिरताज ॥ २२६ ॥

जहाँ और प्रकार का काम करनेवाला और ही प्रकार का काम करे, वहाँ व्याघात अलंकार होता है ॥ २२६ ॥

उदाहरण—सवैया

ब्रह्म रचै पुरुषोत्तम पोसत संकर सृष्टि सँहारनहारे।
तू हरि को अवतार सिवा नृपकाज सँवारे सबै हरि वारे ॥
भूषन यों अवनी जवनी कहैं कोऊ कहै सरजा सों हहा रे।
तू सबको प्रतिपालन हार बिचारे भतार न मार हमारे ॥ ४२७ ॥

---

* उदयपुर के चंदाजी एक वीर सामन्त थे। उन्हीं के वंशज चन्दावत कहलाते हैं। राव अमरसिंह चन्दावत से शिवाजी के युद्ध होने की बात ( इतिहास में न मिलने पर भी ) भूषण ने कई छंदों में कही है। संभव है, यह औरंगज़ेब के पक्ष में रहे हों।

ब्रह्मा सृष्टि को रचते हैं, विष्णु उसका पालन और शंकर संहार करते हैं। हे महाराज शिवा, तू हरि का अवतार है। तूने हरि के सभी काम सँवारे, बनाए या पूरे किए हैं। भूषण कहता है, पृथ्वी-तल पर यवनी ( मुसलमानिनें ) कहती हैं कि कोई सरजा से हमारी यह बात कहे कि हम हा हा खाती हैं, अर्थात् शरणागत हैं। तू सबका प्रतिपालन करनेवाला है। हमारे बेचारे पतियों को न मार ॥ २२७ ॥

तथा—कवित्त

कसत मैं बार बार वैसोई बलन्द होत वैसोई सरस रूप समर भरत है। भूषन भनत महाराज सिवराजमनि सघन सदाई जस-फूलन धरत है॥ बरछी कृपान गोली तीर केते मान जोरावर गोला बान तिनहूँ को निदरत है। तेरो करवाल भयो जगत को ढाल अब सोई हाल म्लेच्छन के काल को करत है ॥२२८॥

तेरा खड्ग कसते में ( खींचते में ) वैसा ही बलंद ( ऊँचा ) होता है, समर में वैसा ही सरस ( गीला ) रूप धारण करता है। भूषण कहता है, हे नृपमणि महाराज शिवराज, वह सदा घने यश के फूलों को धारण करता है ( ढाल पर भी फूल जड़े रहते हैं )। बरछी, तलवार, गोली, तीर की क्या गिनती, जोरदार जो गोला-बान हैं, उन्हें भी कुछ नहीं समझता। ऐसा तेरा करवाल ( खड्ग ) जगत के लिए ढाल ( रक्षक या आड़ ) हुआ। पर हाल में ( आजकल ) वही म्लेच्छों के लिये काल हो रहा है ॥ २२८ ॥

## गुम्फ

लक्षण—दोहा

पूरब पूरब हेतु कै उत्तर उत्तर हेतु।
या बिधि धारा बरनिए गुंफ कहावत नेतु ॥ २२९ ॥

पूर्व-पूर्व-वर्णित वस्तु को उत्तरोत्तर कारण कहकर जहाँ वर्णन किया जाय, वहाँ गुम्फ अलंकार होता है ( इसे कारण-माला भी कहते हैं ) ॥ २२९ ॥

उदाहरण—सवैया

संकर की किरपा सरजा पर जोर बढ़ी कबि भूषन गाई।
ता किरपा सों सुबुद्धि बढ़ी भुव भौंसिला साहि-तनै की सवाई॥

राज सुबुद्धि सों दान बढ़्यो अरु दान सों पुन्यसमूह सदाई।
पुन्य सों बाढ़्यो सिवाजी खुमान खुमान सों बाढ़ी जहान भलाई॥ २३०॥

कवि भूषण ने जिसे गाया है, वह शंकर की कृपा सरजा शिवाजी पर अधिकाधिक प्रबल होकर बढ़ी है। उस शंकर की कृपा से शाहिनन्द भौंसिला की सुबुद्धि सवाई बढ़ी। सुबुद्धि से राज्य बढ़ा, दान बढ़ा, अथवा राजा की सुबुद्धि से दान बढ़ा और दान से सदैव पुण्य बढ़ा। पुण्य से खुमान शिवाजी बढ़े, और शिवाजी से संसार की भलाई बढ़ी॥ २३०॥

तथा—दोहा

सुजस दान अरु दान धन धन उपजै किरवान।
सो जग में जाहिर करी सरजा सिवा खुमान॥ २३१॥

सुयश दान से, दान धन से, धन तलवार (के ज़ोर) से उत्पन्न होता है—यह बात जगत् में शिवाजी ने प्रकट कर दी॥ २३१॥

## एकावली

लक्षण—दोहा

प्रथम बरनि जहँ छोड़िये जहाँ अरथ की पाँति।
बरनत एकावलि अहै कवि भूषन यहि भाँति॥ २३२॥

पहले कुछ वर्णन करके आगे उसे छोड़कर कुछ अन्य वर्णन कीजिए, परन्तु अर्थ का सिलसिला बना रहे, वहाँ एकावली अलङ्कार होता है॥ २३२॥

उदाहरण—हरिगीत छन्द

तिहुँ भुवन में भूषन भनै नरलोक पुन्य सु साज मैं।
नरलोक मैं तीरथ लसै महि तीरथों की समाज मैं॥
महि मैं बड़ी महिमा भली महिमैं महा रज लाज मैं।
रज लाज राजत आज है महराज श्रीसिवराज मैं॥ २३३॥

भूषण कहता है, तीनों लोकों में पुण्य के साज में यह नरलोक पवित्र है। नरलोक में तीर्थस्वरूप तीर्थों में श्रेष्ठ पृथ्वी है। पृथ्वी पर बड़ी महिमा भली है। वह महिमा रज (वीरता) की लाज (रखने) में है। आज वह वीरता की लाज महाराज श्रीशिवराज में विद्यमान है॥ २३३॥

## मालादीपक और सार

लक्षण— दोहा

दीपक एकावलि मिले मालादीपक होय।
उत्तर उत्तर उतकरष सार कहत हैं सोय॥२३४॥

दीपक और एकावली के मिश्रण से मालादीपक अलंकार होता है। उसी में उत्तरोत्तर उत्कर्ष का वर्णन करने से सार अलङ्कार होता है॥ २३४॥

मालादीपक का उदाहरण—कवित्त

मन कवि भूषन को सिव की भगति जीत्यो सिव की भगति जीत्यो साधु जन सेवा ने। साधु जन जीते या कठिन कलिकाल कलिकाल महाबीर महाराज महिमेवा ने॥ जगत में जीते महाबीर महाराजन ते महाराज बावनहू पातसाह लेवा ने। पातसाह बावनौ दिली के पातसाह दिल्लीपति पातसाहै जीत्यो हिन्दूपति सेवा ने॥ २३५॥

भूषण कवि के मन को शिव की भक्ति ने जीता, शिव की भक्ति को साधुजनों की सेवा ने जीता, साधुजनों को इस कठिन कलिकाल ने जीता, कलिकाल को महामहिमावाले महावीर महाराजों ने जीता, महावीर महाराजों को बावनो बादशाहतों के लेनेवाले शाहों ने जीता, उन बावनो बादशाहों को दिल्ली के बादशाह ने जीता और उस दिल्लीपति बादशाह को हिन्दूपति महाराज शिवाजी ने जीता॥ २३५॥

सार का उदाहरण—सवैया

आदि बड़ी रचना है बिरंचि की जामैं रह्यो रचि जीव जड़ो है।
ता रचना महँ जीव बड़ो अति काहे ते ता उर ज्ञान गड़ो है॥
जीवन मैं नर लोग बड़े कबि भूषन भाषत पैज अड़ो है।
है नर लोग मैं राजा बड़ो सब राजन मैं सिवराज बड़ो है॥ २३६॥

सबसे आदि में बड़ी रचना विरंचि (ब्रह्मा) की है, जिसमें जीव (चेतन या चर) और जड़ (अचेतन या अचर वृक्षादि) रचे गए हैं। उस रचना में जीव (जीवधारी) बड़े हैं; क्योंकि उनके हृदय में ज्ञान है। जीवों में मनुष्य बड़ा है; क्योंकि वह अपनी प्रतिज्ञा या पैज पर डटा रहता है। भूषण कहता है, उन मनुष्यों में राजा बड़ा है, और सब राजों में शिवराज बड़ा है॥ २३६॥

## यथासंख्य

लक्षण—दोहा

क्रम सों कहि तिनके अरथ क्रम सों बहुरि मिलाय।
यथासंख्य ताको कहैं भूषन जे कविराय ॥ २३७ ॥

( वस्तुओं को ) क्रम से गिनाकर फिर उनका अर्थ जहाँ कहा जाय, वहाँ यथा संख्य अलङ्कार होता है ॥ २३७ ॥

उदाहरण—कवित्त

जेई चहौ तेई गहौ सरजा सिवाजी देस संके दल दुवन के जे वे बड़े उर के। भूषन भनत भौंसिला सों अब सनमुख कोऊ ना लरैया है धरैया धीर धुर के ॥ अफजलखान रुस्तमै जमान फत्तेखान कूटे लूटे जूटे ये वजीर बिजैपुर के। अमर सुजान मोहकम बहलोलखान खाँड़े छाँड़े डाँड़े उमराव दिलीसुर के ॥ २३८ ॥

जो चाहें, वे ही जाकर सरजा शिवाजी के देश को गहें अर्थात् लड़कर लें। ( पर उन्हें याद रखना चाहिए कि ) शिवाजी के बड़े कलेजे के अर्थात् हौसलेवाले जो शत्रु थे, उनके दल शंकित हुए अर्थात् दहल गए। भूषण कहता है, अब ऐसा कोई धीरधुरन्धर वीर नहीं है, जो उनसे सामने होकर लड़े। अफ़ज़लखाँ, रुस्तमेज़खाँ *, फ़तहखाँ †, इन बीजापुर के वज़ीरों को शिवाजा ने क्रम से मारा, लूटा और सुलह करने को विवश किया। तथा दिल्लीश्वर के उमरा चतुर अमरसिंह, मोहकमसिंह ‡ और बहलोलखाँ × को उन्होंने खंडित ( घायल ) किया, पकड़कर छोड़ दिया और दंडित किया अर्थात् दंड-स्वरूप धन लेकर तब छोड़ा ॥ २३८ ॥

## पर्याय

लक्षण—दोहा

एक अनेकन में रहै एकहि में कि अनेक।
ताहि कहत परजाय हैं भूषन सुकवि बिबेक ॥ २३९ ॥

---

* परनालागढ़ के निकट सन् १६५९ में शिवाजी से इसे दुर्गति के साथ हारना पड़ा था।

† जंजीरा के गढ़ में सन् १६७० में इससे शिवाजी का युद्ध हुआ। यह शिवाजी से मिल गया था। तब इसके साथियों ने इसे क़ैद करके शिवाजी से युद्ध का क्रम जारी रक्खा।

‡ यह अमरसिंह का पुत्र सन् १६७१ में सलहेरि की लड़ाई में शिवाजी का क़ैदी हुआ।

× ९६ नं० के छंद में इसका जिक्र आया है। यह बीजापुर रियासत का योद्धा था।

जहाँ अनेक में एक अथवा एक में अनेक रहें, वहाँ पर्याय ( पर्यायोक्ति ) अलङ्कार होता है॥ २३६ ॥

उदाहरण

जीत रही औरंग में सबै छत्रपति छाँड़ि।
तजि ताहू को अब रही सिव सरजा कर माँड़ि ॥ २४० ॥

सब छत्रपतियों ( राजों ) को छोड़कर विजय औरंगज़ेब में रही थी। वह अब उसे भी छोड़कर सरजा शिवाजी के हाथों को मंडित ( सुशोभित ) कर रही है ॥ २४० ॥

तथा—कवित्त

कोटगढ़ दै के मालमुलुक मैं बीजापुरी गोलकुंडावारो पीछे ही को सरकतु है। भूषन भनत भौंसिलाभुआल भुजबल रेवा ही के पार अवरंग हरकतु है॥ पेसकसै भेजत इरान फिरगान पति उनहूँ के उर याकी धाक धरकतु है। साहितनै सिवाजी खुमान या जहान पर कौन पातसाह के न हिये खरकतु है॥ २४१ ॥

मालमुल्क में कोट-गढ़ देकर बीजापुरी गोलकुंडावाला राजा पीछे ही को खिसकता है ( यानी सामना नहीं करता )। भूषण कहता है, भौंसिला-भूपाल के भुजबल के कारण औरंगज़ेब नर्मदा के उस पार ही रहकर अपनी सल्तनत की रक्षा करता है ( आगे नहीं बढ़ता )। ईरान और फिरंगाने के स्वामी* शिवाजी को पेशकश ( नज़र ) भेजने हैं। कारण, उनके हृदय भी शिवाजी की धाक से धड़कते हैं। शाहितनय खुमान शिवाजी इस दुनिया में किस बादशाह के हृदय में नहीं खटकता ? ॥ २४१ ॥

अगर के धूप धूम उठत जहाँई तहाँ उठत बगूरे अब अति ही अमाप हैं। जहाँई कलावत अलापैं सुमधुर स्वर तहाँ भूत प्रेत अब करत बिलाप हैं॥ भूषन सिवाजी सरजा के बैर बैरिन के डेरन में परे मानो काहू के सराप हैं। बाजत हे जिन महलान में मृदंग तहाँ गाजत मतंग सिंघ बाघ दीह दाप हैं॥ २४२ ॥

अगुरु की धूप के धुएँ जहाँ उठते थे, वहाँ अब अपार धूल उड़ती है। जहाँ कलावन्त ( गवैये ) मधुर स्वर से अलापते थे, वहाँ भूत-प्रेत विलाप करने हैं। भूषण कहता है, सरजा शिवाजी

---

* फिरंगाना—बाबरशाह के पिता का राज्य या योरप।

से वैर करने के कारण, वैरियों के डेरों ( स्थानों ) पर जैसे किसी का शाप पड़ गया है। उनके जिन महलों में मृदंग बजते थे, वहाँ अब हाथी, शेर, बाघ वग़ैरह जंगली जानवर बड़ी डपट के साथ गरजते हैं ॥ २४२ ॥

## परिवृत्त

लक्षण—दोहा

एक बात को दै जहाँ आन बात को लेत।
ताहि कहत परिबृत्त हैं भूषन सुकबि सचेत ॥ २४३ ॥

एक चीज़ देकर जहाँ दूसरी चीज़ ली जाय, वहाँ परिवृत्त अलंकार होता है ॥ २४३ ॥

उदाहरण—कवित्त

दच्छिन धरन धीर धरन खुमान गढ़ लेत गढ़ धरन सों धरम दुवारु दै। साहि नरनाह को सपूत महाबाहु लेत मुलक महान छीनि साहन को मारु दै॥ संगर में सरजा सिवाजी अरिसैनन को सार हरि लेत हिंदुवान सिर सारु दै। भूषन भुसिल जय जस को पहारु लेत हरजू को हारु हरगन को अहारु दै॥ २४४ ॥

दक्षिण का स्वामी और धैर्य धारण करनेवाला खुमान गढ़पतियों से, उन्हें धर्म का द्वार देकर गढ़ लेता है ( अर्थात् गढ़ के मालिकों को धर्मतः गढ़ के द्वार की रक्षा का भार देकर उसका आधिपत्य आप लेता है )। महाराज शाहि का सपूत महाबाहु शिवाजी शाहों को मार देकर उनसे बड़े-बड़े मुल्क छीन लेता है। सरजा शिवाजी युद्ध में हिन्दुओं के सिर सार ( सराहना ) देकर शत्रु-सेना का सार ( सारांश--उनका तेज या प्राण ) हर लेता है। भूषण कहता है, भौंसिला-भूप शिवाजी शिव को मुंडों की माला और शिव के गणों को आहार देकर जय के यश का पहाड़ ( ढेर ) लेता है ॥ २४४ ॥

## परिसंख्य

लक्षण—दोहा

अनत बरजि कछु बस्तु जहँ बरनत एकहि ठौर।
तेहि परिसंख्या कहत हैं भूषन कवि दिलदौर ॥ २४५ ॥

किसी वस्तु या बात को अन्यत्र बरज करके एक ही जगह जहाँ दिखलाया जाय, वहाँ परिसंख्य अलङ्कार होता है ॥ २४५ ॥

उदाहरण—कवित्त

अति मतवारे जहाँ दुरदै निहारियत तुरगन ही में चंचलाई पर-
कीति है। भूषन भनत जहाँ पर लगैं बाननि में कोक पच्छिनहि माहिं
बिछुरन रीति है॥ गुनिगन चोर जहाँ एक चित्त ही के लोक बँधैं जहँ
एक सरजा की गुन प्रीति है। कंप कदली मैं बारि बुंद बदली मैं
सिवराज अदली के राज मैं यों राजनीति है॥ २४६ ॥

शिवाजी के राज्य में अति मतवाले हाथी ही देख पड़ते हैं ( कोई आदमी नशा पीकर मतवाला नहीं होता ) ; चंचलता की प्रकृति केवल घोड़ों में ही पाई जाती है। भूषण कहता है, पर (पंख और पक्षान्तर में शत्रु ) बाणों में ही लगते हैं ; बिछोह ( वियोग ) की रीति चकई-चकवा ( पक्षियों के जोड़े ) में ही है। गुणीगण ही केवल चित्त के चोर हैं। लोग एक शिवाजी के गुणों ( पक्षान्तर में रस्सी ) की प्रीति में ही बँधते हैं। काँपना केवल केले के पेड़ में और पानी के बूँद केवल बादल में रहते हैं ( लोगों की आँखों में जल नहीं देख पड़ता )। न्यायनिष्ठ शिवराज के राज्य में ऐसी ( उत्तम ) राजनीति है॥ २४६ ॥

## विकल्प

लक्षण—दोहा

कै वह कै यह कीजिए जहँ कहनावति होय।
ताहि बिकल्प बखानहीं भूषन कबि सब कोय॥ २४७॥

या यह अथवा वह करो, ऐसी जहाँ कहनावत हो, वहाँ विकल्प अलंकार होता है॥ २४७॥

उदाहरण—सवैया

मोरँग जाहु कि जाहु कुमाऊँ सिरीनगरै कि कबित्त बनाए।
बांधव जाहु कि जाहु अमेरि कि जोधपुरै कि चितौरहि धाए॥
जाहु कुतुब्ब कि एदिल पै कि दिलीसहु पै किनि जाहु बुलाए।
भूषन गाय फिरौ महि मैं बनिहै चित चाह सिवाहि रिझाए॥२४८॥

कवित्त बनाकर ( कविता रचकर ) चाहे मोरंग* जाओ, या कुमाऊँ† जाओ, चाहे श्रीनगर जाओ। बान्धवगढ़‡ जाओ, चाहे आमेर× जाओ, चाहे जोधपुर या चित्तौर दौड़े जाओ।

---

* हिमालय पहाड़ की तराई तक फैला हुआ सारन-चम्पारन ज़िलों का एक हिस्सा, जिस पर सन् १६६४ से १६७६ तक में मुग़लों का अधिकार हुआ। † गढ़वाल। ‡ रीवाँ। × जयपुर।

चाहे कुतुबशाह के पास जाओ, चाहे आदिलशाह के पास जाओ, या बुलाने से दिल्ली के बादशाह के पास ही क्यों न जाओ। भूषण कहता है, पृथ्वीमण्डल भर में चाहे राजों के गुण गाते फिरो; लेकिन चित्त की चाह ( इच्छा ) शिवाजी को रिझाने से ही पूरी होगी ॥ २४८ ॥

तथा

देसन देसन नारि नरेसन भूषन यों सिख देहिं दया सों।
मंगन ह्वै करि दंत गहौ तिन कन्त तुम्हैं हैं अनन्त महा सों ॥
कोट गहौ कि गहौ बन ओट कि फौज की जोट सजो प्रभुता सों।
और करौ किन कोटिक राह सलाह बिना बचिहौ न सिवा सों ॥ २४९ ॥

भूषण कहता है, देश-देश के नरेशों को उनकी स्त्रियाँ दया से यह उपदेश देती हैं कि हे कन्त, तुम्हें बहुत बड़ी क़सम है, तुम मंगन ( याचक ) होकर दाँतों में तृण दबाओ। नहीं तो चाहे कोट का आश्रय लो, चाहे वन की आड़ लो और चाहे प्रभुता के साथ फ़ौज जुटाकर सजाओ, इस तरह और करोड़ों उपाय क्यों न करो, अनेक प्रकार की राह क्यों न पकड़ो, शिवाजी से सलाह (मेल) किये बिना ( जीवित ) न बचोगे ॥ २४९ ॥

## समाधि

लक्षण—दोहा

और हेतु मिलिकै जहाँ होत सुगम अति काज।
ताहि समाधि बखानहीं भूषन जे कबिराज ॥ २५० ॥

अन्य हेतु मिलकर जहाँ कार्य बहुत सुगम हो जाता है, वहाँ समाधि अलंकार होता है ॥ २५० ॥

उदाहरण—सवैया

बैर कियो सिव चाहत हो तब लौं अरि बाह्यो कटार कठैठो।
यों हीं मलिच्छहि छाँड़ै नहीं सरजा मन तापर रोस में पैठो ॥
भूषन क्यों अफजल्ल बचै अठपाव कै सिंह को पावँ उमैठो।
बीछू के घाय धुक्योइ धरक्क ह्वै तौ लग धाय धराधर बैठो ॥ २५१ ॥

शिवराज वैर किया चाहते थे, तब तक इसी बीच में शत्रु ( अफ़ज़लखाँ ) ने कठिन कटार चलाई। शिवराज यों ही म्लेच्छों को ( जीता ) नहीं छोड़ते, उस पर उस समय उनका मन क्रोध से भर गया। भूषण कहता है, अफ़ज़लखाँ कैसे बचता, उसने अठपाव ( कुचक्र ) करके सिंह के पैर को उमेठा था। ( जब तक वह सँभले ) तब तक ( शिवाजी के ) बीछू ( एक छोटे शस्त्र ) के घाव के लगते ही काँपकर धड़ाम से गिर पड़ा—दौड़कर पृथ्वी पकड़कर बैठ गया ॥ २५१ ॥

## समुच्चय

लक्षण—दोहा

एक बार ही जहँ भयो बहु काजन को बन्ध।
ताहि समुच्चय कहत हैं भूषण जे मतिबन्ध ॥ २५२ ॥

एक बार ही जहाँ बहुत से कार्य हो जायँ, वहाँ समुच्चय अलंकार होता है ॥ २५२ ॥

उदाहरण—सवैया

माँगि पठायो सिवा कछु देस उजीर अजानन बोल गहे ना।
दौरि लियो सरजा परनालो यों भूषन जो दिन दोय लगे ना ॥
धाक सों खाक बिजैपुर भो मुख आयगो खानखवास के फेना।
भै भर की करकी धरकी दरकी उर एदिलसाहि की सेना ॥२५३॥

शिवाजी ने ( बीजापुर के खवासखाँ से जो प्रबन्धकर्ता था ) कुछ देश माँग भेजा; पर ( शाह के ) मूर्ख वज़ीरों ने उनके शब्दों पर कुछ ध्यान नहीं दिया। तब सरजा ने चढ़ाई करके परनाला ले लिया। भूषण कहता है, उन्हें दो दिन भी लड़ना नहीं पड़ा। उनकी धाक से बीजापुर खाक हो गया, खवासखाँ के मुँह में ( घबराहट के मारे ) फेना आ गया, भय से भड़की, पीड़ित आदिलशाह की सेना का हृदय काँप उठा और उसका दिल ( हिम्मत ) टूट गया ॥ २५३ ॥

## द्वितीय समुच्चय

लक्षण—दोहा

बस्तु अनेकन को जहाँ बरनत एकहि ठौर।
दुतिय समुच्चय ताहि को कहि भूषन कबिमौर ॥ २५४ ॥

अनेक वस्तुओं का जहाँ एक ही जगह वर्णन किया जाय, वहाँ द्वितीय समुच्चय अलंकार होता है ॥ २५४ ॥

उदाहरण—सवैया

सुन्दरता गुरुता प्रभुता भनि भूषन होत है आदर जामैं।
सज्जनता औ दयालुता दीनता कोमलता झलकै परजामैं ॥
दान कृपानहु को करिबो करिबो अभै दीनन को बर जामैं।
साहन सों रन टेक बिबेक इते गुन एक सिवा सरजा मैं ॥ २५५ ॥

भूषण कहता है, सरजा शिवाजी में सुन्दरता, गुरुता ( गौरव या बड़प्पन ), प्रभुता ( हुकूमत ), जिससे आदर प्राप्त होता है, सज्जनता (भलमंसी), दयालुता, दीनता ( नम्रता ) और प्रजा के प्रति कोमलता झलकती है। दान देते समय, माँगने पर, तलवार तक दे देना, दीनों को अभय वर देना, शाहों से युद्ध करने की टेक और विवेक—अकेले शिवाजी में इतने गुण हैं ॥ २५५ ॥

## प्रत्यनीक

लक्षण—दोहा

जहँ जोरावर सत्रु के पच्छी पै कर जोर।
प्रत्यनीक तासों कहैं भूषन बुद्धि अथोर ॥ २५६ ॥

जहाँ जोरावर शत्रु से वश न चलने के कारण उसके पक्षवालों पर जोर या अत्याचार किया जाय, वहाँ प्रत्यनीक अलंकार होता है ॥ २५६ ॥

उदाहरण—सवैया

लाज धरो सिवजू सों लरो सब सैयद सेख पठान पठाय कै।
भूषन ह्याँ गढ़ कोटन हारे उहाँ तुम क्यों मठ तोरे रिसाय कै॥
हिन्दुन के पति सों न बिसाति सतावत हिन्दु गरीबन पाय कै।
लीजै कलंक न दिल्ली के बालम आलम आलमगीर कहाय कै॥ २५७॥

लाज धरो अर्थात् शरमाओ। सब सैयद, शेख, पठान भेजकर शिवाजी से लड़ो। भूषण कहता है, यहाँ तो तुम ( शिवाजी से लड़कर ) गढ़-कोट हार गये, वहाँ गुस्सा होकर मठ (देवालय) क्यों तोड़े ? हिन्दूपति शिवाजी से तुम्हारी चलती नहीं, गरीब हिन्दुओं को पाकर सताते हो! हे दिल्ली के बालम ( स्वामी ) औरंगजेब, आलम ( दुनिया ) में आलमगीर ( संसार को वश में करनेवाला ) कहलाकर ( ये हरकतें करके ) कलंक न लो ॥ २५७ ॥

तथा—कवित्त

गौर गरबीले अरबीले राठवर गह्यो लोहगढ़ सिंहगढ़ हिम्मत हरषते। कोट के कँगूरन में गोलंदाज तीरंदाज राखे हैं लगाय गोली तीरन बरषते॥ कैकै सावधान किरवान कसि कम्मरन सुभट अमान चहुँ ओरन करषते। भूषन भनत तहाँ सरजा सिवा तैं चढ़ो राति के सहारे ते अराति अमरष ते ॥ २५८ ॥

गरबीले ( अभिमानी ) गौरों और अरबीले ( ऐंड़वाले ) राठौरों ने हिम्मत और हर्ष से लोहे के समान दृढ़ सिंहगढ़ किले को गहा, अर्थात् उसका आश्रय लिया । कोट के कँगूरों ( चोटियों ) में गोलंदाज लगा रक्खे, खड़े कर रक्खे, जो गोलियों और तीरों की वर्षा करते थे । सावधान करके कमरों में तलवार बाँधे बेशुमार वीर योद्धा चारों ओर से करखने, कड़कते थे । भूषण कहता है, वहाँ, उसी गढ़ में, शिवाजी रात के सहारे और शत्रुओं पर क्रोध करके चढ़ गया ॥ २५८ ॥

## अर्थापत्ति

लक्षण—दोहा

वह कीन्ह्यो तो यह कहा यों कहनावति होय ।
अर्थापत्ति बखानहीं तहाँ सयाने लोय ॥ २५९ ॥

"वह किया तो यह क्या है ?" यह कहकर जहाँ अकथित अर्थ का प्राप्ति हो, उसे अर्थापत्ति ( या काव्यार्थापत्ति ) अलंकार कहते हैं ॥ २५९ ॥

उदाहरण—कवित्त

सयन मैं साहन को सुन्दरी सिखावैं ऐसे सरजा सों बैर जनि करो महाबली है । पेसकसैं भेजत बिलायति पुरुतगाल सुनिकै सहमि जात करनाट थली है ॥ भूषन भनत गढ़ कोट माल मुलुक दै सिवा सों सलाह राखिये तौ बात भली है । जाहि देत दण्ड सब डरिकै अखण्ड सोई दिल्ली दलमली तौ तिहारी कहा चली है ॥ २६० ॥

सेज पर, शयन के समय, शाहों को उनकी सुन्दरी बेगमें यह सिखाती हैं कि सरजा शिवाजी से वैर न करो । वह महाबली है । उसे विलायत, पुर्तगाल वग़ैरह के राजा नज़र भेजते हैं । उसका नाम सुनकर कर्णाटक-देश सहम जाता है । भूषण कहता है, गढ़-कोट, माल और मुल्क देकर शिवा से मेल रखिये, तो अच्छी बात है । जिसे सब डरकर दंड ( कर ) देते हैं, उस सम्पूर्ण दिल्ली को शिवाजी ने जब दलमल डाला, तब तुम्हारी क्या गिनती है ? ॥ २६० ॥

## काव्यलिङ्ग

लक्षण—दोहा

है दिढ़ाइबे जो अरथ ताको करत दिढ़ाव ।
काब्यलिंग तासों कहत भूषन जे कबिराव ॥ २६१ ॥

जो दृढ़ करने योग्य है, उसे जहाँ दृढ़ किया जाय, वहाँ काव्यलिङ्ग अलंकार होता है ॥ २६१ ॥

उदाहरण—कवित्त

साइति लै लीजिए बिलाइति को सर कीजै बलख बिलाइति को बंदी अरि डावरे। भूषन भनत कीजै उत्तरी भुवाल बस पूरब के लीजिए रसाल गज छावरे॥ दच्छिन के नाथ के सिपाहिन सों बैर करि अवरंगसाह जू कहाइए न बावरे। कैसे सिवराज मान देत अवरंगै गढ़ गाढ़े गढ़पती गढ़ लीन्हें और रावरे॥ २६२॥

शायद विलायत को ले लीजिए, बलख की विलायत को सर ( फ़तह ) कर लीजिए, शत्रुओं के बालकों को बंदी कर लीजिए। भूषण कहता है, उत्तर के भूपालों को वश कर लीजिए, और पूर्व के सुन्दर हाथियों के बच्चे ( उस देश को जीतकर ) प्राप्त कर लीजिए। परन्तु हे औरंगज़ेब बादशाह, दक्षिण के स्वामी शिवाजी के सिपाहियों से वैर करके बावरे ( पागल ) न कहलाइए। शिवराज औरंगज़ेब को कैसे मान दे सकता है, उस गढ़पति ने उलटे तुम्हारे ही मज़बूत गढ़ ले लिये॥ २६२॥

## अर्थान्तरन्यास

लक्षण—दोहा

कह्यो अरथ जहँ ही लियो और अरथ उल्लेख।
सो अर्थान्तरन्यास है कहि सामान्य बिसेख॥ २६३॥

कहे गए अर्थ के साथ जहाँ और अर्थ का भी उल्लेख हो, वहाँ अर्थान्तरन्यास अलंकार होता है। उसके सामान्य और विशेष ये दो भेद हैं॥ २६३॥

उदाहरण—कवित्त ( सामान्य-भेद )

बिना चतुरंग संग बानरन लैकै बाँधि बारिधि को लंक रघुनंदन जराई है। पारथ अकेले द्रोन भीषम से लाख भट जीति लीन्ही नगरी बिराट में बड़ाई है॥ भूषन भनत ह्वै गुसुलखाने में खुमान अवरंग साहिबी हथ्याय हरि लाई है। तौ कहा अचम्भो महाराज सिवराज सदा बीरन के हिम्मतै हथ्यार होत आई है॥ २६४॥

चतुरंगिणी सेना के विना वानरों का साथ लेकर समुद्र को बाँधकर रामचंद्र ने लंकापुरी को जलाया। अकेले अर्जुन ने द्रोणाचार्य और भीष्म-जैसे लाखों वीरों को जीतकर विराट्‌नगरी में बड़ाई प्राप्त की। भूषण कहता है, शिवाजी गुसलखाने में औरङ्गज़ेब की साहबी ( इज़्ज़त—शान )

हथियाकर हर लाये। महाराज शिवराज, इसमें अचम्भा क्या है! वीरों का हथियार हिम्मत ही सदा से होती आई है॥ २६४॥

तथा—सवैया ( विशेष-भेद )

साहितने सरजा समरत्थ करी करनी धरनी पर नीकी।
भूलि गे भोज से बिक्रम से औ भई बलि बेनु की कीरति फीकी॥
भूषन भिच्छुक भूप भए भलि भीख लै केवल भौंसिला ही की।
नैसुक रीझि धनेस करै लखी ऐसियै रीति सदा सिवजी की॥२६५॥

शाहितनय सरजा समर्थ ने धरनी पर ( पृथ्वी पर ) अच्छी करना ( काम ) की। जिससे भोज और विक्रम-जैसे राजा ( लोगों को ) भूल गये और बलि * तथा बेन† राजा की कीर्ति फीकी पड़ गई। भूषण कहता है, भूप भिक्षुक हो गये और उन्होंने केवल भौंसिला ( शिवाजी ) का ही भली भीख ली। शिवजी ( शिव और शिवाजी ) की सदा से ऐसी रीति है कि वह थोड़ा ही रीझकर धनेश ( कुबेर और धनी ) बना देते हैं॥ २६५॥

## प्रौढ़ोक्ति

लक्षण—दोहा

जहँ उतकरष अहेतु को बरनत हैं करि हेत।
प्रौढ़ोकति तासों कहत भूषन कबि बिरदेत॥ २६६॥

जहाँ कारण के न रहने पर भी कारण की कल्पना करके उत्कर्ष का वर्णन किया जाय, वहाँ प्रौढ़ोक्ति अलंकार होता है॥ २६६॥

उदाहरण—कवित्त

मानसरबासी हंसबंस न समान होत चन्दन सों घस्यो घन-
सारऊ घरीक है। नारद की सारद की हाँसी मैं कहाँ की आब सरद की
सुरसरी को न पुंडरीक है॥ भूषन भनत छक्यो छीरधि मैं थाह लेत
फेन लपटानो ऐरावत को करी कहै। कयलास-ईस ईस सीस रजनीस
वहौ अवनीस सिवा के न जस को सरीक है॥ २६७॥

मानसरोवर के रहनेवाले हंस नहीं समान होते, न चंदन से घिसा हुआ घनसार ( कपूर ) घड़ी

---

* राजा बलि। इन्द्र को परास्त करनेवाला तथा वामनजी को सर्वस्व दान करनेवाला असुर।

† राजा पृथु का पिता। नास्तिक और महाप्रतापी।

भर भी समता कर सकता है। नारद और शारदा (सरस्वती) की हँसी में कहाँ ऐसी आभा है? शरद्-ऋतु की गंगा और पुण्डरीक (सफेद कमल) ऐसे कहाँ हैं? न क्षीरसागर में फेन से लिपटा हुआ मस्त ऐरावत हाथी ऐसा उज्ज्वल है। शिव के शिर पर स्थिर चंद्रमा भी शिवाजी के यश की उज्ज्वलता को नहीं पाता (ये सब पदार्थ स्वयं श्वेत हैं, और श्वेत वस्तुओं का संपर्क रखने पर भी शिवाजी के यश की उज्ज्वलता को नहीं पाते, यह तात्पर्य है)॥ २६७॥

## सम्भावना

### लक्षण—दोहा

जु यों होय तो होय इमि जहँ सम्भावन होय।
ताहि कहत संभावना कबि भूषन सब कोय॥ २६८॥

"जो यों हो तो यों हो" ऐसी जहाँ सम्भावना की जाय, वहाँ सम्भावना अलंकार होता है॥ २६८॥

### उदाहरण—कवित्त

लोमस की ऐसी आयु होय कौन हू उपाय ता पर कवच जो करनवारो धरिए। ता पर जो हूजिए सहसबाहु ता पर सहसगुनो साहस जो भीम हू ते करिए॥ भूषन कहैं यों अवरंग जू सों उमराव नाहक कहौ तौ जाय दच्छिन में मरिए। चलै ना कछू इलाज भेजियत बे ही काज ऐसो होय साज तौ सिवा सों जाय लरिए॥ २६९॥

लोमश* की जैसी आयु हो, किसी भी उपाय से उस पर कर्ण का कवच† धारण कीजिए। उस पर भी सहस्रबाहु होइए, और उस पर भी भीमसेन से सहस्रगुना साहस कीजिए। भूषण कहता है, औरंगज़ेब से उमरा लोग यों कहते हैं, तो भी कहिए तो दक्षिण में जाकर नाहक मरिए। कुछ इलाज अर्थात् उपाय नहीं चलता, आप हमें बेकार भेजते हैं। ऐसा साज (सामान) हो तो शिवाजी से जाकर लड़िए॥ २६९॥

---

* बड़ी आयुवाले एक ऋषि।

† कर्ण के शरीर में पैदायशी अभेद्य कवच था, जिसे अर्जुन की विजय के लिये इन्द्र ब्राह्मण-वेश में आकर महादानी महात्मा कर्ण से माँग ले गए और उस वीर ने इन्द्र को और उनके इरादे को जानकर भी शरीर से काटकर वह कवच दे दिया। इस कवच के रहते अर्जुन कर्ण को नहीं मार सकते थे।

## मिथ्याध्यवसित

लक्षण—दोहा

भूठ अरथ की सिद्धि को भूठो बरनत आन।
मिथ्याध्यवसित कहत हैं भूषन सुकबि सुजान ॥ २७० ॥

भूठे अर्थ की सिद्धि के लिये अन्य भूठ कहने को मिथ्याध्यवसित कहते हैं। अर्थात् ऐसी जगह मिथ्याध्यवसित अलंकार होता है ॥ २७० ॥

उदाहरण

पग रन मैं चल यों लसैं ज्यों अंगद पग ऐन।
ध्रुव सो भुव सो मेरु सो सिव सरजा को बैन ॥ २७१ ॥

रणभूमि में शिवाजी के पैर यों चलायमान होते हैं, जैसे (रावण की सभा में) अङ्गद के पैर। सरजा शिवाजी के वचन ध्रुवतारा के समान, पृथ्वी के समान, सुमेरु के समान ( चंचल ) हैं (उपमान के अचल होने पर भी अचल उपमेय को चलायमान कहना मिथ्याध्यवसित हुआ) ॥२७१॥

तथा—कवित्त

मेरु सम छोटो पन सागर सो छोटो मन धनद को धन ऐसो छोटो जग जाहि को। सूरज सो सीरो तेज चाँदनी सी कारी कित्ति अमिय सो कटु लागै दरसन ताहि को॥ कुलिस सो कोमल कृपान अरि भंजिबे को भूषन भनत भारी भूप भौंसिलाहि को। भुव सम चल पद सदा महिमंडल में ध्रुव सो चपल ध्रुव बल सिव साहि को। २७२ ॥

शिवराज का प्रण सुमेरु के समान छोटा है। मन सागर-सा छोटा है। उनका राज्य कुबेर के धन के समान छोटा ( थोड़ा ) है। उनका तेज सूर्य के समान ठंडा और कीर्ति चाँदनी के समान काली है। उनका दर्शन अमृत के समान कड़ुआ लगता है। शत्रुओं को मारने में उनका खड्ग वज्र-सा कोमल है। भूषण कहता है, भारी भूप भौंसिला का पग सदा पृथ्वी-सा चलायमान है और पृथ्वी-मंडल में ध्रुव के समान चंचल उनका बल है ॥ २७२ ॥

## उल्लास

लक्षण—दोहा

एकहि के गुन दोष ते औरै को गुन दोष।
बरनत हैं उल्लास सो सकल सुकबि मति पोष ॥ २७३ ॥

एक ही के गुण-दोष से जहाँ और के गुण-दोष का वर्णन किया जाय, वहाँ उल्लास अलंकार होता है। यह चार प्रकार का होता है—१ गुण से दोष, २ दोष से गुण, ३ गुण से गुण और ४ दोष से दोष ॥ २७३ ॥

उदाहरण—सवैया ( गुण से दोष )

काज मही सिवराज बली हिंदुवान बढ़ाइबे को उर ऊटै।
भूषन भू निरम्लेच्छ करी चहै म्लेच्छन मारिबे को रन जूटै॥
हिन्दु बचाय बचाय यही अमरेस चँदावत लौं कोइ टूटै।
चन्द-अलोक ते लोक सुखी यहाँ कोक अभागे को सोक न छूटै॥२७४॥

बली शिवराज पृथ्वी पर हिन्दुओं को बढ़ाने के लिये मन में ऊटै ( विचार करता है )। भूषण कहता है, पृथ्वी को वह म्लेच्छों से हीन करना चाहता है, और म्लेच्छों को मारने के लिये रण में जुटता है। वह हिन्दुओं को बचाता है, परन्तु चंदावत अमरसिंह ( यह औरंगज़ेब की तरफ़ से लड़ा था ) की तरह कोई खुद से आकर आ टूटता है ( मरता है )। चन्द्रमा के प्रकाश से संसार सुखी होता है; पर अभागे कोक ( चक्रवाक पक्षी, जिसे रात को पत्नी-वियोग का दुःख सहना पड़ता है ) का शोक नहीं छूटता ॥ २७४ ॥

तथा—कवित्त ( दोष से गुण )

देस दहपट्ट कीने लूटिकै खजाने लीने बचै न गढ़ोइ काहू गढ़ सिर-
ताज के। तोरादार सकल तिहारे मनसबदार डाँड़े जिनके सुभाय
जंग दै मिजाज के॥ भूषन भनत बादसाह को यों लोग सब बचन
सिखावत सलाह की इलाज के। डावरे की बुद्धि ह्वै कै बावरे न कीजै
बैरु रावरे के बैर होत काज सिवराज के॥ २७५ ॥

( शत्रुओं के ) देशों को दहपट्ट ( चौपट ) किया, ख़ज़ाने लूट लिए, किसी गढ़सिरताज अर्थात् गढ़ों के मालिक का कोई छोटा-सा गढ़ भी ( जीत लेने से ) नहीं बचा। तुम्हारे सभी मिज़ाजी ( अभिमानी ) तोड़ेदार मंसबदारों ( सरदारों ) को डाँड़ा, दंडित किया, परास्त किया। भूषण कहता है, सब लोग बादशाह औरंगज़ेब को यों सलाह की इलाज के वचन सिखाते हैं, अर्थात् यह कहते हैं कि इसका इलाज या उपाय केवल सलाह ( सुलह ) कर लेना ही है। वे शाह से कहते हैं कि लड़कों की सी बुद्धि करके बावले न बनिए, वैर न कीजिए। आपके वैर करने से शिवराज के काम होते हैं—बनते हैं ॥ २७५ ॥

तथा—दोहा ( गुण से गुण )

नृप-सभान में आपनी होन बड़ाई काज।
साहितनै सिवराज के करत कबित कबिराज ॥ २७६ ॥

राजों की सभाओं में अपनी बड़ाई होने के लिये कविराज लोग शाहितनय शिवराज के सम्बन्ध की कविता करते हैं ॥ २७६ ॥

तथा—( दोष से दोष )

सिव सरजा के बैर को यह फल आलमगीर।
छूटे तेरे गढ़ सबै कूटे गए उजीर ॥ २७७ ॥

हे आलमगीर, शिवाजी से वैर करने का यह फल है कि तेरे सब गढ़ छुट गए, छिन गए और वजीर कूटे ( पीटे ) गये ॥ २७७ ॥

पुनः—कवित्त

दौलति दिली की पाय कहाए आलमगीर बब्बर अकब्बर के बिरद बिसारे तैं। भूषन भनत लरि लरि सरजा सों जंग निपट अभंग गढ़ कोट सब हारे तैं ॥ सुधर्यो न एकौ साज भेजि भेजि बे ही काज बड़े बड़े बेइलाज उमराव मारे तैं। मेरे कहे मेर करु सिवाजी सों बैर करि गैर करि नैर निज नाहक उजारे तैं ॥ २७८ ॥

दिल्ली की दौलत पाकर आलमगीर कहलाये और बाबर ( अकबर का बाबा ) और अकबर ( औरंगजेब का परदादा ) के विरद ( यश ) को तुमने बिसार दिया। भूषण कहता है, शिवाजी से जंग करके, लड़-लड़कर, बहुत मजबूत ( अजेय ) गढ़ और कोट सब तुमने हार दिए। एक भी साज न सुधरा, बना। बेकार ही बड़े-बड़े उमराओं को ( अपने हुक्म से ) विवश करके तुमने मारा, मरवा डाला। मेरे कहने से मेल कर लो। शिवाजी से वैर करके, उन्हें गैर बनाकर, अपने नगर तुमने उजाड़े, उजड़वा डाले ॥ २७८ ॥

## अवज्ञा

लक्षण—दोहा

औरे के गुन दोस ते होत न जहँ गुन दोष।
तहाँ अवज्ञा होत है भनि भूषन मति पोष ॥ २७९ ॥

और के गुण या दोष से और में जहाँ गुण या दोष नहीं होता, वहाँ अवज्ञा अलंकार होता है ॥ २७९ ॥

उदाहरण—सवैया

औरन के अनबाढ़े कहा अरु बाढ़े कहा नहिं होत चहा है।
औरन के अनरीझे कहा अरु रीझे कहा न मिटावत हा है॥
भूषन श्रीसिवराजहि माँगिए एक दुनी बिच दानि महा है।
मंगन औरन के दरबार गए तौ कहा न गए तौ कहा है॥२८०॥

औरों के न बढ़ने से क्या, और बढ़ने से क्या? उससे चित्त का चाहा नहीं होता। औरों के न रीझने से क्या, और रीझने से क्या? वे मन के दुःख को या दरिद्रता की हाय-हाय को नहीं मिटाते। भूषण कहता है, श्रीशिवराज से माँगिए। दुनिया में एक वही महादानी है। और के दरबार में याचक लोग गए तो क्या, और न गए तो क्या? ॥ २८० ॥

## अनुज्ञा

लक्षण—दोहा

जहाँ सरस गुन देखि कै करै दोस को हौंस।
तहाँ अनुज्ञा होत है भूषण कबि यहि रौंस॥२८१॥

सुंदर गुण देखकर जहाँ दोष की कामना की जाय, वहाँ अनुज्ञा अलंकार होता है ॥ २८१ ॥

उदाहरण—कवित्त

जाहिर जहान सुनि दान के बखान आजु महादानि साहितनै गरिब-नेवाज के। भूषण जवाहिर जलूस जरबाफ जोति देखि देखि सरजा के सुकबि समाज के॥ तप करि करि कमलापति सों माँगत यों लोग सब करि मनोरथ ऐसे साज के। बैपारी जहाज के न राजा भारी राज के भिखारी हमैं कीजै महाराज सिवराज के॥ २८२ ॥

महादानी ग़रीबनेवाज शाहितनय के जहान में जाहिर दान के बखान सुनकर भूषण कहता है, सरजा के आश्रित सुकवि-समाज के जवाहरात के जलूस ( शोभा ) और ज़रबफ़्त ( एक क़ीमती कपड़ा ) की चमक देख-देखकर सब लोग तप कर-करके कमलापति (विष्णु) से इस तरह के मनोरथ करके यों माँगते हैं कि हमें आप जहाज़ के व्यापारी या भारी राज्य के राजा न बनाइए, बल्कि महाराज शिवराज का भिखारी करिए ॥ २८२ ॥

## लेश

लक्षण—दोहा

जहँ बरनत गुन दोष कै कहै दोष गुनरूप।
भूषन ताको लेस कहि गावत सुकबि अनूप॥ २८३॥

जहाँ गुण को दोष अथवा दोष को गुण कहा जाय, वहाँ लेश अलंकार होता है॥ २८३॥

उदाहरण

उदैभान राठौर बर धरि धीरजु गढ़ ऐंड़।
प्रगटै फल ताको लह्यो परिगो सुरपुर पैंड़॥ २८४॥

उदयभानु राठौर ( यह शिवाजी से लड़ा और मारा गया था ) ने धैर्य, क़िला और ऐंड़ ( अभिमान ) को धारण कर अर्थात् न छोड़कर उसका प्रकट ही फल यह पाया कि स्वर्ग की राह में पड़ गया—स्वर्ग सिधारा॥ २८४॥

कोऊ बचत न सामुहे सरजा सौं रन साजि।
भली करी पिय समर ते जिय लै आए भाजि॥ २८५॥

सरजा से रण ठानकर उनके सामने जाकर कोई नहीं बचता। प्रिय, तुमने अच्छा किया, जो समर से जान लेकर भाग आये॥ २८५॥

## तद्गुण

लक्षण—दोहा

जहाँ आपनो रंग तजि गहै और को रंग।
ताको तद्गुन कहत हैं भूषन बुद्धि उतंग॥ २८६॥

जहाँ अपना रंग छोड़कर और का रंग ग्रहण किया जाय, वहाँ तद्गुण अलंकार होता है॥ २८६॥

उदाहरण—कवित्त

पंपा मानसर आदि अगन तलाब लागे जेहि के परन में अकथ जुत गथ के। भूषन यों साज्यो राजगढ़ सिवराज रहे देव चक चाहि कै बनाए राजपथ के॥ बिन अवलम्ब कलिकानि आसमान में ह्वै होत बिस-

राम जहाँ इन्दु औ उदथ के । महत उतंग मनि जोतिन के संग
आनि कैयो रंग चकहा गहत रबि रथ के ॥ २८७ ॥

अनेक अकथ गथ ( गाथाओं ) से युक्त पंपा, मानसरोवर आदि अगणित तालाब जिसकी परनि ( खाईं ) में लगे हैं अर्थात् आ सकते हैं, भूषण कहता है, शिवराज ने ऐसा राजगढ़ सजाया है, जिसके बनाये हुए राजपथ ( सड़क ) देखकर देवगण चकित हो रहते हैं, जिसकी कलिका अर्थात् शिखरों ( कँगूरों—चोटियों ) पर आसमान में विना अवलम्ब ( सहारे ) के सूर्य और चन्द्रमा का विश्राम होता है, जिसके बड़े और ऊँचे मंदिरों में लगी हुई मणियों की ज्योतियों के साथ, अर्थात् उनकी चमक पड़ने से, सूर्य के रथ के पहिये कई रंग धारण करते हैं ॥ २८७ ॥

## पूर्वरूप

लक्षण—दोहा

प्रथम रूप मिटि जात जहँ फिरि वैसोई होय ।
भूषन पूरबरूप सो कहत सयाने लोय ॥ २८८ ॥

जहाँ पहला रूप मिटकर फिर वैसा ही रूप हो जाता है, वहाँ पूर्वरूप अलंकार होता है ॥ २८८ ॥

उदाहरण—सवैया

ब्रह्म के आनन ते निकसे ते अत्यंत पुनीत तिहूँ पुर मानी ।
राम जुधिष्ठिर के बरने बलमीकहु ब्यास के अंग सोहानी ॥
भूषन यों कलि के कबिराजन राजन के गुन गाय नसानी ।
पुन्यचरित्र सिवा सरजै सर न्हाय पवित्र भई पुनि बानी ॥२८९॥

ब्रह्मा के मुख से निकलने के कारण त्रिभुवन में जो अत्यन्त पवित्र मानी गई है, राम और युधिष्ठिर का यश वर्णन करने से, वाल्मीकि तथा व्यास के अंग ( मुख ) में शोभित हुई, उस सरस्वती को, भूषण कहता है, कलियुग के कविराजों ने राजों के गुण गाकर नष्ट-भ्रष्ट कर दिया था । वह वाणी पुण्यचरित्र सरजा शिवाजी-रूप सरोवर में नहाकर फिर पवित्र हुई ॥ २८९ ॥

तथा

यों सिर पै छहरावत छार हैं जाते उठैं असमान बगूरे ।
भूषन भूधरऊ धरकैं जिनके धुनि धक्कन यों बल रूरे ॥

ते सरजा सिवराज दिये कबिराजन को गजराज गरूरे।
सुंडन सों पहिले जिन सोखि के फेरि महामद सों नद पूरे ॥ २९० ॥

जो सिर पर यों धूल उड़ाते हैं, जिससे आसमान में बगूरे ( बवंडर ) उठते हैं, भूषण कहता हैं, जो ऐसे बल से भरे हैं कि जिनकी ध्वनि ( गरजने ) के धक्कों से पहाड़ भी हिल उठते हैं, ऐसे गरबीले ( मस्त ) गजराज शिवराज ने कविराजों को दिये, जिन्होंने सूँड़ से पहले नदों को सोखकर ( खाली करके ) फिर अपने मद-जल से उन्हें भर दिया ॥ २९० ॥

तथा

श्रीसरजा सलहेरि के जुद्ध घने उमरावन के घर घाले।
कुम्भ चँदावत सैद पठान कबंधन धावत भूधर हाले ॥
भूषन यों सिवराज की धाक भए पियरे अरुने रँगवाले।
लोहे कटे लपटे अति लोहु भए मुँह मीरन के पुनि लाले ॥ २९१ ॥

श्रीशिवराज ने सलहेरि के युद्ध में घने उमराओं के घर घाले, उजाड़ दिये। कुंभावत, चंदावत ( क्षत्रिय ), सैयद और पठान ( सिर कटने पर ) अपने कबंधों ( धड़ों ) से दौड़-दौड़कर लड़े, जिससे पहाड़ भी हिल गये। भूषण कहता है, शिवराज की धाक से लाल रंगवाले ( भय से ) पीले पड़ गए। परन्तु लोहे ( तलवार ) से कटने पर लोहू से फिर मीरों ( योद्धाओं ) के मुँह लाल हो गये ॥ २९१ ॥

तथा

यों कबि भूषन भाषत है यक तौ पहिले कलिकाल की सैली।
तापर हिन्दुन की सब राह सु नौरँगसाह करी अति मैली ॥
साहितनै सिव के डर सों तुरकौ गहि बारिधि की गति पैली।
बेद पुरानन की चरचा अरचा दुज देवन की पुनि फैली ॥ २९२ ॥

कवि भूषण कहता है, एक तो कलिकाल की शैली अर्थात् धर्म, उस पर औरंगज़ेब ने हिन्दुओं की सब राह बहुत ही मैली कर दी ( अपने अत्याचार से हिन्दुओं के धर्म-कर्म बन्द करा दिए ); परन्तु शाहितनय शिवाजी के डर से तुर्क लोगों ने भी समुद्र-पार की राह पकड़ी अर्थात् हज का बहाना करके भारत से भाग खड़े हुए और वेद-पुराणों की चर्चा तथा द्विजों और देवों की अर्चा ( पूजा ) फिर फैली ॥ २९२ ॥

## अतद्गुण

लक्षण—दोहा

जहँ संगति ते और को गुन कछूक नहिं लेत।
ताहि अतद्गुन कहत हैं भूषन सुकबि सचेत ॥ २९३ ॥

जहाँ किसी की संगति से उसका गुण नहीं ग्रहण किया जाता, वहाँ अतद्गुण अलंकार होता है ॥ २९३ ॥

उदाहरण—सवैया

दीनदयालु दुनीप्रतिपालक जे करता निरम्लेच्छ मही के।
भूषन भूधर उद्धरिबो सुने और जिते गुन ते सब जी के ॥
या कलि में अवतार लियो तऊ तेई सुभाव सिवाजी बली के।
आय धर्‌यो हरि ते नर रूप पै काज करै सिगरे हरि ही के ॥ २९४ ॥

दीनों पर जो दयालु हैं, संसार के जो प्रतिपालक हैं, जो ( कल्कि अवतार में ) म्लेच्छों को मारकर पृथ्वी को उनसे हीन करनेवाले हैं, भूषण कहता है, जो भूधर ( गोवर्धन पहाड़ ) का उद्धार करनेवाले—उठानेवाले जो हैं, इस प्रकार के और भी जितने मन-भावने गुण हरि के सुने हैं, वे सब कलियुग में अवतार लेने पर भी शिवाजी में हैं—अर्थात् वह हरि का अवतार हैं, और उनके वही स्वभाव अब भी देख पड़ते हैं—दीनदयालु हैं, जगत्प्रतिपालक हैं, म्लेच्छों को मारनेवाले हैं, भूधरों ( राजों ) का उद्धार करनेवाले हैं, अथवा क़िले बनवाकर पहाड़ों का उद्धार करनेवाले हैं। शिवाजी ने हरि के रूप से नर का रूप धारण किया है, पर काम सब वही हरि ही के हैं ॥ २९४ ॥

तथा—कवित्त

सिवाजी खुमान तेरो खग्ग बढ़े मान बढ़े मानस लौं बदलत कुरुख उछाह ते। भूषन भनत क्यों न जाहिर जहान होय प्यार पाय तोसे ही दिपत नरनाह ते ॥ परताप फैटो रहो सुजस लपेटो रहो बरनत खरो नर पानिप अथाह ते। रंग रंग रिपुन के रकत सों रँगो रहै रातो दिन रातो पै न रातो होत स्याह ते ॥ २९५ ॥

हे खुमान शिवाजी, तेरा बड़े मान ( प्रमाण—लम्बाई-चौड़ाई ) अथवा बड़े मान (इज़्ज़त)-वाला खड्ग बढ़ हुए मानस ( मानसरोवर ) की तरह अथवा मन की तरह कुरुख या करख (क्रोध) को उत्साह से बदलता है। भूषण कहता है, वह जहान में ज़ाहिर क्यों न हो; क्योंकि वह तुझ-जैसे राजा से प्यार पाकर चमकता है। उसका फेटा परताप ( प्रताप अथवा शत्रुओं का सन्ताप ) है।

वह सुयश से लपेटा है। उसे लोग उसके अथाह पानी के कारण खरा कहते हैं। वह शत्रुओं के रंग-रंग के रक्त से रात-दिन रँगा रहता है। वह उसमें राता ( अनुरक्त ) है, परन्तु स्याह से राता ( लाल ) नहीं होता—स्याह ही बना रहता है ॥ २९५ ॥

तथा—दोहा

सिव सरजा की जगत में राजत कीरति नौल।
अरि-तिय-दृग अंजन हरै तऊ धौल की धौल ॥ २९६ ॥

जगत् में सरजा की नवल कीर्ति राजती है। वह शत्रुओं की नारियों की आँखों का अंजन ( उन्हें विधवा बनाकर ) हरती है, तो भी सफ़ेद की सफ़ेद बनी रहती है ॥ २९६ ॥

## अनुगुण

लक्षण

जहाँ और के संग ते बढ़ै आपनो रंग।
ताकहँ अनुगुन कहत हैं भूषन बुद्धि उतंग ॥ २९७ ॥

जहाँ और के संग से अपना गुण बढ़े, वहाँ अनुगुण अलंकार होता है ॥ २९७ ॥

उदाहरण—कवित्त

साहितनै सरजा सिवा के सनमुख आय कोऊ बचि जाय न गनीम भुजबल में। भूषन भनत भौंसिला की दिल दौर सुनि धाक ही मरत म्लेच्छ औरँग के दल में ॥ रातौंदिन रोवत रहत जवनी हैं सोक परोई रहत दिली आगरे सकल में। कज्जल कलित अँसुवान के उमंग संग दूनो होत रोज रंग जमुना के जल में ॥ २९८ ॥

शाहितनय सरजा शिवाजी के सामने आकर कोई ग़नीम ( शत्रु ) बाहुबल से बचकर नहीं जाता। भूषण कहता है, भौंसिला शिवाजी के दिल की दौड़ अर्थात् बड़े और लंबे इरादे सुनकर औरंगज़ेब के दल में म्लेच्छ लोग धाक ( आतंक ) से ही मर जाते हैं—पस्त हो जाते हैं। यवनियाँ रात-दिन रोती रहती हैं। दिल्ली और आगरे ( शाह की राजधानियों ) में सर्वत्र शोक छाया रहता है। ( शत्रु-नारियों के ) काजल से मिले हुए आँसुओं की उमंग ( बाढ़ ) के साथ यमुना के जल का रंग नित्य दूना काला हो जाता है ॥ २९८ ॥

## मीलित

लक्षण—दोहा

सदृस बस्तु में मिलि जहाँ भेद न नेक लखाय।
ताको मीलित कहत हैं भूषन जे कबिराय ॥ २९९ ॥

सदृश वस्तु के सदृश वस्तु में मिल जाने से जहाँ कुछ भी भेद न देख पड़े, वहाँ मीलित अलंकार होता है ॥ २९९ ॥

उदाहरण—कवित्त

इन्द्र निज हेरत फिरत गज-इन्द्र अरु इन्द्र को अनुज हेरैं दुगध-नदीस को। भूषन भनत सुरसरिता को हंस हेरैं बिधि हेरैं हंस को चकोर रजनीस को॥ साहितनै सिवराज करनी करी है तैं जु होत है अचंभो देव कोटियो तेंतीस को। पावत न हेरे तेरे जस में हेराने निज गिरि को गिरीस हेरैं गिरजा गिरीस को॥ ३०० ॥

इन्द्र अपने ( श्वेतवर्ण ) गजराज ( ऐरावत ) को खोजते फिरते हैं और इन्द्र के अनुज वामन ( अर्थात् विष्णु ) क्षीरसागर को ढूँढ़ते हैं। भूषण कहता है, गंगा को हंस खोजते हैं। ब्रह्मा अपने वाहन हंस को खोजते हैं। चकोर चन्द्रमा को खोजते हैं। हे शाहि के पुत्र शिवराज, तुमने जो करनी ( कीर्ति के काम ) की है, उससे तेंतीसो करोड़ देवताओं को अचम्भा होता है। तेरे यश में ( रंग में रंग मिल जाने के कारण ) खोए हुए, अपने निवासस्थान कैलास पर्वत को शिव नहीं ढूँढ़ पाते और पार्वती शिव को नहीं ढूँढ़ पातीं ॥ ३०० ॥

## उन्मीलित

लक्षण—दोहा

सदृस बस्तु में मिलत पुनि जानत कौनेहु हेत।<br>
उनमीलित तासों कहत भूषन सुकवि सचेत॥ ३०१ ॥

सदृश वस्तु में मिल जाने पर जहाँ किसी कारण से वह वस्तु प्रकट मालूम पड़ती है, वहाँ उन्मीलित अलंकार होता है ॥ ३०१ ॥

उदाहरण

सिव सरजा तव सुजस में मिले धौल छबि तूल।<br>
बोल, बास ते जानिए हंस, चमेली फूल॥ ३०२ ॥

सरजा शिवाजी, तेरे सुयश में तुल्य छवि ( रंग )-वाले उज्ज्वल हंस और चमेली के फूल मिल गए केवल बोल और महक से वे जाने जाते हैं ॥ ३०२ ॥

## सामान्य

### लक्षण

भिन्न रूप जहँ सदृस ते भेद न जान्यो जाय।
ताहि कहत सामान्य हैं भूषन कबि-समुदाय॥ ३०३॥

जहाँ सदृश से अलग रूप होने पर भी सादृश्य के कारण भेद न जाना जाय, वहाँ सामान्य अलंकार होता है॥ ३०३॥

### उदाहरण—सवैया

पावस की यक राति भली सु महाबलि सिंह सिवा गम के ते।
म्लेच्छ हजारन ही कटिगे दस ही मरहट्टन के भमके ते॥
भूषन हालि उठे गढ़ भूमि पठान कबंधन के धमके ते।
मीरन के अवसान गए मिलि धोपनि सों चपला चमके ते॥ ३०४॥

वर्षाकाल की एक भली रात में महाबली सिंह शिवाजी जो युद्ध में गमक उठे, उत्साहित हो उठे, तो दस ही मराठों के झमकने या झपटने से हजारों ही म्लेच्छ कट गए। भूषण कहता है, पठानों के कबंधों की धमक से गढ़ की भूमि हिल उठी। तलवारों के साथ बिजली चमकने से (उस प्रकाश में शिवाजी को अथवा युद्ध की हालत को देखकर) मीरों (सरदारों) के औसान (होश) उड़ गए॥ ३०४॥

## विशेषक

### लक्षण—दोहा

भिन्न रूप सादृस्य में लहिए कछू बिसेख।
ताहि बिसेषक कहत हैं भूषन सुमति उलेख॥ ३०५॥

जहाँ भिन्न रूप के सादृश्य में कुछ विशेषता पाई जाय, वहाँ विशेषक अलंकार होता है॥ ३०५॥

### उदाहरण—कवित्त

अहमदनगर के थान किरपान लै कै नवसेरीखान सों खुमान भिरयो बल ते। प्यादन सों प्यादे पखरैतन सों पखरैत बखतरवारे बखतर

वारे हलते ॥ भूषन भनत एते मान घमसान भयो जान्यो ना परत कौन आयो कौन दल ते। सम बेष ताके तहाँ सरजा सिवा के बाँके बीर जाने हाँके देत मीर जाने चलते ॥ ३०६ ॥

अहमदनगर के स्थान (मैदान) में कृपाण लेकर खुमान ( शिवाजी ) नौशेरीखाँ से बल-पूर्वक भिड़ गए। प्यादों से प्यादे, कवचधारियों से कवचधारी और पखरैतों ( सवारों ) से पखरैत युद्ध में जुट गए। भूषण कहता है, ऐसा भारी घमासान युद्ध हुआ कि यह जान न पड़ता था कि कौन किस दल से आया है—किस दल का है। दोनों पक्षों के योद्धाओं का समान वेष था। शिवाजी के वीर हाँक देकर पीछा करने से और शाही दल के मीर (सिपाही या सरदार) भागने से पहचाने जाते थे ॥ ३०६ ॥

## पिहित

लक्षण—दोहा

पर के मन की जानि गति ताको देत जनाय।
कछू क्रिया करि कहत हैं पिहित ताहि कबिराय ॥ ३०७ ॥

दूसरे के मन की गति जानकर उसे किसी क्रिया (हरकत) से जहाँ जना दिया जाय, वहाँ पिहित अलंकार होता है ॥ ३०७ ॥

उदाहरण

गैरमिसिल ठाढ़ो सिवा अन्तरजामी नाम।
प्रगट करी रिस साह को सरजा करि न सलाम ॥ ३०८ ॥

अनुचित स्थान पर खड़े शिवाजी ने अन्तर्यामी की तरह बादशाह के मन की बात ( अपना अपमान करने का इरादा ) जानकर अपने हृदय का रोष शाह को सलाम न करके प्रकट किया ॥ ३०८ ॥

आनि मिल्यो अरि यों गह्यो चखनि चकत्ता चाव।
साहितने सरजा सिवा दियो मुच्छ पर ताव ॥ ३०९ ॥

शत्रु आप से आकर मिला ( अथवा फँसा ), यों सोचकर औरङ्गज़ेब की आँखों में चाव ( आनन्द या हर्ष ) झलका। तब शाहितनय शिवाजी ने मूछों पर ताव दिया ( अर्थात् यह प्रकट किया कि मैं सहज में तेरे फंदे में फँसनेवाला मूर्ख नहीं हूँ; सब समझता हूँ।)॥ ३०९ ॥

## प्रश्नोत्तर

लक्षण

कोऊ बूझै बात कछु कोऊ उत्तर देत।
प्रस्नोत्तर ताको कहत भूषन सुकबि सचेत ॥ ३१० ॥

कोई कुछ बात पूछे, और कोई उसका उत्तर दे, ऐसा जहाँ हो, वहाँ प्रश्नोत्तर अलंकार होता है ॥ ३१० ॥

उदाहरण—सवैया

लोगन सों भनि भूषन यों कहै खान खवास कहा सिख दैहौ।
आवत देसन लेत सिवा सरजै मिलिहौ भिरिहौ कि भगैहौ ॥
एदिल की सभा बोलि उठी यों सलाह करौऽब कहाँ भजि जैहौ।
लीन्हो कहा लरि कै अफजल्ल कहा लरि कै तुमहू अब लैहौ ॥३११॥

भूषण कहता है, खवासखाँ लोगों से (सभासदों से) यों कहता है कि तुम लोग मुझे क्या सीख (सलाह) दोगे ? देशों को लेता हुआ सरजा शिवा आता है। उससे मिलोगे (सुलह करोगे) ? या भिड़ोगे ? या भागोगे ? इस पर आदिलशाह की सभा (यानी सभासद्) बोल उठी कि सलाह (सुलह) कर लो; अब भागकर कहाँ जाओगे ? लड़कर अफ़ज़लखाँ ने क्या लिया और अब लड़कर तुम भी क्या लोगे ? ॥ ३११ ॥

तथा—दोहा

को दाता, को रन चढ़ो, को जग पालनहार।
कबि भूषन उत्तर दियो सिव नृप हरि-अवतार ॥ ३१२ ॥

दाता कौन है ? रण में चढ़ा कौन है ? जगत् का पालन करनेवाला कौन है ? भूषण कवि ने इन सब प्रश्नों का उत्तर दिया कि ऐसा हरि का अवतार महाराज शिवाजी है ॥ ३१२ ॥

## व्याजोक्ति

लक्षण

आन हेतु सों आपनो जहाँ छिपावै रूप।
व्याजउकति तासों कहत भूषन सुकबि अनूप ॥ ३१३ ॥

अन्य कारण बताकर जहाँ अपनी असल बात छिपाई जाय, वहाँ व्याजोक्ति अलंकार होता है ॥ ३१३ ॥

उदाहरण—सवैया

साहिन के उमराव जितेक सिवा सरजा सब लूटि लए हैं।
भूषन ते बिन दौलति ह्वैकै फकीर ह्वै देस बिदेस गए हैं॥
लोग कहैं इमि दच्छिन जेय सिसौदिया रावरे हाल ठए हैं।
देत रिसायकै उत्तर यों हम ही दुनिया ते उदास भए हैं॥ ३१४॥

शाहों के जितने उमरा शिवा सरजा ने लूट लिये, भूषण कहता है, वे बिना दौलत के फ़कीर होकर देश-विदेश को चले गए। लोग जो उनसे पूछते या कहते हैं कि दक्षिण के विजयी सिसौदिया शिवाजी ने तुम्हारा यह हाल कर दिया है? तो वे खफ़ा होकर यों उत्तर देते हैं कि यह बात नहीं है; हम ही दुनिया से उदास ( विरक्त ) हो गए हैं॥ ३१४॥

तथा—दोहा

सिवा बैर औरँग बदन लगी रहै नित आहि।
कबि भूषन बूझे सदा कहै देत दुख साहि॥ ३१५॥

शिवाजी के वैर से औरंगजेब के मुख में सदा आह लगी रहती है, अर्थात् आह निकला करती है। भूषण कहता है, इसका कारण पूछने पर सदा वह यही उत्तर देता है कि बादशाही के झंझट ( मुझे ) दुःख देते हैं॥ ३१५॥

## लोकोक्ति और छेकोक्ति

लक्षण

कहनावति जो लोक की लोकउकति सो जानि।
जहाँ कहत उपमान ह्वै छेकउकति सो मानि॥ ३१६॥

जहाँ लोक में प्रसिद्ध कहनावत कोई हो, वहाँ लोकोक्ति अलंकार होता है। और जहाँ लोकोक्ति में उपमान भी आवे, वहाँ छेकोक्ति अलंकार होता है॥ ३१६॥

उदाहरण ( लोकोक्ति )

सिव सरजा की सुधि करौ भली न कीन्हीं पीव।
सूबा ह्वै दच्छिन चले धरे जात कित जीव॥ ३१७॥

शिवा सरजा की याद करो। तुमने ( दक्षिण जाने का विचार जो किया, सो ) अच्छा

नहीं किया। सूबा होकर अर्थात् सूबेदार बनकर दक्षिण को जाते हो, तो अपने प्राण कहाँ रक्खे जाते हो? (कारण, वहाँ प्राण नहीं बचेंगे) ॥ ३१७ ॥

तथा (छेकोक्ति)

जे सोहात सिवराज को ते कवित्त रसमूल।
जे परमेस्वर पै चढ़ैं तेई आछे फूल ॥ ३१८ ॥

शिवराज को जो अच्छे लगते हैं, वे ही कवित्त (कविता) रसीले हैं। जो परमेश्वर पर चढ़ें, वे ही फूल अच्छे होते हैं ॥ ३१८ ॥

तथा—सवैया

औरँगजो चढ़ि दक्खिन आवै तो ह्याँ ते सिधावै सोऊ बिनु कप्पर।
दीनो मुहीम को भार बहादुर छागो सहै क्यों गयंद को झप्पर ॥
सासताखाँ सँग वे हठि हारे जे साहब सातएँ ठीक भुवप्पर।
ये अब सूबहु आवैं सिवा पर कालिह के जोगी कलींदे के खप्पर ॥ ३१९ ॥

खुद औरंगज़ेब अगर चढ़कर आवे, तो वह भी यहाँ से बिना कपड़ों का होकर (लुटकर) जाय। उसने बहादुरखाँ पर जो मुहीम (चढ़ाई) का भार दिया, सो ठीक नहीं। हाथी के धक्के को छाग (बकरा) कैसे सह सकता है? हठ करके आकर शाइस्ताखाँ के साथ वे भी शिवाजी से हार गए, जो जमीन पर सातवें साहब हैं (शायद इसका भाव यह है कि जिनका मिज़ाज सातवें आसमान पर सदा रहता है, ऐसे घमंडी सरदार)। अब यह सूबेदार भी शिवाजी पर चढ़ाई करने आ रहे हैं। सच है—"कल के जोगी और उनका खप्पर (भिक्षा का पात्र) कलींदे (तरबूज़) का" ॥ ३१९ ॥

## वक्रोक्ति

लक्षण—दोहा

जहाँ स्लेष सों काकु सों अरथ लगावै और।
बक्रउकति ताको कहत भूषन कवि सिरमौर ॥ ३२० ॥

जहाँ श्लेष से या काकु* से दूसरा अर्थ लगता है, वहाँ वक्रोक्ति अलंकार होता है ॥ ३२० ॥

---

* काकु ऐसी उक्ति को कहते हैं—क्या उसने ऐसा नहीं किया? अर्थात् उसने ऐसा ही किया। व्यंग्य से भी काकु होता है।

उदाहरण—कवित्त ( श्लेष से वक्रोक्ति )

साहितने तेरे बैर बैरिन को कौतुक सों बूझत फिरत कहौ काहे रहे ताचि हौ। सहजा के डर हम आये इतै भाजि तब सिंह सो डराय याहू ठौर ते उकचि हौ ॥ भूषन भनत वै कहैं कि हम सिव कहैं तुम चतुराई सों कहत बात रचि हौ। सिव जापै रूठैं तो निपट कठिनाई तुम बैर त्रिपुरारि के त्रिलोक में न बचि हौ ॥ ३२१ ॥

हे शाहितनय शिवाजी, तेरे वैर से वैरियों ( की दुर्दशा देखकर, उन ) से लोग कौतुक-वश यों पूछते हैं कि तुम क्यों तच रहे हो ? ( अर्थात् तुम्हारे हृदय में दाह क्यों है ? अथवा सुस्त, विह्वल या मलिन क्यों हो ? ) वे कहते हैं, हम सरजा ( सिंह और पक्षान्तर में शिवाजी ) के डर से यहाँ भागकर आए हैं। इस पर लोग कहते हैं—तो फिर सिंह से डरकर ( उसके यहाँ आने पर ) इस जगह से भी भागोगे ? भूषण कहता है, शिवाजी के शत्रु कहते हैं कि हम तो शिवजी (शिवाजी) की बात कहते हैं, सिंह की नहीं; तुम चतुराई से बात बनाकर सिंह कहते हो। इस पर लोग कहते हैं, शिव जिस पर कोप करें, उसके लिये तो बड़ी कठिनाई है। तुम त्रिपुरारि से वैर करके त्रिलोक में नहीं बचोगे ॥ ३२१ ॥

तथा ( काकु से वक्रोक्ति )

सासताखाँ दक्खिन को प्रथम पठायो तेहि बेटा के समेत हाथ जाय कै गँवायो है। भूषन भनत जौं लौं भेजौं उत ओरै तिन वे ही काज बरजोर कटक कटायो है ॥ जोई सूबेदार जात सिवाजी सों हारि तासों अवरंग साहि इमि कहै मन भायो है। मुलुक लुटायो तौ लुटायो कहा भयो ? तन आपनो बचायो महा काज करि आयो है॥ ३२२ ॥

शाइस्ताखाँ को पहले दक्षिण फ़तह करने को भेजा, तो वह अपने बेटे को और हाथ को गँवा आया। भूषण कहता है, जब तक और किसी ( सेनापति ) को भेजूँ, तब तक उसने बेकार सेना ही कटवा डाली। जो सूबेदार शिवाजी से हारकर जाता है, उससे औरंगजेब यों कहता है कि तुमने मेरे मन का भाया किया। मुल्क लुटा दिया तो लुटा दिया, क्या हुआ, अपना शरीर ( अपनी जान ) बचा लाए, यही बड़ा काम कर आए ॥ ३२२ ॥

तथा—दोहा

करि मुहीम आये कहत हजरत मनसब दैन।
सिव सरजा सों जंग जुरि ऐहैं बचि कै है न॥ ३२३॥

योद्धा या सेनापति औरंगज़ेब से कहते हैं—मुहीम सर कर आने पर (युद्ध विजय करके लौटने पर) हज़रत मनसब देने को (ओहदा बढ़ाने को) कहते हैं। मगर सरजा शिवा से जंग में भिड़कर हम जीते बचकर नहीं आवेंगे (मनसब आप किसे देंगे?)॥ ३२३॥

## स्वभावोक्ति

लक्षण

साँचो तैसो बरनिए जैसो जाति-स्वभाव।
ताहि स्वभावोकति कहत भूषन जे कबिराव॥ ३२४॥

जिसका जैसा जाति-स्वभाव हो, उसका वैसा ही वर्णन जहाँ किया जाय, वहाँ स्वभावोक्ति अलंकार होता है॥ ३२४॥

उदाहरण—कवित्त

दान समै द्विज देखि मेर हू कुबेर हू की संपति लुटाइबे को हियो ललकत है। साहि के सपूत सिव साहि के बदन पर सिव की कथान में सनेह झलकत है॥ भूषन जहान हिन्दुवान के उबारिबे को तुरकानि मारिबे को बीर बलकत है। साहिन सों लरिबे की चरचा चलति आनि सरजा के दृगनि उछाह छलकत है॥ ३२५॥

दान के समय द्विज को देखकर मेरु और कुबेर की भी संपत्ति लुटाने (देने) को हृदय ललकता है। शाहि के सपूत शिवराज के मुखमण्डल पर शिवजी की कथाओं के प्रति स्नेह (प्रीति) झलकता है। भूषण कहता है, जहान में हिन्दुओं के उबारने को और तुर्कों के मारने को वह वीर बलकता (उत्तेजित होता) है। शाहों से लड़ने की चर्चा चलते ही सरजा के नेत्रों में उत्साह छलकता है॥ ३२५॥

तथा

काहू के कहे सुने ते जाही ओर चाहैं ताही ओर इकटक घरी चारिक चहत हैं। कहे ते कहत बात कहे ते पियत खात भूषन

भनत ऊँची साँसन जहत हैं॥ पौढ़े हैं तो पौढ़े बैठे बैठे खरे खरे हम को हैं कहा करत यों ज्ञान न गहत हैं। साहि के सपूत सिवसाहि तेरे बैर ऐसे साहि सब रातौदिन सोचत रहत हैं॥ ३२६॥

किसी के कुछ कहने-सुनने से, जिस ओर देखते हैं, उसी ओर एकटक चार घड़ी तक (देर तक) ताकते ही रहते हैं। कहने से बोलते हैं, कहने से खाते-पीते हैं। भूषण कहता है, ऊँची साँसें छोड़ते हैं। लेटे हैं तो लेटे ही हैं, बैठे हैं तो बैठे ही हैं, खड़े हैं तो खड़े ही हैं। हम कौन हैं, क्या करते हैं, यह ज्ञान (सुध) भी उन्हें नहीं हैं। हे शाहि के सपूत शिवराज, तेरे वैर के कारण शाह लोग रात-दिन सोचते रहते हैं॥ ३२६॥

तथा—

उमड़ि कुड़ाल में खवास खान आये भनि भूषन त्यों धाए सिवराज पूरे मन के। सुनि मरदाने बाजे हय हिहिनाने घोर मूछैं तरराने मुख बीर धीर जन के॥ एकै कहैं मार मार सम्हरि समर एकै म्लेच्छ गिरे मार बीच बेसम्हार तन के। कुंडन के ऊपर कड़ाके उठैं ठौर ठौर जीरन के ऊपर खड़ाके खड़गन के॥ ३२७॥

भूषण कहता है, उमड़कर (धावा करके) खवासखाँ (उधर) कुड़ाल* में आया, और (उधर) मन के पूरे (उत्साही) शिवाजी दौड़े। मरदाने अर्थात् युद्ध के मारू बाजे सुनकर घोड़े हिनहिना उठे और धीर वीर सिपाहियों की मूछें खड़ी हो गईं, मुखमंडल पर उत्साह झलक आया। एक कहते हैं मारो, मारो; एक समर में सँभलकर खड़े हुए; एक म्लेच्छ मार के बीच शरीर बेसँभाल होने के कारण गिर पड़े। कुंडों (लोहे के टोपों) के ऊपर जगह-जगह (तलवार की चोट से) कड़ाके उठते हैं, और जिरह-बख़्तरों के ऊपर खड्गों के खड़ाके होते हैं॥ ३२७॥

तथा

आगे आगे तरुन तरायले चलत चले तिनके अमोद मंद मंद मोद सकसै। अड़दार बड़े गड़दारन के हाँके सुनि अड़े गैर गैर माहिं रोस रस अकसै॥ तुंडनाय सुनि गरजत गुंजरत भौंर भूषन भनत तेऊ महामद छकसै। कीरति के काज महाराज सिवराज सब ऐसे गजराज कबिराजन को बकसै॥ ३२८॥

---

* शिवाजी ने यह स्थान सन् १६६१ में जीता था।

आगे-आगे चंचल जवान हाथी चले। उनके चलने से, उनके आमोद (उत्साह) से धीरे-धीरे आनन्द बढ़ता है। अड़दार अर्थात् मस्त बड़े हाथी गड़दारों ( मस्त हाथी को पुचकारकर अथवा मारकर आगे बढ़ानेवाले ) के हाँके (शब्द) सुनकर राह में जगह-जगह रोष और रस प्रकट करके अड़ते हैं—ठहर जाते हैं। तुंड ( सिर ) झुकाकर सुनते और गरजते हैं अथवा तुंडनाथ (नरसिंह) की आवाज़ सुनकर गरजते हैं। भूषण कहता है, जिनके गंडस्थल पर ( मद की महक से ) भौंरे गुंजार करते हैं और वे भी महामद से छक-से जाते हैं। महाराज शिवराज कीर्ति के लिये ऐसे गजराज कविराजों को देते हैं ॥ ३२८ ॥

## भाविक

लक्षण—दोहा

भयो होनहारो अरथ बरनत जहँ परतच्छ।
ताको भाविक कहत हैं भूषन कबि मति स्वच्छ ॥ ३२९ ॥

हो गई या होनेवाली बातें जहाँ वर्तमान की तरह कही जायँ, वहाँ भाविक अलंकार होता है ॥ ३२९ ॥

उदाहरण—कवित्त

अजौं भूतनाथ मुण्डमाल लेत हरषत भूतन अहार लेत अजहूँ उछाह है। भूषन भनत अजौं काटे करबालन के कारे कुंजरन परी कठिन कराह है ॥ सिंह सिवराज सलहेरि के समीप ऐसो कीन्हो कतलाम दिल्ली दल को सिपाह है। नदी रनमण्डल रुहेलन रुधिर अजौं अजौं रविमण्डल रुहेलन की राह है ॥ ३३० ॥

आज भी भूतनाथ ( रुद्र ) मुंडमाला लेते हरखते हैं, भूतों को अपना आहार लेने में आज भी उत्साह है। भूषण कहता है, आज भी तलवारों के काटे काले हाथियों में कठिन कराह पड़ी है, अर्थात् वे कराहते हैं। सिंह शिवाजी ने सलहेरि के दिल्ली-दल के सिपाहियों का ऐसा क़त्ले-आम किया कि रणमण्डल की नदियों में रुहेलों का खून बहता है और आज भी रविमण्डल होकर रुहेलों के ( स्वर्ग ) जाने की राह ( बनी हुई ) है ॥ ३३० ॥

तथा

गज घटा उमड़ी महा घनघटा सी घोर भूतल सकल मदजल सौं पटत है। बेला छाँड़ि उछलत सातौं सिन्धु बारि मन मुदित महेस मग

नाचत कढ़त है। भूषन बढ़त भौंसिला भुवाल को यों तेज जेतो सब बारहौ तरनि में बढ़त है। सिवाजी खुमान दल दौरत जहान पर आनि तुरकान पर प्रलै प्रगटत है॥ ३३१॥

महाघोर घनघटा के समान हाथियों की घटा ( समूह ) उमड़ी, जिसके मदजल से सारा भूतल पटता है। अपनी बेला ( किनारों ) को छोड़कर सातों सागरों का जल उछलता है मन में मुदित महादेवजी रास्ते में नाचते निकलते हैं। भूषण कहता है, भौंसिला-भूपाल का इतना तेज है, जितना बारहों सूर्यों में बढ़ता है। शिवाजी खुमान का दल जब पृथ्वी पर चलता है, तब तुर्कों के लिए प्रलयकाल प्रकट होता है॥ ३३१॥

## भाविक छबि

लक्षण—दोहा

जहँ दूरस्थित बस्तु को देखत बरनत कोय।
भूषन भूषन राज भनि भाविक छबि सो होय॥ ३३२॥

जहाँ दूर की वस्तु को भी देखने के समान उसका वर्णन किया जाय, वहाँ भाविक छबि अलंकार होता है॥ ३३२॥

उदाहरण—सवैया

सूबन साजि पठावत है निज फौज लखे मरहट्टन केरी।
औरंग आपन दुग्ग जमाति बिलोकत तेरियै फौज दरेरी॥
साहितनै सिव साहि भई भनि भूषन यों तुव धाक घनेरी।
रातहु द्यौस दिलीस तकै तुव सैनिक सूरति सूरति घेरी॥ ३३३॥

मराठों की फौज देखकर नित्य सूबेदारों को सेना से सजाकर भेजता है। औरंगजेब अपने दुर्गों के समूह को तुम्हारी ही सेना के घिराव में पड़ा हुआ देखता है। हे शाहितनय शिवराज, भूषण कहता है, तुम्हारी धाक ऐसी बढ़ गई है कि दिल्ली का बादशाह रातोदिन सूरत शहर को तुम्हारे ही सैनिकों की मूरत से घिरा हुआ देखा करता है॥ ३३३॥

## उदात्त

लक्षण—दोहा

अति सम्पति बरनत जहाँ तासों कहत उदात।
कै आनै सु लखाइये बड़ी आन की बात॥ ३३४॥

जहाँ बहुत बड़ी सम्पत्ति का वर्णन किया जाय, अथवा और किसी को किसी और की बड़ी बात दिखाई जाय, वहाँ उदात्त अलंकार होता है ॥ ३३४ ॥

उदाहरण—कवित्त

द्वारन मतंग दीसैं आँगन तुरंग हींसैं बन्दीजन बारन असीसैं जस-रत हैं। भूषन बखाने जरबाफ के सम्याने ताने झालरन मोतिन के झुण्ड झलरत हैं॥ महाराज सिवा के नेवाजे कबिराज ऐसे साजि कै समाज तिहि ठौर बिहरत हैं। लाल करैं प्रात तहाँ नीलमनि करैं रात याही भाँति सरजा की चरचा करत हैं॥ ३३५॥

द्वारों पर मतंग ( हाथी ) दिखाई पड़ते हैं, आँगन में घोड़े हिनहिनाते हैं, बंदीजन ( चारण ) दरबार में असीस देते और यश का बखान करते हैं। भूषण कहता है, जरबफ़्त ( एक कीमती कपड़ा ) के शामियाने तने हैं, जिनकी झालरों में मोतियों के झुंड झूलते हैं। महाराज शिवा के कृपापात्र कविराज ऐसा सामान सजाकर उस जगह विहार करते हैं कि लालों की रोशनी से सबेरा और नीलमणि की श्यामता से रात उनके यहाँ होती है। इसी तरह लोग शिवाजी की चर्चा करते हैं॥ ३३५॥

तथा

जाहु जनि आगे खता खाहु मति यारो गढ़नाह के डरन कहैं खान यों बखान कै। भूषन खुमान यह सो है जेहि पूना माहिं लाखन में सासताखाँ डार्‍यो बिन मान कै॥ हिन्दुवान द्रुपदी की ईजत बचैबे काज झपटि बिराटपुर बाहर प्रमान कै। वहै है सिवाजी जेहि भीम ह्वै अकेले मार्‍यो अफजल कीचक को कीच घमसान कै॥ ३३६॥

"यारो, आगे मत जाओ, धोखा मत खाओ!" —गढ़पति शिवाजी के डर से खाँ लोग यों कहते हैं। भूषण कहता है, यह खुमान वह है, जिसने पूना में लाखों सिपाहियों के बीच; शाइस्ताखाँ का मान मिटा दिया। द्रोपदी के समान हिन्दुओं की इज्जत बचाने को विराटपुरी के समान अपने स्थान से झपटकर, बाहर निकलकर, जिसने भीमसेन के समान अकेले कीचक * के समान अफ़ज़लखाँ को युद्ध में रुधिर की घमासान कीचड़ करके, मार डाला, यह वही शिवाजी है॥ ३३६॥

* यह राजा विराट का साला था। इसने द्रौपदी का अपमान किया था, भरी सभा में लात मारी थी। भीमसेन ने रात को रंगशाला में द्रौपदी के द्वारा बुलवाकर इसे मार डाला। यह महाबली था। इसकी कथा महाभारत के विराटपर्व में है।

तथा—दोहा

या पूना में मति टिकौ खान बहादुर आय।
ह्याँई साइसखान को दीन्हीं सिवा सजाय॥ ३३७॥

खाँबहादुर, इस पूने में आकर मत टिको; यहीं शिवाजी ने शाइस्ता खाँ को सज़ा दी है॥ ३३७॥

## अत्युक्ति

लक्षण

जहाँ सूरतादिकन की अति अधिकाई होय।
ताहि कहत अतिउक्ति हैं भूषन जे कवि लोय॥ ३३८॥

जहाँ बहादुरी आदि का बहुत अधिक बढ़ाकर वर्णन किया जाय, वहाँ अत्युक्ति अलंकार होता है॥ ३३८॥

उदाहरण—कवित्त

साहितनै सिवराज ऐसे देत गजराज जिन्है पाय होत कबिराज बेफिकिरि हैं। झूलत झलमलात झूलैं जरबाफन की जकरे जँजीर जोर करत किरिरि हैं॥ भूषन भँवर भननात घननात घंट पग झननात मनो घन रहे घिरि हैं। जिनकी गरज सुने दिग्गज बेआब होत मद ही के आब गरकाब होत गिरि हैं॥ ३३९॥

शाहि के पुत्र शिवराज ऐसे गजराज देते हैं, जिन्हें पाकर कविराज बेफ़िक्र हो जाते हैं। उनके ऊपर ज़रबफ़्त की झूलें पड़ी झूलती और झलमल करती हैं और जो ज़ंजीरों से जकड़े होने पर भी जोर करते हैं, जिससे ज़ंजीर की कड़ियों के रगड़ खाने से किरिर-किरिर शब्द होता है। भूषण कहता है, भौंरे उनके गण्डस्थल पर गुंजार करते हैं। गले में घंटे घनघनाते हैं। पैरों में ज़ंजीर की झनझनाहट होती है। जान पड़ता है, मानो घन (बादल) घिर रहे हैं। जिनके गर्जने का शब्द सुनकर दिग्गजों का तेज फीका पड़ जाता है और जिनके मदजल में पहाड़ डूब जाते हैं॥ ३३९॥

तथा

आजु यहि समै महाराज सिवराज तु ही जगदेव जनक जजाति अंबरीक सो। भूषन भनत तेरे दान-जल-जलधि में गुनिन को दारिद गयो बहि खरीक सो॥ चन्द्रकर किंजलक चाँदनी पराग उड़बृन्द

मकरन्द बुन्द पुंज के सरीक सो। कंद सम कयलास नाक गंगनाल तेरे जस पुण्डरीक को अकास चंचरीक सो॥ ३४० ॥

हे महाराज शिवराज, आज इस समय तू ही जगत् का देवता ( लोकप्रिय ) अथवा जगदेव ( एक बड़ा प्रतापी पँवार राजा ) है, तू ही जनक *, ययाति† और अंबरीष‡-सा है। तेरे यशरूप उज्ज्वल कमल पर आकाश चंचरीक ( भ्रमर )-सा प्रतीत होता है। उस यश-कमल का किंजल्क ( उज्ज्वल कमल के फूल में पीले रंग के खड़े जो तंतु होते हैं ) चंद्रमा की किरणें हैं। चाँदनी उसका पराग है। नक्षत्र तारागण मकरन्द-बुन्द ( मधु की बूँदें ) हैं। कैलास पर्वत उसकी कन्द ( जड़ ) के समान है। आकाश-गंगा उसकी नाल ( डंडी ) है॥ ३४० ॥

तथा—दोहा

महाराज सिवराज के जेते सहज सुभाय।
औरन को अतिउक्ति से भूषन कहत बनाय॥ ३४१ ॥

महाराज शिवराज के जितने सहज स्वभाव हैं, वे औरों के लिए अत्युक्ति से हैं। भूषण कहता है, जिन्हें कवि लोग बनाकर, कल्पना करके, कहते हैं॥ ३४१ ॥

## निरुक्ति

लक्षण

नामन को निज बुद्धि सों कहिए बात बनाय।
तासों कहत निरुक्ति हैं भूषन जे कबिराय॥ ३४२ ॥

अपनी बुद्धि से जहाँ नामों का अर्थ बनाकर कहा जाय, वहाँ निरुक्ति अलंकार होता है॥ ३४२॥

उदाहरण

कबिगन को दारिद द्विरद याही दल्यो अमान।
याते श्रीसिवराज को सरजा कहत जहान॥ ३४३ ॥

कवियों का बेशुमार दारिद्रय जो है, वही हाथी है, उसे दलित करने के कारण संसार में श्रीशिवराज को सरजा ( सिंह ) कहते हैं॥ ३४३ ॥

---

* मिथिला के राजा, सीता के पिता।

† ययाति राजा की कथा भागवत में है।

‡ बड़े प्रतापी और हरिभक्त राजा। इनकी भी कथा भागवत में देखो।

तथा

हर्यो रूप इन मदन को याते भो सिव नाम।
लियो बिरद सरजा सबल अरिगज दलि संग्राम ॥३४४॥

इन्होंने मदन ( कामदेव ) का रूप हर लिया है, इसी से इनका नाम शिव हुआ। संग्राम में शत्रुरूप गजदल को दलकर सबल शिवाजी ने सरजा ( सिंह ) विरद ( उपाधि ) धारण की॥ ३४४॥

तथा—कवित्त

आजु सिवराज महाराज एक तू ही सरनागतजनन को दिवैया अभैदान को। फैली महिमंडल बड़ाई चहुँ ओर ताते कहिए कहाँ लौं ऐसे बड़े परिमान को॥ निपट गँभीर कोऊ लाँघि न सकत बीर जोधन को रन देत जैसे भाऊखान को। दिलदरियाव क्यों न कहैं कबिराव तोहिं तो मैं ठहरात आनि पानिप जहान को॥ ३४५ ॥

हे शिवराज महाराज, आज शरणागतजनों का अभय का दान देनेवाला एक तू ही है। भूमण्डल में चारों ओर तेरी बड़ाई फैली है। अतः उसके ऐसे बड़े परिमाण को कहाँ तक कहिए। तू निपट गंभीर है। तुझे कोई वीर नाँघ नहीं सकता। तू योद्धाओं को युद्ध देता है,जैसे भाऊखाँ ( भाऊसिंह ) को दिया। तुझे कविराज दिलदरिया ( उदार-हृदय ) क्यों न कहें, तुझमें ही सारे संसार का पानी ( मान, इज़्ज़त ) आकर एकत्र होता है। अर्थात् तू सबको परास्त कर उनके पानी को हर लेता है॥ ३४५ ॥

## हेतु

लक्षण—दोहा

या निमित्त यहई भयो यों जहँ बरनन होइ।
भूषन हेतु बखान हीं कबि कोबिद सब कोइ॥ ३४६ ॥

"इस कारण यह हुआ" इस प्रकार का जहाँ वर्णन हो, वहाँ हेतु अलंकार होता है॥३४६॥

उदाहरण—कवित्त

दारुन सुदैत्य हरनाकुस बिदारिबे को भयो नरसिंह रूप तेज बिकरार है। भूषन भनत त्यौंहीं रावन के मारिबे को रामचन्द्र भयो रघुकुल सरदार है॥ कंस के कुटिल बल बंसन बिधुंसिबे को भयो

जदुराय बसुदेव को कुमार है। पृथी-पुरहूत साहि के सपूत सिवराज म्लेच्छन के मारिबे को तेरो अवतार है ॥ ३४७ ॥

( सत्ययुग में ) दारुण दैत्य हिरण्यकशिपु के बिदारने को (हृदय फाड़कर मारने को) विकराल तेजवाला नरसिंह अवतार हुआ। भूषण कहता है, त्यों ही ( त्रेतायुग में ) रावण के मारने को रघुकुल के सरदार श्रीरामचन्द्र हुए। ( द्वापर में ) कंस के कुटिल और बली वंश का विध्वंस करने को यदुराज वसुदेव के कुमार श्रीकृष्णजी हुए। वैसे ही हे पृथ्वी के इंद्र, साहि के सपूत शिवराज म्लेच्छों के मारने को ( कलियुग में ) तेरा अवतार हुआ है ॥ ३४७ ॥

## अनुमान

लक्षण—दोहा

जहँ काज ते हेतु कै जहाँ हेतु ते काज।
जानि परत अनुमान तहँ कहि भूषन कबिराज ॥ ३४८ ॥

जहाँ कार्य से कारण अथवा कारण से कार्य जान पड़ता है, वहाँ अनुमान अलंकार होता है ॥ ३४८ ॥

उदाहरण—कवित्त

चित्त अनचैन आँसू उमँगत नैन देखि बीबी कहैं बैन मियाँ कहियत काहि नै। भूषन भनत बूझे आये दरबार ते कँपत बार बार क्यों सँभार तन नाहि नै। सीनो धकधकत पसीनो आयो देह सब हीनो भयो रूप न चितौत बाएँ दाहिनै। सिवाजू की संक मानि गये हौ सुखाय तुम्हें जानियतु दक्खिन को सूबा करो साहि नै ॥ ३४९ ॥

चित्त को बेचैन और आँखों में उमँगते हुए आँसू देखकर बीबियाँ ( अपने पतियों से ) यों वचन कहती हैं कि मियाँ, कहते क्यों नहीं ( अपने हृदय की बेचैनी का कारण बतलाते क्यों नहीं ) ? भूषण कहता है, जान पड़ता है, शाह के दरबार से आ रहे हो। बार-बार काँप क्यों रहे हो ? देह का सँभाल नहीं है। तुम्हारा सीना ( छाती ) धड़क रहा है। सारे शरीर में पसीना आ रहा है, रूप हीन ( फीका ) हो गया है। दाहने-बाएँ नहीं देखते हो। जान पड़ता है, शाह ने तुम्हें दक्षिण का सूबेदार कर दिया है, इसी से शिवाजी की शंका ( भय ) मानकर सूख गए हो ॥ ३४९ ॥

तथा

अंझा सी भई दिन की संझा सी सकल दिसि गगन लगन रही गरद छवाय है । चील्ह गीध बायस समूह घोर रोर करैं ठौर ठौर चारों ओर तम मड़राय है ॥ भूषन अँदेस देस देस के नरेसगन आपुस मैं कहत यों गरब गँवाय हैं। बड़ो बड़वा को जितवार चहुँघा को दल सरजा सिवा को जानियत इत आय है॥ ३५० ॥

अंझा ( लोप )-सा दिन का हो गया । सब ओर संझा ( शाम—रात )-सी हो गई है आकाश तक गर्द छा रही है । चील्ह, गिद्ध और कौवे झुंड के झुंड घोर शोर करते हैं । जगह-जगह चारों ओर अंधकार (चील्ह आदि के झुंडों के कारण) मँडला रहा है। भूषण कहता है, देश-देश के नरेश गर्व गँवाकर आपस में यों कहते हैं कि बड़वानल से भी बड़ा (विध्वंस करनेवाला), चारों दिशाओं में विजय प्राप्त करनेवाला सरजा शिवा, जान पड़ता है, इधर आ रहा है ॥ ३५० ॥

## शब्दालङ्कार *

दोहा

जे अरथालंकार ते, भूषन कहे उदार ।
अब शब्दालंकार ये कहत सुमति अनुसार ॥ ३५१ ॥

जो सुन्दर अर्थालंकार थे, वे भूषण कवि वर्णन कर चुका । अब आगे वह अपनी मति के अनुसार शब्दालङ्कार कहता है ॥ ३५१ ॥

## छेकानुप्रास और लाटानुप्रास

लक्षण

स्वरसमेत अच्छर कि पद आवत सदृस प्रकास ।
भिन्न अभिन्नन पदन सों छेक लाट अनुप्रास ॥ ३५२ ॥

जहाँ स्वरसमेत अक्षर या पद एक ही तरह के बार-बार आवें, वहा छेकानुप्रास और लाटानुप्रास अलंकार होते हैं । इनमें अन्तर यह है कि जहाँ भिन्न पद हों, वहाँ छेकानुप्रास और जहाँ अभिन्न पद हों, वहाँ लाटानुप्रास जानो ॥ ३५२ ॥

---

* शब्द-सम्बन्धी अलंकार ।

उदाहरण—कुंडलिया ( छेकानुप्रास )

दिल्लियदलन दबाय करि सिव सरजा निरसंक।
लूटि लियो सूरति सहर बंकक्करि अति डंक॥
बंकक्करि अतिडंकक्करि अस संकक्करिखल।
सोचच्चकित भरोचच्चलिय बिमोचच्चख जल॥
तट्ठइ मन कट्ठिक सोइ रट्ठिल्लिय।
सद्दिसि दिसि भद्दबि भइ रद्दिल्लिय॥३५३॥

निश्शंक सरजा शिवाजी ने दिल्ली के दलों को दबाकर, डंका बजाकर, सूरत शहर को लूट लिया। डंका बजाकर खलों ( दुष्ट शत्रुओं ) को ऐसा शंकित किया कि वे सोच से चकित हो गये, आँखों से आँसू बहाने लगे, भड़ोच शहर चलायमान हो गया। दिल्ली रद हो गई। उसकी भद हुई, उसे दबना पड़ा। एक-एक को ठेलते हुए, बड़े कष्ट से अपने को सँभालकर वैरी लोग हर ओर भागे॥ ३५३॥

तथा

गतबल खानदलेल हुव खानबहादुर मुद्ध।
सिव सरजा सलहेरिढिग क्रुद्धद्धरि किय जुद्ध॥
क्रुद्धद्धरि किय जुद्धद्धरि अरिअद्धद्धरि करि।
मुण्डड्डरि तहँ रुण्डड्डकरत डुंडड्डग भरि॥
खेदिद्दर बर छेदिद्दय करि मे दद्धि दल।
जंगग्गति सुनि रंगग्गलि अवरंगग्गतबल॥३५४॥

खानदलेल * (दलेलखाँ या दिलेरखाँ) गतबल (हीनबल) हो गया। बहादुरखाँ मुग्ध हो गया ( बेवक़ूफ़ बन गया ), जब सरजा शिवाजी ने सलहेरि के पास क्रोध धारण करके युद्ध किया। उन्होंने युद्ध में शत्रुओं को पकड़कर उनके धड़ को आध-आधा ( टुकड़े-टुकड़े ) कर डाला। वहाँ मुंड ( शिर ) डालकर रुंड ( कबंध ) डकरते ( गरजते ) हैं। उनके डुंड ( हथकटे ) कबंध इधर-

* औरंगज़ेब का यह एक सेनापति, विश्वस्त कर्मचारी और दक्षिण का सूबेदार था। इस वीर ने सन् १६७२ में सलहेरि और चाकन के क़िले घेरे थे। पर शिवाजी की सेना ने इसकी सेना को मार भगाया। सन् १६६७ में मधुनापंत ने इसे गोलकुंडा के युद्ध में हराया। शिवाजी के लड़के शंभाजी पिता से मनोमालिन्य करके सन् १६७८ में इसके पास चले गये थे। शंभाजी औरंगज़ेब के पास दिल्ली भी गये थे। जनार्दन पंत ने, जो शिवाजी के सेनापति थे, भी दिलेरख़ाँ को परास्त किया था। अन्त में, सन् १६८४ में इसकी मृत्यु हो गई।

उधर डग भरते ( दौड़ते ) हैं। वे दल को दर ( जगह ) से खेदकर, काटकर, मेदा ( चर्बी ) को दही की तरह मथते हैं। जंग की गति ( युद्ध का हाल ) सुनकर औरंगज़ेब का रंग गलित हो गया—उड़ गया और वह गतबल ( साहस से हीन ) हो गया ॥ ३५४ ॥

तथा

लिय धरि मोहकमसिंह कहँ अरु किसोर नृप कुम्भ।
श्रीसरजा संग्राम किय भुम्मिम्मधि करि धुम्म ॥
भुम्मिम्मधि किय धुम्मम्मड़ि रिपु जुम्मम्मलि करि।
जंगग्गरजि उतंगग्गरब मतंगग्गन हरि ॥
लक्खक्खन रन दक्खक्खलनि अलक्खक्खिति भरि।
मोलल्लहि जस नोलल्लरि बहलोलल्लिय धरि ॥ ३५५ ॥

श्रीसरजा शिवाजी ने मोहकमसिंह और नृपशिरोमणि किशोरसिंह * को पकड़ लिया और पृथ्वी-तल पर धूम के साथ संग्राम किया। उन्होंने शत्रुओं का मुखमर्दन कर दिया। जंग में गरजकर ऊँचे और मस्त हाथियों को मारकर लाखों रणदक्ष खलों से पृथ्वी को ऐसा पाट दिया कि वह अदृश्य हो गई। नवल यश लड़कर मोल लिया और बहलोलखाँ को पकड़ लिया ॥ ३५५ ॥

तथा ( लाटानुप्रास )

लिय जिति दिल्ली को मुलुक सिव सरजा जुरि जंग।
भनि भूषन भूपति भजे भंगग्गरब तिलंग ॥
भंगग्गरब तिलंगग्गयउ कलिंगग्गति अति।
दुंदद्दबि दुहुँ दंदद्दलनि बिलन्दद्दहसति ॥
लच्छच्छिन करि म्लेच्छच्छय किय स्वच्छच्छबि छिति।
हल्लल्लगि नरपल्लल्लरि परनल्लल्लिय जिति ॥ ३५६ ॥

सरजा शिवाजी ने जंग में भिड़कर दिल्ली का मुल्क जीत लिया भूषण कहता है, गर्व जिनका टूट गया है, ऐसे तैलंग देश के राजा भागे। कलिंग-नरेश अत्यन्त घबरा गया। इन दोनों नरेशों के दलों को द्वन्द्व ( युद्ध ) में दबकर बड़ा दुःख तथा भय हुआ। क्षणभर में लाखों म्लेच्छों का क्षय

---

* यह कोटा के राजकुमार थे। इनके पिता का नाम माधवसिंह था। यह बादशाह के पक्ष में थे। सन् १६८८ तक दक्षिण में इन्होंने कई युद्ध किए।

करके शिवाजी ने पृथ्वी की छवि स्वच्छ की, उसे सुशोभित किया। हल्ला ( धावा ) करके नरपालों से लड़कर, उन्होंने पन्हालगढ़ को जीत लिया ॥ ३५६ ॥

तथा—छप्पय

मुण्ड कटत कहुँ रुण्ड नटत कहुँ सुण्ड पटत घन।
गिद्ध लसत कहुँ सिद्ध हँसत सुख बिद्ध रसत मन ॥
भूत फिरत करि बूत भिरत सुर दूत घिरत तहँ।
चंडि नचत गन मंडि रचत धुनि डण्डि मचत जहँ ॥
इमि ठानि घोर घमसान अति भूषन तेज कियो अटल।
सिवराज साहिसुव खग्गबल दलि अडोल बहलोलदल ॥ ३५७॥

कहीं मुंड कटते हैं, कहीं रुंड नाचते हैं, कहीं ( कटी हुई ) हाथियों की घनी सूँड़ों से पृथ्वी पटती है। कहीं गिद्ध लसते हैं, कहीं सिद्ध लोग ( जो शव-साधना करते हैं ) मन में सुख की वृद्धि से खुश होते हैं। भूत फिरते हैं, जोर लगाकर भिड़ते हैं। देवतों के दूत मरे हुए वीरों को स्वर्ग ले जाने के लिये जमा होते हैं। चंडी ( काली ) नाचती हैं। भूत, प्रेतगण की मंडली जमा होती है और डंडे बजाती है। ऐसा घमासान घोर युद्ध ठानकर अपना तेज अटल किया। भूषण कहता है, शाहि के पुत्र शिवराज ने खड्ग के बल से बहलोलखाँ के अटल दल को दलित किया ॥ ३५७ ॥

तथा

क्रुद्ध फिरत अति जुद्ध जुरत नहिं रुद्ध मुरत भट।
खग्ग बजत अरि बग्ग तजत सिर पग्ग सजत चट ॥
ढुक्कि फिरत मद झुक्कि भिरत करि कुक्कि गिरत गनि।
रंगरकत हर संग छकत चतुरंग थकत भनि ॥
इमि करि संगर अतिही विषम भूषन कियो सुजस अचल।
सिवराज सहिसुव खग्गबल दलि अडोल बहलोल दल ॥ ३५८॥

क्रुद्ध होकर भट ( सिपाही ) फिरते हैं, युद्ध में भिड़ते हैं और पीछे नहीं हटते। शत्रुदल खड्ग के बजते ही पगड़ी से सजे हुए शिर तत्काल छोड़ देते हैं ( अर्थात् उनके सिर कट जाते हैं )। मद से झूमते हुए हाथी ढुकते फिरते, भिड़ते और ( चोट खाने पर ) चिग्घार मारकर पृथ्वी पर गिरते हैं। शिव के गण चतुरंगिणी सेना के रंगीन रक्त को छककर पीते हैं, थकते नहीं। भूषण कहता

है, ऐसा बहुत ही विकट युद्ध करके अपना सुयश अचल किया। शाहितनय शिवराज ने खड्ग के बल से बहलोलखाँ के अटल दल का दलन किया ॥३५८॥

तथा—कवित्त

बानर बरार बाघ बैहर बिलार बिग बगरे बराह जानवरन के जोम हैं। भूषन भनत भारे भालुक भयानक हैं भीतर भवन भरे लीलगऊ लोम हैं॥ ऐड़ायल गज गन गैड़ा गररात गनि गेहन में गोहन गरूर गहे गोम हैं। सिवाजी की धाक मिले खलकुल खाक बसे खलन के खेरनि खबीसन के खोम हैं॥ ३५९॥

बंदर, बरार ( बरियार—एक जंगली जानवर ), बाघ, बैहर, बिलार ( बनबिलाव ), बिग ( भेड़िया ), सुअर वग़ैरह के झुंड फैले हुए हैं। भूषण कहता है, भारी भयानक भालू भवन के भीतर भरे हैं। नीलगाय, लोमड़ी, मस्त जंगली हाथी और गैंड़ा गुर्राते हैं। घरों में गोहन (सिंह) गर्व के साथ अपना स्थान किए हैं। शिवाजी के आतंक से दुष्ट शत्रुओं के कुल खाक में मिल गए। उन खलों के खेरों ( निवासस्थानों ) में ख़बीसों ( शैतानों ) का निवास है॥ ३५९॥

तथा

तुरमती तहखाने तीतर गुसलखाने सूकर सिलहखाने कूकत करीस हैं। हरिन हरमखाने स्याही हैं सुतुरखाने पाढ़े पीलखाने औ करंजखाने कीस हैं॥ भूषन सिवाजी गाजी खग्ग सों खपाये खल खाने खाने खलन के खेरे भये खीस हैं। खड़गी खजाने खरगोस खिलवतखाने खीसैं खोले खसखाने खाँसत खबीस हैं॥ ३६०॥

तहख़ाने में तुरमती ( शिकारी पक्षी ), गुसलख़ाने में तीतर, सिलहख़ाने (शस्त्रागार) में शूकर और हाथी कूकते—शब्द करते या बोलते हैं। हरमख़ाने ( अन्तःपुर ) में हरिण, शुतुरख़ाने (ऊँटों की शाला ) में स्याही ( एक जानवर, जिसके बदन में चितकबरे बड़े नुकीले, सख़्त और पोले काँटे होते हैं ), फ़ीलख़ाने में पाढ़े ( चितकबले मृग ) और करंजख़ाने ( मुर्ग़ों के रहने की जगह में कीश (बंदर) रहते हैं। भूषण कहता है, ग़ाज़ी (वीर) शिवाजी ने खड्ग से खलों को खपाया। घर-घर खलों के खेरे (बस्तियाँ) बरबाद हो गईं। उनके ख़ज़ानों में खड्गी ( गैंडे ), ख़िलवतख़ाने ( आरामख़ाने ) में ख़रगोश और ख़सख़ाने में खीसें खोले ( मुँह बाए ) ख़बीस ख़ाँसते हैं॥३६०॥

तथा—दोहा

औरन के जाँचे कहा नहि जाँच्यो सिवराज।
औरन के जाँचे कहा जो जाँच्यो सिवराज॥ ३६१ ॥

औरों से याचना करने से क्या। ( मिल सकता है। अगर शिवराज से याचना नहीं की, और औरों से याचना करने से क्या, अगर शिवराज से याचना की ( फिर याचक को माँगने की जरूरत ही नहीं रहेगी ) ॥ ३६१ ॥

## यमक (अनुप्रास)

लक्षण

भिन्न अरथ फिरि फिरि जहाँ वे ई अक्षरबृन्द।
आवत हैं सो जमक कहि बरनत बुद्धि बुलन्द॥ ३६२ ॥

जहाँ भिन्न-भिन्न अर्थ में एक ही अक्षरों के समूह ( शब्द ) आते हैं, वहाँ यमक अलंकार होता है ॥ ३६२ ॥

उदाहरण—कवित्त

पूनावारी सुनिकै अमीरन की गति लई भाजिबे को मीरन समीरन की गति है। मार्‍यो जुरि जंग जसवन्त जसवन्त जाके संग केते रजपूत रजपूतपति है॥ भूषन भनै यों कुलभूषन भुसिल सिवराज तोहिं दीनी सिवराज बरकति है। नौहू खण्ड दीप भूप भूतल के दीप आजु समै के दिलीप दिलीपति को सिदति है॥ ३६३ ॥

अमीरों ( सरदारों ) की पूना में जो गति हुई, उसे सुनकर मीरों ने भागने के लिए समीर ( हवा ) की गति ग्रहण की—अर्थात् हवा के वेग से भागे। युद्ध ठानकर यशस्वी यशवंतसिंह को शिवाजी ने मारा ( शिकस्त दी—हराया ), जिनके साथ कितने ही वीर राजपूत योद्धा थे और जो स्वयं राजपूतों के पति (स्वामी) थे। भूषण कहता है, हे कुलभूषण भोंसला शिवराज, शिव, ने तुझे

राज्य की बरकत ( बढ़ती ) दी है कि नवों खंड सातों द्वीप पृथ्वी के तू भूप है, भूतल को प्रकाशित करनेवाला दीपक है, आज के समय ( वर्तमान ) का राजा दिलीप * है। तुझसे दिल्ली के बादशाह को मुसीबत बनी रहती है ॥ ३६३ ॥

## पुनरुक्तिवदाभास

### लक्षण—दोहा

भासति है पुनरुक्ति सी नहिं निदान पुनरुक्ति।
पुनरुक्तिवदाभास सो भूषन बरनत जुक्ति ॥ ३६४ ॥

जहाँ पुनरुक्ति-सी भासित हो, पर असल में पुनरुक्ति न हो, वहाँ पुनरुक्तिवदाभास अलंकार होता है ॥ ३६४ ॥

### उदाहरण—कवित्त

अरिन के दल सैन संगर में समुहाने टूक टूक सकल कै डारे घमसान में। बार बार करो महानद परवाह पूरो बहत हैं हाथिन के मदजल दान में ॥ भूषन भनत महाबाहु भौंसिलाभुवाल सूर रबि सम तेज तीखन कृपान में। मालमकरन्दजू के नंद कलानिधि तेरो सरजा सिवाजी जस जगत जहान में ॥ ३६५ ॥

शत्रुओं के दल संगर ( युद्ध ) में सैन ( शयन ) करते हैं, जो सामने आए उन्हें घमासान ( युद्ध) में टुकड़े-टुकड़े कर डाला। हाथियों के मद-जल ऐसे दान में बहते हैं कि उन्होंने बार-बार महानद का प्रवाह पूरा किया। भूषण कहता है, हे महाबाहु भोंसला भूपाल, हे शूर, तेरी तीक्ष्ण कृपाण में सूर्य का-सा तेज है। हे मालमकरन्द के वंशज, हे सरजा शिवाजी, कलानिधि ( चन्द्रमा ) के समान तेरा यश जगत् में जगता है, फैला हुआ है ॥ ३६५ ॥

---

* राजा दिलीप की कथा कालिदास के रघुवंश महाकाव्य में है। सुरभी के शाप से इनके पुत्र न होता था, जिससे वह महाप्रतापी राजा दुखी रहते थे। इन्होंने वशिष्ठजी के उपदेश से उनकी गऊ नन्दिनी की बड़ी सेवा की। इनके पुत्र महाराज रघु हुए, जो बड़े वीर और दिग्विजयी हुए। इन्हीं के कुल में रामचन्द्रजी ने जन्म लिया। वह सूर्यवंश के थे।—टीकाकार

## चित्र

लक्षण—दोहा

लिखे सुने अचरज बढ़ै रचना होय विचित्र।
कामधेनु आदिक घने भूषन बरनत चित्र ॥ ३६६ ॥

जिसके लिखने और सुनने से ( विचित्रता के कारण ) आश्चर्य बढ़े, ऐसी विचित्र रचना को चित्र-काव्य ( यह भी एक अलंकार माना गया है ) कहते हैं। कामधेनु ( खड्गबंध, कपाटबंध, मालाबंध ) आदि अनेक चित्र हैं ॥ ३६६ ॥

कामधेनु चित्र का उदाहरण—सवैया

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| धुव जो | गुरता | तिनको | गुरु भूषन | दानि बड़ो | बिरजा | पिव है। |
| हुव जो | हरता | रिनको | तरु भूषन | दानि बड़ो | सिरजा | छिव है ॥ |
| भुव जो | भरता | दिन को | नरु भूषन | दानि बड़ो | सरजा | सिव है। |
| तुव जो | करता | इनको | अरु भूषन | दानि बड़ो | बरजा | निव है ॥ ३६७ ॥ |

यह कामधेनु-चित्र है। इसका ( प्रत्येक चरण में ) तीन-तीन अक्षर का एक-एक खंड है। चाहे जिस खंड से शुरू कीजिए, वहीं पर आकर एक छंद बन जायगा। आचार्यों ने इसे निकृष्ट काव्य माना है, वह इसीलिये कि इसमें इस चमत्कार के अलावा और कोई खूबी ( अर्थ-गौरव, लालित्य आदि ) नहीं रहती। अर्थ में अक्सर क्लिष्ट-कल्पना, खींचतान और शब्दों की तोड़-मरोड़ करनी पड़ती है। इस छंद का भी अर्थ यहाँ नहीं दिया जाता। इसके अर्थ का सार शिवाजी का प्रशंसा है। भूषण को भी शायद चित्र-काव्य बहुत पसंद नहीं था, इसी से केवल एक छंद दिग्दर्शन-मात्र के लिये बना डाला है ॥ ३६७ ॥

## संकर

लक्षण—दोहा

भूषन एक कवित्त में भूषन होत अनेक।
संकर ताको कहत हैं जिन्हें कबित की टेक ॥ ३६८ ॥

एक छंद में जहाँ कई अलंकार ( खिचड़ी में दाल-चावल की तरह ) गड़बड़े हुए हों, वहाँ संकर अलंकार जानना चाहिए ( संश्लिष्ट भी अलंकार माना गया है। जिसमें दूध-पानी की तरह कई अलंकार मिले हुए हों, वहाँ संश्लिष्ट जानिए। भूषण ने इसका उल्लेख नहीं किया) ॥ ३६८ ॥

उदाहरण—कवित्त

ऐसे बाजिराज देत महाराज सिवराज भूषन जे बाज की समाजें निदरत हैं। पौन पायँ हीन, दृग घूँघट मैं लीन, मीन जल मैं बिलीन, क्यों बराबरी करत हैं॥ सब ते चलाक चित्त तेऊ कुलि आलम के रहैं उर अन्तर मैं, धीर न धरत हैं। जिन चढ़ि आगे को चलाइयतु तीर, तीर एक भरि तऊ तीर पाछे ही परत हैं ॥ ३६९ ॥

भूषण कहता है, महाराज शिवराज ऐसे घोड़े देते हैं, जो तेज़ी में बाज़ पक्षी का भी निरादर करते हैं (इस चरण में अनुप्रास, ललित और पंचम प्रतीप अलंकार का संकर है)। पवन के पैर नहीं हैं, आँखें घूँघट में और मछलियाँ पानी में छिपी रहती हैं, फिर ये ( उपमान ) उनकी बराबरी कैसे कर सकते हैं ? (इस चरण में अनुप्रास और अधिक रूपक का संकर है )। सबसे चालाक (चंचल) चित्त होता है। वह भी सबके हृदय के भीतर रहता है, और धैर्य नहीं धारण करता। ये घोड़े ऐसे हैं कि जिन पर चढ़कर आगे को तीर चलाते हैं, तो भी तीर भर ( चार हाथ का वाण होता है, उतना, अथवा जितनी दूर तीर जाता है, उतनी दूर ) पीछे ही वे तीर गिरते हैं, अर्थात् वाण की गति से भी कहीं अधिक वेग इनका है ( इन चरणों में पंचम प्रतीप, यमक आदि कई अलंकारों का संकर है ) ॥ ३६९ ॥

अलंकार-सूची—रोला छंद

उपमा अनन्वै कहि बहुरि उपमा प्रतीप प्रतीप।
उपमेय-उपमा है बहुरि मालोपमा कबि दीप॥
ललितोपमा रूपक बहुरि परिनाम पुनि उल्लेख।
सुमिरन भ्रमौ सन्देह सुद्धापन्हुत्यौ सुभ बेख॥३७०॥
हेतू अपन्हुत्यौ बहुरि परजस्वपन्हुति जान।
सुभ्रान्त पूर्ण अपन्हुत्यौ छेका अपन्हुति मान।
बर कैतवापन्हुति गनौ उतप्रेच्छ बहुरि बखानि।
पुनि रूपकातिसयोक्ति भेदक अतिसयोक्ति सु जानि॥३७१॥

अरु अक्रमातिसयोक्ति चंचलअतिसयोक्तिहि लेखि।
अत्यन्तअतिसैउक्ति पुनि सामान्य चारु बिसेखि॥
तुलियोगिता दीपकअबृति प्रतिबस्तुपम दृष्टांत।
सुनिदर्सना ब्यतिरेक और सहोक्ति बरनत सांत॥३७२॥
सुबिनोक्ति भूषन समासोक्तिहु परिकरौ अरु बंस।
परिकर सुअंकुर स्लेष त्यौं अप्रस्तुतौ परसंस॥
परजायउक्ति गनाइए ब्याजस्तुतिहु आच्छेप।
बहुरौ बिरोध बिरोधभास बिभावना सुख खेप॥३७३॥
सुबिसेषउक्ति असम्भवौ बहुरे असंगति लेखि।
पुनि बिषम सम सुबिचित्र प्रहषन अरु बिषादन पेखि॥
अधिक अन्योन्यहु बिसेष ब्याघात भूषन चारु।
अरु गुम्फ एकावली मालादीपकहु पुनि सारु॥३७४॥
पुनि जथासंख्य बखानिए परजाय अरु परिबृत्ति।
परिसंख्य कहत बिकल्प हैं जिनके सुमति सम्पत्ति॥
बहुरौ समाधि समुच्चयौ पुनि प्रत्यनीक बखानि।
पुनि कहत अर्थापत्ति कबिजन काब्यलिंगहि जानि॥३७५॥
अरु अर्थयन्तरन्यास भूषन प्रौढ़उक्ति गनाय।
सम्भावना मिथ्याध्यवसितऽरु यों उलासहि गाय॥
अवज्ञा अनुज्ञा लेस तदगुन पूर्बरूप उलेखि।
अनुगुन अतदगुन मिलित उन्मीलितहि पुनि अवरेखि॥३७६॥
सामान्य और बिसेष पिहितौ प्रस्नउत्तर जानि।
पुनि ब्याजउक्तिऽरु लोकउक्ति सुछेकउक्ति बखानि॥
बक्रोक्ति जानि सुभावउक्तिहु भाविकौ निरधारि।
भाविकछबिहु सुउदात्त कहि अत्युक्ति बहुरि बिचारि॥३७७॥

बरने निरुक्तिहु हेतु पुनि अनुमान कहि अनुप्रास।
भूषन भनत पुनि जमक गनि पुनरुक्तिवदआभास॥
जुत चित्र संकर एक सत भूषन कहे अरु पाँच।
लखि चारु ग्रंथन निज मतौ जुत सुकबि मानहु साँच॥ ३७८॥

इस ग्रंथ में भूषण ने जितने अलंकार (उदाहरण और लक्षण-सहित) कहे हैं, उनकी सूची भी पीछे दे दी है। वह यह है—

१ उपमा
२ अनन्वय
३ प्रतीप
४ उपमेयोपमा
५ मालोपमा
६ ललितोपमा
७ रूपक
८ परिणाम
९ उल्लेख
१० स्मृति
११ भ्रम
१२ सन्देह
१३ शुद्धापह्नुति
१४ हेतु-अपह्नुति
१५ पर्यस्तापह्नुति
१६ भ्रान्तापह्नुति
१७ छेकापह्नुति
१८ कैतवापह्नुति
१९ उत्प्रेक्षा
२० रूपकातिशयोक्ति
२१ भेदकातिशयोक्ति
२२ अक्रमातिशयोक्ति
२३ चंचलातिशयोक्ति
२४ अत्यन्तातिशयोक्ति
२५ सामान्यविशेष
२६ तुल्ययोगिता
२७ दीपक
२८ दीपकावृत्ति
२९ प्रतिवस्तूपमा
३० दृष्टान्त
३१ निदर्शन
३२ व्यतिरेक
३३ सहोक्ति
३४ विनोक्ति
३५ समासोक्ति
३६ परिकर
३७ परिकरांकुर
३८ श्लेष
३९ अप्रस्तुतिप्रशंसा
४० पर्यायोक्ति
४१ व्याजस्तुति
४२ आक्षेप
४३ विरोध
४४ विरोधाभास
४५ विभावना
४६ विशेषोक्ति
४७ असंभव
४८ असंगति
४९ विषम
५० सम
५१ विचित्र
५२ प्रहर्षण
५३ विषादन
५४ अधिक
५५ अन्योन्य
५६ विशेष
५७ व्याघात
५८ गुंफ
५९ एकावली
६० माला-दीपक (सार)
६१ यथासंख्य
६२ पर्याय
६३ परिवृत्त
६४ परिसंख्य
६५ विकल्प
६६ समाधि
६७ समुच्चय
६८ प्रत्यनीक
६९ अर्थापत्ति
७० काव्यलिंग
७१ अर्थान्तरन्यास
७२ प्रौढ़ोक्ति
७३ संभावना
७४ मिथ्याध्यवसित
७५ उल्लास
७६ अवज्ञा
७७ अनुज्ञा
७८ लेश
७९ तद्गुण
८० पूर्वरूप
८१ अतद्गुण
८२ अनुगुण
८३ मीलित
८४ उन्मीलित
८५ सामान्य
८६ विशेष
८७ पिहित
८८ प्रश्नोत्तर
८९ व्याजोक्ति
९० लोकोक्ति
९१ छेकोक्ति
९२ वक्रोक्ति
९३ स्वभावोक्ति
९४ भाविक
९५ भाविकछवि
९६ उदात्त
९७ अत्युक्ति
९८ निरुक्ति
९९ हेतु
१०० अनुमान
१०१ अनुप्रास
१०२ यमक
१०३ पुनरुक्तिवदाभास
१०४ चित्र
१०५ संकर

भूषण कवि ने सुन्दर अलंकार-ग्रंथों को देखकर, उनके मत से, ये एक सौ पाँच अलंकार इस ग्रंथ में कहे हैं ॥ ३७०–३७८

ग्रंथ-रचनाकाल—दोहा

सम सत्रह सै तीस पर सुचि बदि तेरसि भान।
भूषन सिवभूषन कियो पढ़ियो सकल सुजान ॥ ३७९ ॥

संवत् १७३०, आषाढ़-वदि १३ रविवार को भूषण कवि ने "शिवराजभूषण" ग्रंथ को पूर्ण किया। इसे चतुर लोग पढ़ें ॥ ३७९ ॥

उपसंहार—कवित्त

एक प्रभुता को धाम सजे तीनों बेद काम रहैं पंचआनन षड़ानन सरबदा। सातौ बार आठौ जाम जाचक नेवाजे नव अवतार थिर राजे कृपन हरि गदा ॥ सिवराजभूषन अटल रहै तौलौं जौलौं त्रिदस भुवन सब गंग और नरमदा। साहितनै साहसिक भौंसिला सुरज-बंस दासरथिराज तौलौं सरजा थिर सदा ॥ ३८० ॥

भूषण कहता है, एक प्रभुता का धाम, तीनों वेदों के काम ( वेदोक्त-कर्मों ) को सजानेवाला, रक्षा करनेवाला, शिव और स्वामिकार्तिकेय के समान कल्याणकर्ता तथा सदा असुरों को मारनेवाला, सातो ( रविवार आदि ) और आठौ पहर याचकों को निहाल करनेवाला, हरि के नवो अवतारों के समान, सदा स्थिर रूप से तलवार और गदा जिसके हाथ में विराजती है, ऐसे शाहि-तनय, साहसी, भौंसिला सूर्यवंशी, सरजा शिवाजी का राम-राज्य और यह "शिवराजभूषण" ग्रंथ अटल और सदा स्थिर रहे, जब तक पृथ्वी पर सब देवता, गंगा और नर्मदा हैं ॥ ३८० ॥

दोहा

पुहुमि पानि रवि ससि पवन जौ लौं रहैं अकास।
सिव सरजा तौ लौं जियौ भूषन सुजसप्रकास ॥ ३८१ ॥

पृथ्वी पर पानी और आकाश में सूर्य, चंद्रमा तथा पवन जब तक रहें, भूषण कहता है, तब तक सरजा शिवाजी, तुम जियो और तुम्हारे सुयश का प्रकाश हो ॥ ३८१ ॥

इति

ग्रन्थ-संग्रहकर्ता का परिचय—दोहा

परमानन्द अनन्द मन रहत सदा दिनरैन।
भूषन-काव्य-प्रकास किय रसिकन को सुखदैन ॥ १ ॥
सम्बत उनिस पचास में पूससुक्र रबिवार।
सातैं सुभादिन सुद्ध करि ग्रंथ भयो तैयार ॥ २ ॥
सकल सुकबि बिनती सुनहु कहत दोऊ कर जोरि।
काब्यरीति जानौं नहीं लघुमति मति अतिभोरि ॥ ३ ॥
जथाउचित यह सुद्ध किय अपनी मति अनुसार।
भूलचूक जो होय कछु कबिजन लेहिं सुधार ॥ ४ ॥

कृपाभिलाषी

बंगालीलालात्मज परमानन्द सुहाने

जबलपूर ( मध्यमदेश )

| दिनांक Date | उधारकर्त्ता की संख्या Borrower's No. | दिनांक Date | उधारकर्त्ता की संख्या Borrower's No |
|---|---|---|---|
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |